CLAN POLITICS IN KAZAKHSTAN AND POLITICAL INSTITUTIONS, 1991-2001.

(कजाखस्तान में कबीला/वंश समूह राजनीति और राजनीतिक संस्थाएं, 1991-2001.)

Dissertation submitted to Jawaharlal Nehru University to
partial fulfillment of the requirements for the award of the degree of

MASTER OF PHILOSOPHY

SUNIL KUMAR

CENTRE OF RUSSIAN AND CENTRAL ASIAN STUDIES

SCHOOL OF INTERNATIONAL STUDIES

JAWAHARLAL NEHRU UNIVERSITY

NEW DELHI -110067

2016

JAWAHARLAL NEHRU UNIVERSITY

Centre for Russian and Central Asian Studies
School of International Studies
New Delhi-110067

Tel.: (O) +91-11-2670 4365
Fax: (+91) - 11-2674 1586, 2586
Email: crcasjnu@gmail.com

DATE:

DECLARATION

I declare that the dissertation entitled **"CLAN POLITICS IN KAZAKHSTAN AND POLITICAL INSTITUTIONS, 1991-2001."** **(कजाखस्तान में कबीला/वंश समूह राजनीति और राजनीतिक संस्थाएं, 1991-2001.)** Submitted by me for the award of the degree of **MASTER OF PHILOSOPHY** of Jawaharlal Nehru University is my own work. This dissertation has not been submitted for any other degree of this University or any other University.

SUNIL KUMAR

CERTIFICATE

I recommend that this dissertation be placed before the examiners for evaluation.

PROF. SANJAY KUMAR PANDEY
(Chairperson)

DR. AMITABH SINGH
(Supervisor)

आभार

शोध कार्य करते समय मेरे सम्मुख अनेक कठिनाईयां आई। कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों का क्रम निर्धारण में बड़ी समस्या हुई। प्रबंध की रचना में सबसे अधिक कठिनाई सामग्री संचयन की थी। अपने इस शोध कार्य हेतु विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं, पुस्तकालयों से मदद ली गई है। अपने इस शोध कार्य को मैंने पाँच अध्यायों में विभक्त किया है। प्रथम अध्याय में कजाखस्तान में कबीला/वंश समूह राजनीति तथा इसके सैद्धान्तिक आधार व नृजातीय वंश/कबीला समूह राजनीति के ऐतिहासिक आधार का उल्लेख किया गया है। दूसरे अध्याय में कजाखस्तान वंश/कबीला, राजनीति व उनके उदय एवं कार्यविधि को केन्द्र में रखकर अध्ययन के केन्द्र में किया गया है। तीसरे अध्याय में कजाखस्तान में कबीला वंशानुगत राजनीतिकी प्रक्रिया का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में वंश/कबीलाई समूह की कजाख्स्तान की राजनीतिक व्यवस्था व सरकार में भागीदारी व हिस्सेदारी को स्पष्ट किया है। पंचम अर्थात अन्तिम अध्याय में मेरे द्वारा किए गए शोध कार्य का समालोचनात्मक रूप प्रस्तुत किया गया है।

विषय चयन से लेकर इसकी परिसमाप्ति तक सहायता सुझाव व मार्गदर्शन देने वाले अपने शोध–निर्देशक डॉ. अमिताभ सिंह के प्रति आभार व्यक्त करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ। मेरा यह सौभाग्य है कि मुझे उनके साथ कार्य करने का अवसर मिला। सही अर्थों में योग्यतम गुरू को पाना शोधार्थी के लिए बड़ी उपलब्धि होती है। मुझे यह बताते हुए बहुत खुशी होती है कि मैं इन जैसे व्यक्तित्व का मार्गदर्शन प्राप्त कर रहा हूँ। उनसे हुए विचार–विमर्श से मुझे सदा ही प्रेरणा और दिशा मिली है। मेरा यह कार्य सही अर्थ में उनके मार्गदर्शन एवं शोध दृष्टि का ही परिणाम है।

मैं जे.एन.यू. पुस्तकालय का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिसके सहयोग एवं प्रयासों से यह शोध–कार्य समृद्ध हो पाया है।

विश्वविद्यालय परिसर एवं अपने छात्रावास के मित्रों जिसमें सबसे पहले अमित कुमार, आलोक आजाद, सुचेता, स्वाति द्वारा दिए गए सहयोग एवं प्यार को सदा अनुभव करता हूँ। राकेश कुमार, भूपेन्द्र कुमार, जावेद चारण, गुलजार हुसैन, और मुकेश कुमार ने मेरी हर संभव मदद की। इनके स्नेह एवं सहयोग को धन्यवाद देना मात्र औपचारिकता होगी क्योंकि इनकी स्मृतियाँ सदैव मेरे साथ है।मैं मेरे उन सभी अन्य मित्रों का भी

शुक्रगुजार हूँ कि जिन्होनें मुझे समय–समय पर प्रेरणा दी तथा हमेशा ऊर्जावान बनाये रखने की हिम्मत दी। अपने ज्ञान के द्वारा मुझे लाभान्वित किया। मैं मेरे गुरूजन डॉ. अमिताभ सिंह जी का हृदय से आभार करता हूँ जिनसे बात करके और मिलकर मुझे हमेशा प्रेरणा मिलती हैं। आशा करता हूँ कि उनका प्यार और स्नेह मुझे आजीवन मिलता रहे।

कोई भी कार्य परिवार के सहयोग एवं बड़ों के आर्शीवाद के बिना पूरा नहीं हो सकता। मैं अपने माता–पिता, श्रीमति सुमित्रा देवी व श्री कैलाश चंद्र के सहयोग, स्नेह एवं आर्शीवाद को इस कार्य को पूरा होने का एक प्रमुख जरिया मानता हूँ। मेरे मम्मी–पापा स्वयं मेरे लिए एक मार्गदर्शक की भूमिका निभाते रहे है। अपने मम्मी–पापा की आकांक्षाओं को पूरा करना ही मेरे जीवन का एकमात्र उद्देश्य है। साथ ही साथ मेरी बहनों पुजा व ज्योति का भी इस कार्य में महत्वपूर्ण योगदान रहा है जिन्होनें समय समय पर मेरा मार्गदर्शन किया और मेरा हौसला बढ़ाया। मेरा शोध कार्य, दुनिया में शौषण के खिलाफ चल रहे सधर्षो, दलितों, महिलाओं व अन्य शौषितों के सधंर्ष को समर्पित है।

मैं अन्त में आभार व्यक्त करना चाहूँगा श्री केदारनाथ यादव (शिवशक्ति इनटरप्राइजेज) का जिन्होंने शोध प्रबंध के टंकण में यथाशक्ति कार्य किया।

सुनील कुमार

239, नर्मदा छात्रावास
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली – 110067,

Word of Gratitude

I would like to express my deep gratitude to **Dr. Amitabh Singh** (CRCAS/SIS/JNU) and **Professor Sanjay Kumar Pandey** (CRCAS/SIS/JNU) for the guidance and sharing their expertise that goes for beyond academic. I am also very thankful to my family and friends.

For always being there for me.

SUNIL KUMAR

CLAN IN KAZAKHSTAN

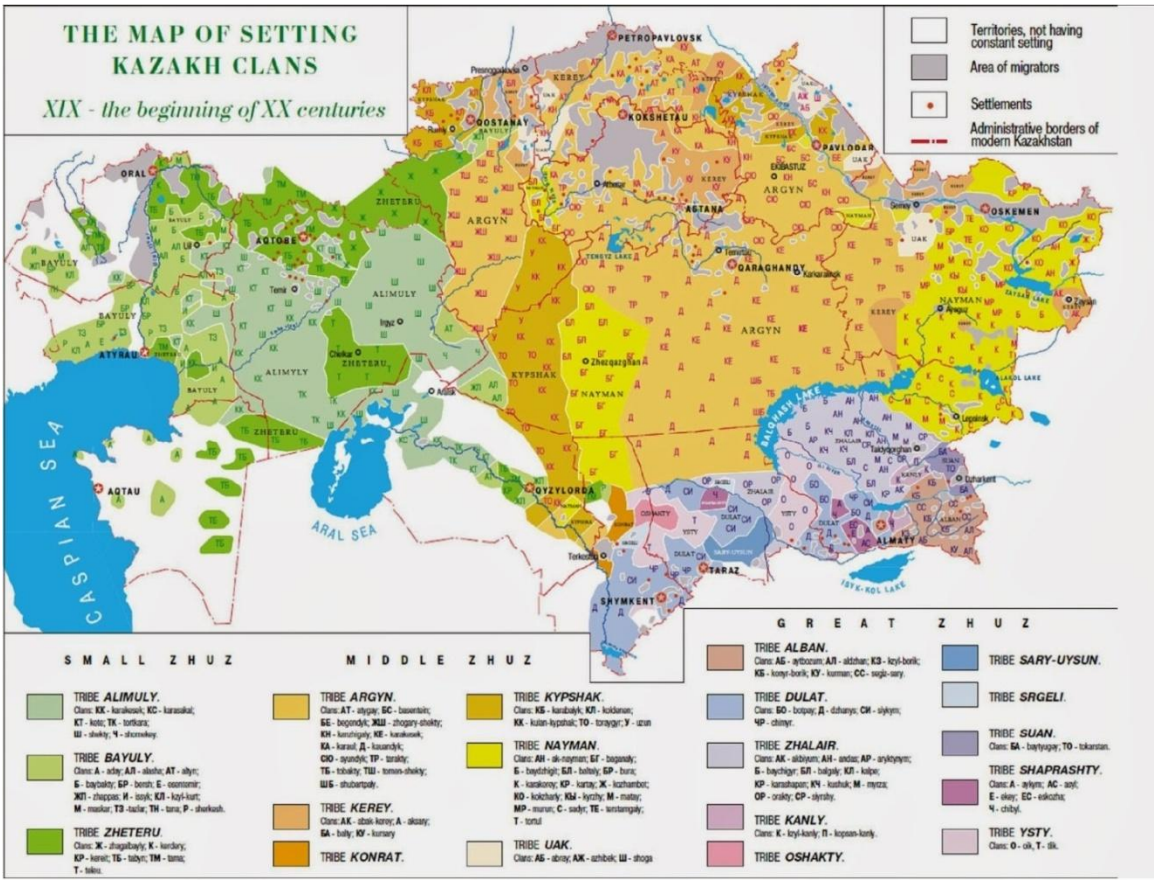

TABLE 2 Umbrella clan background of rural-born elite (1997, 2001)

Background	% of rural-born Kazakh elite	Estimated % of population*
Younger	13.0%	34.0%
Middle	43.8%	41.3%
Elder	43.2%	24.7%

Note: Adapted from: D. R. Ashimbaev, *Kto est' kto v Kazakhstane* (Almaty: Credo, 2001); *data on overall population are from estimates presented in Werner.

TABLE 3 Absence of Elder–Middle clan alliance, 1997*

Estimated degree of President's influence on post	% of Elder–Middle elite occupying...	% of Younger elite occupying...
Low	18.1%	24.0%
Medium	46.4%	44.0%
High	35.5%	32.0%

Note: *A simple statistical test shows that there is little chance of a significant difference in the distribution of posts between the Younger and Elder/Middle umbrella clans: $X^2 = .510$ $(d.f. = 2)$. $p = 0.775$. $N = 191$.

TABLE 4 Elder–Middle clan alliance, 2001*

Estimated degree of President's influence on post	% of Elder–Middle elite occupying...	% of Younger elite occupying...
Low	8.4%	24.0%
Medium	51.8%	48.0%
High	39.8%	28.0%

Note: *A simple statistical test shows an extremely high probability of a significant difference in the distribution of posts between the Younger and Elder/Middle umbrella clans. $X^2 = 5.875$ $(d.f. = 2)$ $p = 0.053$. $N = 191$.

यह शोध प्रबन्ध पुरे विश्व में दलितों, महिलाओं व अन्य शौषितों के शौषण के खिलाफ चल रहे, संघर्षों को समर्पित

अनुक्रमणिका

अध्याय		पृष्ठ संख्या
प्रथम अध्याय : कजाखस्तान में वंश/कबीला समूह राजनीति और राजनीतिक संस्थाएं, 1991–2001.		1–29
	प्रस्तावना	1–3
क.	ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	3–8
ख.	विषयागत लेखन साहित्य की समीक्षा (Literature Review)	9–29
ख(1).	कबीला/वंश समूह सिद्धांत (Clan Theories)	9–29
द्वितीय अध्याय : कजाखस्तान वंश/कबीले और राजनैतिक संस्थाओं का लोकतांत्रिकरण		30–54
क.	कबीला/वंश समूहों का जन्म और कार्यप्रणाली(Origin and function of Clan)	30–39
ख.	कजाख झूज/ Zhuz की भौगोलिक व जनसंख्या स्थिति	39–43
ग.	कबीला/वंशसमूह प्रभाव (क्लनोवोस्ट/Klanovest) और आधुनिक कजाखिस्तान (Clan factor and Modern Kazhkhastan)	43–47
घ.	राजनीतिक संस्थाओं का लोकतांत्रिकरण (Democratisation of political institutions)	47–54
तृतीय अध्याय : कजाखस्तान में कबीलासमूह या वंशानुगत राजनीति		55–72

क.	कजाखस्तान में कबीलायी/वंश समूह राजनीति (Clan Politics in Kazakhstan)	55–66
ख.	कबीला/वंश समूह के बीच प्रतिस्पर्धा	66–70
ग.	राष्ट्रपति नजरबायेव की कबीला/वंश समूह राजनीति व पितृसत्तात्मकता राजनीति	70–72
चतुर्थ अध्याय : कजाखस्तान में कबीला/वंश समूहका सरकार में प्रतिनिधित्व और राजनीतिक व्यवस्था		73–101
क.	कजाखस्तान में राजनीतिक व्यवस्था का विकासः स्वतंत्रता से लेकर 2001 तक	73–75
ख.	1991 से 2001 के दौरान वंश/ कबीला समूह की कजाखस्तान की सरकार में भूमिका	75–81
ग.	आधुनिक कजाखस्तान की राजनैतिक व्यवस्थाएं कजाखस्तानी संसद, 1991 से 2001 तक	81–101
ग(1).	कजाखस्तान में संविधान विकास का विवरण, 1991 से 2001 तक	82–88
ग(2).	कजाखस्तानी संसद, 1991 से 2001 तक	88–91
ग(3).	कजाखस्तान की राजनैतिक दल (पार्टी) व्यवस्था, 1991 से 2001 तक	91–95
ग(4).	कजाखस्तान में नागरिक समाज, 1991 से 2001 तक	95–96
ग(5).	कजाखस्तान में मीडिया या प्रेस, 1991 से 2001 तक	96–97
ग(6).	कजाखस्तान में राजनीतिक व्यवहार व संस्कृति तथा राजनीतिक भागीदारी,1991 से 2001 तक	98–100
ग(7).	कजाखस्तान में कानूनी व्यवस्था और संवैधानिक न्यायालय, 1991 से 2001 तक	100–101
पंचम अध्याय : समालोचना व निष्कर्ष		102–111
संदर्भ ग्रंथ सूची (References)		112–125

अध्याय – प्रथम

कजाखस्तान में कबीला/वंश समूह राजनीति और राजनीतिक संस्थाएं, 1991–2001.

प्रस्तावना :–

मध्य एशिया नवोदित स्वतंत्रता प्राप्त एक ऐसा क्षेत्र है जो वंश/कबीला राजनीति (Clan Politics) से पूर्णतः प्रभावित है। 1990 के सोवियत संघ के विघटन के बाद ही इस पूरे क्षेत्र में विभिन्न वंश/कबीला समूह (Clan), फिर से अपनी पुनरूत्पत्ति कर पाने में सक्षम हो पाए। इसी प्रकार आधुनिक कजाखस्तान में भी कबीला या वंश राजनीति अपने आप को पुर्ननिर्मित करने में सफल हुई। ये न केवल गैर–सरकारी (Informal Sector) क्षेत्र में संभव हो पाए बल्कि सरकारी या औपचारिक संस्थाओं (Formal Institutions) में भी दखलंदाजी का महत्वपूर्ण कारक बन गए जैसे ही सोवियत संघ का विघटन हुआ, वंश/कबीला (Clan) जैसी अनौपचारिक पहचान (Informal Identity) वाले ये तंत्र/समूह जो कि सगे–संबंधी/नस्ल आदि की बनावटी पहचान पर आधारित थे कजाखस्तान व मध्य एशिया के राजनीतिक पटल पर प्रभावित तौर पर राजनीति व सरकार का अभिन्न अंग बन गए। मध्य एशिया व कजाखस्तान के राजनीतिक प्रक्षेपपथ पर ये राजनीति के अनौपचारिक (Informal) या अनाधिकारित अविधिवत समूह और अपने वंश/कबीले हेतु सर्वाधिक कर्त्तव्यप्रायणता रखने वाले, ये वंशवादी राजनीतिकर्ता पूर्णतः अपनी कुबीले/वंश बहुसंख्यकता के बल पर यहां की सरकार व शासन में प्रभावशाली रूप से विराजमान हो गए। इस वंश/कबीला समूह राजनीति (Clan Politics)के पीछे का आधारभूत विचार मानव के क्रमागत विकास की पारम्परिकता में विद्यमान मिलता है।

सोवियत संघ विघटन के बाद मध्य एशिया व कजाखस्तान की लोकतांत्रिक प्रणालियों में भी कबीला राजनीति का आधार, वहां उन देशों की पारंपरिक व पौराणिक क्रमागत विकास की श्रृंख्यालाओं में उदरित मिलता है। यह प्रस्तावित अध्ययन कजाखस्तान के संदर्भ में वंश/कबीला समूह राजनीति (Clan Politics)(**Schatz, 2001:511**) का वहां के प्रशासनिक सरकारी तंत्र पर प्रभाव तथा उसके लोकतांत्रिकरण के प्रयास का एक विश्लेषणात्मक व व्याख्यात्मक अध्ययन है। इसमें सोवियत संघ के विघटन के बाद बने लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित कजाखस्तान गणतंत्र के अहम पहलुओं का एक लेखा–जोखा प्रस्तुत किया गया है। इसमें बताया गया है कि कैसे कजाखिस्तान गणतंत्र के लोकतांत्रिकरण में कबीला/वंश समूह राजनीति (Clan Politics) का एक अहम योगदान रहा है। यह सन् 1991 के कजाखिस्तान के स्वतंत्रता के बाद से सन् 2001 तक के कालक्रम तथा उस दौरान कजाखस्तानी राज्य में हुए अहम् राजनैतिक परिवर्तनों को मुख्य आधार बनाकर किया गया समबद्ध अध्ययन है।

जैसे ही सोवियत संघ का विघटन हुआ, कबीला/वंश (Clan) **(Olcott, 1987:26-40)** रूपी गैर–औपचारिक (*informal*) पहचान जो कि परिवार व समूहवादी आपसी संबंधों पर आधारित थी, सारे मध्य एशिया क्षेत्र व मुख्यतः कजाखस्तान में प्रमुख राजनैतिक चरित्र के रूप में उभर कर सामने आई। 'कबीला राजनीति' (Clan Politics)–'अनौपचारिक राजनीति' (*informal politics*) का प्रसार तंत्र व उनके अभिकता सारे (मध्य एशियाइ क्षेत्र) व कजाखिस्तान क्षेत्र के उन समूहों में जो पारिवारिक व समूह वंशवली पर आधारित थे, मुख्य राजनीति में प्रभावशील कर्ता बन गए हैं। इनका इस देश की सत्ता, सरकार व सभी औपचारिक संस्थाओं में प्रमुख रूप से निर्णय–निर्धारण क्षमता में एक महत्वपूर्ण स्थान है। समूह/कबीला राजनीति (Clan Politics) के पीछे का आधारभूत व प्रभावी आशय इन अनौपचारिक

संस्थाओं के ऐतिहासिक क्रमिक विकास के कालानुक्रम की आर्थिक, राजनैतिक व सामाजिक अनुबंधों व संबंधों की प्रक्रिया में विद्यमान मिलता है।

शोध कार्य इस अध्याय में इन अनौपचारिक कबीला वंश/समूह संस्थाओं के एतिहासिक परिदृश्य पर प्रकाश डाला गया है। तथा इस अध्याय में कबीला व इनकी राजनीति से संबंधित साहित्य का विस्तृत अध्ययन किया गया है। जिनमें इन संस्थाओं द्वारा कजाखस्तान गणतंत्र के औपचारिक संस्थानों के लोकतांत्रिकरण की प्रक्रिया को विभिन्न विचारकों के मत प्रस्तुत करके समझाया गया है। जैसा कि इस अध्याय में विद्वानों द्वारा उत्तर–सोवियत कजाखस्तान के राजनीतिक विकास काल का अनुसंधानात्मक अध्ययन किया गया है उसमें दो दृष्टिकोणों के बीच बहस पर ध्यान केंद्रित किया गया है। एक तरफ कुछ वो विद्वान है जो मानते हैं कि कजाखस्तान व मध्य एशिया की अनौपचारिक राजनीति में कबीला वंशावली व पारिवारिक बंधन, सत्ता प्रक्षेप पथ में राजनीतिक और संस्थानिक विकास में केंद्रीय कारक तत्व हैं। **(Collins; 2006, Edward Schatz:2004)** जबकि दूसरी ओर विद्वान तर्क देते हैं कि औपचारिक सोवियत संरचनात्मक विरासत में मिली राजनीतिक व्यवस्था, इसके राजनीतिक संस्थागत विकास का प्रमुख कारण कारक हैं। **(P.J. Luong: 2002)**

क. ऐतिहासिक पृष्ठभूमिः–

यह सामान्य रूप से माना जाता है कि कजाखी खैनात (Kazakh Khanate) मुख्यतः 15वीं शताब्दी के दौरान स्थापित हुआ। काफी जटील क्रमिक विकास के बाद 16वीं सदी के आधा गुजरने के बाद कजाखियों ने Syr दरिया के सम्पन्न चारागाह मैदान व नखलीस्तान क्षेत्र को उज्बेकों को हराकर अपने प्रभुत्व में शामिल कर लिया था। यह सामरिक व आर्थिक रूप से उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण था, क्योंकि इससे कजाखों का शीतकालीन चारागाह मैदानों पर अधिकार हो गया। तथा बड़े औद्योगिक शहरों पर व्यापार

के हेतू अधिकार हो गया था जहां से उन्हें कराधन प्राप्त होता था। इससे चीजों की निरंतर पहुंच व वर्षा रहित अनुद्यौगशील क्षेत्रों व कृषि क्षेत्रों के लिए पानी की पहुंच आसान हो गई थी। इनने भी ज्यादा इसने कजाखी लोगों को बाहरी दुश्मनों के आक्रमणों से रक्षा हेतू एक आधार–क्षेत्र भी उपलब्ध करवा दिया था। पहली बार 'कजाख'**(v.v.barthold, 1969:226)** शब्द को एक सामुहिक स्वःपहचान (*Self Identification*) के तौर पर 16वीं सदी में प्रयोग किया गया और यह आज तक निरंतर जारी है।

पहली बार 'कजाख' पारिभाषिक शब्द दो हिस्सों में 'उज्बेक–कजाक' नाम से 16वीं सदी के प्रारंभ में प्रयोग किया गया। उज्बेक उनको कहा जाता था जो मावारा अल–नाहर क्षेत्र में मुखाम्मद शेईबानी खान के नेतृत्व में एक छोटे से उज्बेक कबीले के रूप में कजाखी सीमाओं में बसे रह गए थे। बाद में 16वीं सदी के आधे गुजरने के बाद उज्बेक व उज्बेक–कजाख पारिभाषिक शब्द पूर्णतः कजाख में तब्दील हो चुका था, जो कि बाद में कजाखी लोगों की अपनी पहचान बना। बाद में 18वीं सदी के मध्य में रूसी साम्राज्य के अधीन कोशेक रूसी कजाख लोगों को किर्गिज**(A.L. Levision 1827; part IV, No. 16, :432)** कहा जाने लगा तथा 20वीं सदी के प्रारंभ तक यह विश्वास किया जाता रहा कि किर्गिज ही असली कजाख लोगों को नेतृत्व करते थे। 'कजाख' **(E.A. Masanov, Alma Ata, 1966)** नाम एक स्वःपहचान (*Samonazvanie*/समोनाजवेनाई) और कजाखिस्तान नाम एक राज्य क्षेत्र के तौर पर 1925 में फिर से प्रयोग किया जाने लगा तथा 1935 आते–आते 'कजाख' या कजाखस्तान शब्द औपचारिक कानूनी तरीके से प्रयोग किया जाने लगा।

परम्परागत रूप से ही कजाख सामान्यतः तीन वंशानुगत कबीला समूहों (Clan) में बंटे हैं जिसे होर्डे/झूज (*Horde/Zhuz*)**(Akiner 1995:10)** कहा जाता है। ये तीनों होर्डे/झूज (Zhuz) मुख्यतः निम्न होर्डे (*Lower Horde/Zhuz*), मध्य होर्डे (*Middle Horde/Zhuz*) तथा उच्च होर्डे

(*Higher Horde/Zhuz*) में विभक्त है। झूज/हॉर्डे का मतलब 'सौ' होता है।**(Eiteen. H, 1998:432)**

आगे चलकर इनमें भी उप–विभाजन मिलता है जैसे रू (*ru*) व ताईपा (*Taipa*)। रूसी और सोवियत नृवंशविज्ञान मानव शास्त्री रू (ru) को वंश/क्लैन समूह (*Clan*) तथा ताईपा (*Taipa/Tribe*) को कबीला दो भागों में बांटते हैं। लेकिन वास्तव में कजाखस्तानी इनमें कभी भी ऐसा साफ विघटन नहीं करते हैं वे इन्हें रू (*ru*) बोलना ही सही मानते हैं जो कि उरू (*Uru*) शब्द का ही बोली संस्करण है। वे दोनों के लिए चाहे वह वंश/क्लैन समूह (*Clan*) हो या ताईपा (*Taipa/Tribe*) एक ही शब्द उरू (*Uru*) का संबोधन प्रयोग करते हैं। यह कबीला समूह/वंश पर आधारित संजातिय समूह पहचान है जिसको एडवर्ड सकात्ज **(Edward Schatz, Modern Clan Politics; 2004)** सामूहिक वंशावली पहचान बोलता है, ये परम्परागत रूपसे सूक्ष्म विधिपूर्वक, वंशीय सगोतता व रिश्तेदारी रक्त संबंधों पर आधारित थी।

यह सर्वविदित है कि कबीला झूज/वंश समूह (Clan Based) आधारित समाज जो कि कजाखस्तान की जनसंख्या संरचना का सबसे प्रमुख बल है इसमें कार्यात्मक परिणाम मुख्यतः सूचनाओं के आदान–प्रदान और सम्पति विनिमय जैसे काम ही कबीलाई घूमंतू कजाखी समाज के प्रमुख आधारित बिंदु है। सूचनाएं लगातार पितृसत्तामक माध्यमों के द्वारा एक से दूसरे वंश में परावर्तित होती है। ठीक ऐसे ही सम्पत्ति भी संचारित होती है, जो कि पीढ़ी दर पीढ़ी पृसत्तात्मक वंशावली को आधार देती है। इसी आधार पर कबीलाई कजाखी समाज का निर्माण हुआ जिसमें वंश समूह (Clan) प्रमुख राजनैतिक, आर्थिक व सामाजिक कर्ता बने। इसलिए पूरे कबीलाई समाज में वंशवादी/वंशावली विषयक सांगठनिक ढांचा ज्यादा महत्व रखता है। **(N.E. Masanov, Kochevia trivilizatsia Kazak, 1970:21-23)**

पारम्परिक कजाख कबीला झूज/वंश (Clan System) व्यवस्था की प्रमुख विशेषताएं अग्रलिखित है।–

(i) आंतरिक क्षेत्रिय एकता, (2) सजातीय/नृजातिय एकता, (3) सांस्कृतिक आर्थिक सामुदायिकता तथा (4) राजनीतिक नेतृत्व समुदाय।

इन विशेषताओं का विस्तृत रूप से जानना बहुत आवश्यक है। हर एक कजाख झूज (Clan) का अपना एक ऐतिहासिक रूप से बनाया गया क्षेत्र व भूखंड इलाका था। विशेषतः वरिष्ठ झूज (Senior Zhuz) सेमिरेचये क्षेत्र (Semirechye) में और दक्षिण कजाखस्तान में, मध्यम झूज (Central Zhuz) मध्य, पूर्वी और उत्तरी कजाखस्तान में जबकि कनिष्ठ झूज (Junior Zhuz) पश्चिमी कजाखस्तान क्षेत्र में मिलते थे। कजाखी कबीले व नृजातीय समूहों की ऐतिहासिक प्रामाणिकता न सिर्फ उनके अतीत को प्रदर्शित करती है बल्कि कजाखस्तान की आज की राजनीति को भी समझने में मदद करती है। हर एक झूज समूह (Zhuz)को ऐतिहासिक व वंशानुगत तौर से एक ही पुरखों/पूर्वजों की संतान माना जाता था , क्योंकि जिस भी एक क्षेत्र में, जो भी झूज/होर्डे जनसंख्या बसी थी वो दूसरे क्षेत्र के अन्य झूजों की तुलना में एक समान मजबूत घरेलू आर्थिक संबंधों के वाहक थे। उनकी सभी राजनैतिक, सामाजिक व आर्थिक क्रियाएं अन्य झूजों/होर्डे के मुकाबले ज्यादा मिलती–जुलती थी। फलस्वरूप, उनमें ज्यादा विशेष आंतरिक नस्ली व सजातीय समूह भावना मिलती थी तथा अपने परम्परागत मूल्यों, आदतों, रिवाजों और रीतियों का समान रूप से आदर किया जाता था।झूज (Zhuz) को आपसी एकजुटता लगाव व नेतृत्व के कारण भी जाना जाता था। प्रत्येक झूज (Clan) का अपना *byi* (बाई) एक नेता होता था। कजाख खैनात के समय में प्रत्येक झूज समूह (Clan) का अपना एक नेता खान होता था। कजाखी झूज समूह संगठन (Zhuz System) या व्यवस्थाएं, कजाखिस्तानी लोगों की राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक जीवन का अभिन्न हिस्सा था। शांतिकाल में आपस में ही, विभिन्न मुद्दों व झगड़ों को अपनी–अपनी झूज

व्यवस्था के द्वारा सुलझा लिया जाता था। इसका मतलब यह नहीं है कि कजाखी झूज में आपस में राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और सजातीय संबंध नहीं थे। आपस में निकट आर्थिक–अंर्तसंबंध इन कबीलाई व कुनबा आधारित समाज व्यवस्थाओं में मिलते थे, जैसे पशुपालन हेतू, या अन्तर्जातिय आर्थिक लेन–देन हेतु आदि। इसके अतिरिक्त व्यापार संबंध बनाए गए तथा विवाह संबंध संकुचित थे। एक समान सजातीय संस्कृति, भाषा, घरेलू व्यवस्था व परिवार ईकाई तथा आर्थिक समानता ने इन्हें एक साथ जोड़े रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दुश्मन या बाहरी खतरे के खिलाफ, एक प्रहरी की तरह कठोर बलपूर्वक लड़ने के लिए तथा उससे कजाख क्षेत्र की रक्षा के लिए हमेशा डटकर लड़ने का जज्बा भी इस झूज समाज व्यवस्था में था। सभी प्रमुख मुद्दे चाहे वो घरेलू राजनीति या बाहरी राजनीति के हो आपस में मिलजुल कर एक कुलतावस (*Curultays*) (**Schatz 1999:51-60)** नामक संख्या बल संस्था के सामने लाकर सुलझाए जाते थे।

यह ऐतिहासिक विवरण हमें कबीला/वंश समूह (Clan System) व्यवस्था का विस्तृत ब्यौरा प्रस्तुत करता है। कबीलाई वंश समूह आधारित व्यवस्था में कजाखस्तान के परम्परागत राजनीतिक काल को आधार बनाकर, आज के आधुनिक स्वतंत्र कजाखस्तान के वंश समूह व कबीला–समूह आधारित (*Clan based palitical system*) राजनीतिक व्यवस्था को समझने हेतु सार्थक प्रयास किया जा सकता है। सोवियत संघ के विघटन के बाद सारे नए बने मध्य एशियाई राष्ट्रों में राज्य व संस्थान निर्माण प्रारंभ हुआ जिसमें कजाखस्तान एक महत्वपूर्ण राजनैतिक परिदृश्य प्रणेता के रूप में उदरित हुआ। **(Collings, 2002: 4-10)**

आधुनिक कजाखस्तान में उप–सजातिय विभाजन में वितरण बहु–स्तरीय है। यह चरित्रिक व प्रारंभिक तौर पर तो परम्परागत कालीन वंश समूह (Clan) व्यवस्था की तरह ही प्रतीत होता है लेकिन इसमें आधुनिक दौर की राजनीतिक संकल्पनाओं का भी संलयन हुआ है। कजाखिस्तान में बहुत सारे कबीले/नृजातिय कुल/वंश/नस्ल एक कबीलाई तंत्र व्यवस्था में बंध

हैं जिसे संयुक्त रूप से झूज या हॉर्डे (Zhuz/Horde) कहा जाता है। ये परम्परागत कबीलाई समाज से आधार तौर पर मिलती जुलती है लेकिन 1991 के विघटन के बाद बने लोकतांत्रिक राष्ट्र–राज्य व्यवस्था में इनका रोल कुछ अलग व बदल गया है। कैथलिन कॉर्लींग के अनुसार अब ये वंश समूह अपनी परम्परागता को आधुनिक कजाखिस्तान राजनीतिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में, विभिन्न अवतारों में दर्शित होते हैं।(**Collings, 2002: 11-18**)

ख. विषयगत लेखन साहित्य की समीक्षा (Literature Review):–

किसी विषय पर लिखे गए साहित्य की पुर्नविवेचन या समीक्षा करना एक तरह से उस विषय का मूल्यांकनात्मक अध्ययन होता है, जो कि विभिन्न जानकारियों व सूचनाओं का एक ऐसा समूह होता है, जो उस क्षेत्र विषय–विशेष पर आधारित होता है तथा पहले के शोधकर्ताओं के द्वारा बड़े ही जिम्मेवारी व हिस्सेदारी के साथ सम्पन्न व लिखित होता है। इस शोध में भी विभिन्न मतों/सिद्धांतों (Theory) का प्रयोग अपनी परिकल्पना/अवधारणा के शोध हेतु प्रयोग किया गया है। इसके लिए विभिन्न लेखकों की अनेक किताबों तथा लेखों व कुछ सरकारी रिपोर्टों, कुछ लेखकों के साक्षातकारों के अंशों, अखबारों तथा विभिन्न पत्रिकाओं का प्रयोग किया गया है।

इस अध्ययन में शोध के परिकथ्य या परिकल्पना के अनुसार कजाखस्तान देश की लोकतांत्रिक संस्थाओं (Democratic Institutions) का अध्ययन कबीलाई वंशावली समूह रचना या कलैन/वशं राजनीति (Clan Politics) के संदर्भ में देखा गया है। इस शोध लेखन समीक्षा में (Clan Politics) वंश/कुल राजनीति के सैद्धांतिक (Theoretical) पहलुओं को उजागर किया जाएगा। इस समीक्षीय खंड में सबसे पहले कुल/वंश (Clan) से संबंधित थ्योरियों को देखा जाएगा।

ख(1.)कबीला/वंश समूह सिद्धांत (Clan Theories) :–

आदिमकालीन वंश/कुल (Clan) दृष्टिकोण यह बताता है कि किसी भी एक सजातीय या नृजातीय समूह में एक जैसे इतिहास, पितृ वंश परंपरा और एक समान सांस्कृतिक लगाव होने के कारण उसका झुकाव एक विशेष सामाजिक समुदाय/सम्प्रदाय की तरफ बढ़ जाता है। इसलिए वंश विदलन/भेदन की यह जड़ता/दृढ़ता ''पूर्ववर्ती/पूर्वगामी समानाताओं'' के रूप में प्रकट होती है जो पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती रहती है।**(Glenn,1999:29)** उन्हें अपने राष्ट्र–समूह से जुड़ने के लिए कपोल–कल्पना की जरूरत नहीं होती है बल्कि वे हर रोज के सामाजिक मेल जोल से विश्वास व निष्ठा की भावना से जुड़े रहते है। हालांकि, आदिमकालवादी (*Primordialist*) विवेचक इस बात को बताने में अक्षम रहे हैं कि कैसे स्कॉटलैंड, आयरलैंड व इटली में वंश समूह/कुल कबीले समूह (Clan) खत्म, गुम या सामाजिक भलवीकरण की प्रक्रिया से गुजरे थे। यह शोधकर्ताओं को, ये देखने के लिए प्रेरित करता है तथा समझाने के लिए कहता है कि क्यों आखिर कुछ मामलों में तो उनका पुर्नउत्थान संभव है तथा बाकी में नहीं। (**कोलिन्स 2006:44, स्कात्ज 2004:13, ग्लेन्न 1999:32**)

रचनावादी (*Contructivist*) दृष्टिकोण इन सामूहिक पहचानों या वंश कुलों की पहचान के लिए, संभवतः दूसरों के अपेक्षाकृत एक लचीलापन रखता है। रचनावादियों के अनुसार, ''पहचाने (Identities), चाहे वे व्यक्तिगत स्तर पर हो या फिर सामुदायिक स्तर पर, दोनों ही आखिरकार प्रवाही (Fluid), चुनी हुई (Chosen), यंत्रीकृत (Instrumentizeable) मौजूद असंवेदनशील ढांचे को बदलने को उत्तरदायी और राजनीतिक सौदागरों व सांस्कृतिक महारथियों द्वारा तोड़–मरोड़ कर पेश करने की जवाबदेह हैं।'' **(Lustick,2000:1.1)** पहचान/व्यष्टित्व (Identities) का ऊपर उठने व नीचे गिरने का महत्व राजनैतिक प्रक्रिया पर निर्भर करता है। अभिजात वर्ग (Elities) उन परिस्थितियों में उसका फायदा उठाना शुरू कर देते हैं और उससे सहानुभूति

रखने वाले लोगों की क्षमताओं को संगठित करना शुरू कर देते हैं। वहीं दूसरी तरफ निमित्य यांत्रिकतवादी (*Instrumentalist*) पहचान/व्यष्टितत्व के निर्माण का आधार का मात्रा उपलब्ध साधनों की प्रतिद्वंद्वता व प्रतिस्पर्धा को मानते हैं। यह अवधारणा मानती है कि कई व्यक्तिक विशेष जान–बूझकर, किसी समूह/वंशकि पहचान विशेष के आधार अपनी एक स्व पहचान (Self Identity) बनाते हैं तब वो कथित यांत्रिकीय किमती वस्तुओं तक पहुंच बना पाते हैं। सामुहिक एकता/साम्यता (Group Soliderity), आपसी सामुहिक इच्छाओं और सामूहिक पहचानों के द्वारा प्रसारित की जाती है और यह अपने लक्ष्यों व संसाधनों की रक्षा के नाम पर लोगों को संगठित व इक्कठा रखने का साधन है। वैसे तो इस अवधारणा मे समूह अभिनिर्धारण रिश्तेदारी व संबंधी आधार पर नहीं होती, बल्कि ये भाषा, धर्म और जन्म स्थान के आधार पर बनती हैं **(Hempel 2006:2)**।जब इन बड़े व फैले समुदायों का महत्व और बढ़ जाता है, तब व्यक्तिगत रूप से संसाधनों, का प्रवाह व बदलाव, अप्रवासननीय औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और राज्य के शासन का प्रवाह भी आधुनिकीकरण के कारण बढ़ जाता है**(Hempel 2006:4-5)**। यह समूह बदलते पर्यावरण में संसाधनों की पहुंच के लिए एक माध्यम माना जाता है। ऐतिहासिक संस्थावादी विचारक, गहराई से यह मानते हैं कि संस्थान ‘‘किसी भी जगह का राजनीतिक व्यवहार निर्धारित करने में बड़ा महत्वपूर्ण व स्वायत्त भूमिका अदा करती हैं।’’ **(Lecous 2005:511)** संस्थान को बड़े विश्वास के साथ माना जाता है कि ये पहचानों (Identified) और परिस्थितियों को प्रभावित करते हैं और उसके परिणामस्वरूप इन विधि कर्ताओं की रणनीतियां, साथ ही साथ परिणाम, लक्ष्य, फायदे व पहचान सब प्रभावित होते हैं। **(Lecours 2005:513)** एतिहासिक संस्थावादियों के वयक्तव्य में ऐतिहासिक (इतिहास) कमिया व अनियमितताएं सबसे महत्वपूर्ण कारक हैं। **(Lecours 2005:514)**

कुल/वंश राजनीति (Clan Politics) के संदर्भ में दो मुख्य विचारधाराएं, इस अध्ययन का हिस्सा है। इसमें संस्थाओं के संदर्भ में दो अलग–अलग अवधारणाओं व कार्यों को प्रस्तुत किया गया है जो कि संस्थाओं की भूमिका का कजाखिस्तान के संदर्भ में विवेचन करती हैं। यह है कि कैसे कजाखस्तान के लोकतांत्रिकरण में (*Informal Instition*) अनौपचारिक संस्थानों/संस्थाओं (वंश/कबीले और वंशीयता) और सोवियत संघ के वक्त की संस्थाओं ओबलास्ट (क्षेत्रीय) और राईओन (जिला) पहचानों को वरीयता दी जाती रही है। यहां यह माना गया है कि कोई मध्यममार्गी अवधारणा जो कि अनौपचारिक व औपचारिक संस्थाओं के बीच संपर्क करवाती है का विस्तृत अध्ययन इसलिए बहुत आवश्यक है, क्योंकि जिससे हम सोवियत विघटन के बाद बने मध्य एशिया के कजाखिस्तान जैसे देशों की राज्य व्यवस्था का एक अच्छा व विस्तृत अध्ययन कर सकें। वंश/कुल कबीला समूह राजनीति (Clan Politics) इन सब संस्थाओं का आधार है। कजाखस्तान के राजनीतिक कर्ताओं का अध्ययन इस विषय में हमें औपचारिक व अनौपचारिक राजनीति का अच्छे से ब्योरा देता है।

भावी आधुनिक शोध साहित्य में कजाखस्तान व मध्य एशिया के सभी देशों में स्वतंत्रता से अब तक कई ऐसे सामाजिक व राजनीतिक समूहों का विवरण स्पष्ट तौर पर मिलता है जो कि अपनी 'उप–राष्ट्रीयता' व 'वंशीय सामूहिकता' के आधार पर इन क्षेत्रों की घरेलू राजनीति निर्धारित करते हैं। इसलिए लेखक इस बात पर सहमत है कि इन क्षेत्रों की राजनीति, अर्थ–राष्ट्र की इन दरारों या असहमतियों का परिणाम है और एक ही समय उन मतभेदों की पहचानों के बीच के असहमत भी नजर आते हैं। जो भी विचारक एक में सहमत या असहत हैं वो इस क्षेत्र की राजनीति को सोवियत संघ के पहले का या फिर सोवियत संघ के विघटन के बाद उभरी परिस्थितियों का परिणाम मानते हैं।

कैथलिन कॉलिस कहती हैं कि, मध्य एशियाई देशों की राजनीति विभिन्न वंशों/कुल समूहों (Clans) के बीच का द्वंद्व है, जिसको वो

विभिन्न व्यक्तिगत संबंधों का एक नेटवर्क कहती हैं जो अपनी ''वंश, कुल या दिखावटी वंश पहचान के आधार पर, एक समझौतागत अनौपचारिक संस्था के अधीन इक्ट्ठा/सामूहिक होते हैं।'' क्लैन/कुल/वंश/कुटुम्ब(Clan) एक तरह से 'उप–सजातीय' समूह हैं जो कि भाषा, धर्म सपिण्डता, जातीयता और संस्कृति से थोड़ा ज्यादा समूह भावना से जुड़े होते हैं। **(Collings 2002)**

ऑलिवर रॉय (2000) अपनी किताब '**नया मध्य एशिया राष्ट्रों का निर्माण**'' में परिभाषित करते हैं कि ''सहभागिता/एकता समूह या एक साथ रहने वाले समूह परिवारों का एक–दूसरे के साथ बहुत गहरा संबंध होता है।'' कुछ चारित्रिक समानताएं होते हुए भी वंश/कुल (Clan System) व्यवस्था संरक्षकवाद/आश्रयवाद, स्थानीयतावाद, या मध्य एशिया में मौजूद कुलीनतंत्र का पर्यायवाची बिल्कुल नहीं है। अनीता सेनागुप्ता ने अपनी पुस्तक 'दा फॉर्मेशन ऑफ उज्बेक नेशनः अ स्टडी इन ट्रांसलेशन' में कहा है कि मध्य एशिया में ''भौगोलिक रूप से बने अनेक अभिजात वर्ग गुट थे। **(Oliver Roy 2000;The New Central Asia: The Creation of Nations)**

कैथरिन कॉलिन अपने काम **'क्लैन, गुट अनुबंध, और राजनीति''** (2002) में जिन्होंने मध्य एशिया में सबसे ज्यादा समय गुजारा है, क्लैन/कुल या वंश/कुल की सबसे अच्छी परिभाषा देते हुए कहा है कि''वंश/कुल सम्प्रदाय (Clan) एक तरह की अनौपचारिक (Informal) सामाजिक संस्था है जिसमें वास्तविक व मानने के तौर की रिश्तेदारी/साझेदारी खूनी रिश्तों और शादी संबंधों पर आधारित, आपसी केन्द्रीकृत सामूहिक व्यव्स्था मिलती है। कुल/वंश समुदाय, मुख्यतः अस्मिता/पहचान संजालप्रसार तंत्र (*Identity Networks*) होते हैं जो कि अपने साथ एक बहुत लम्बा व गहरा संबंधों का, क्षैतिज (*Horizontal*) व अनुलंब/लम्बरूप (*Vertical*) वंश/कुल आधारित जाल बनाए रहते हैं। कुलों/सम्प्रदायों(Clans) की जड़ खूनी रिश्तों पर आधारित नियमों, परम्पराओं और विश्वासों की विवेकपूर्ण समझ

होती है जो कि मध्य एशिया की अर्थव्यवस्था को अर्ध–आधुनिक बनाए रखती है। **(Collings 2002:87)**

कैथलिन कॉलिस अपने लेख **'क्लैन, पैक्टस एंड पोलिटिक्स'' (2002)** में आगे स्पष्ट करती हैं कि ये क्लैन/वंश सम्प्रदाय (Clan) परम्परागत तौर पर उच्च झूज (Elder Zhuz) दक्षिणी कजाखिस्तान, सेमिरेकाई (*Semirecheie*) जो कि एक नदी इली (Ili) की घाटी व इसकी विभिन्न सहायक नदियों के बीच स्थित क्षेत्र है। इसके साथ–साथ झुन्गार पूर्व की तरफ (Zhungar), जैलईशक (Zailisk) और किर्गिज अल्ताऊ (Kyagz Altau) कराताऊ जो दक्षिण में है, चू (Chu) और तालास (Talas) नदियों के बीच, तथा सिर–दरिया (Syr-Daria) नदी के पश्चिमी भाग के मध्य में और उत्तर में ऊपर की तरफ बेलपक–दला (Belpak Dala) और मोईनकूमि (Main Kumg) रेगिस्तान और बालखाश (Balkhash) झील पर स्थित है।''आपसी विश्वास के आधार पर, सदस्यों को एक दूसरे के साथ जोड़े रखने की क्षमता'' के अनुसार क्षैतिजाकार है, और ''समाज और राज्य के विभिन्न स्तरों पर आश्रित, अभिजात्य और गैर–आभिजात्य सदस्य दोनों को लम्बवत/अनुलंबाकार में शामिल किया जाता है।'' परिणामस्वरूप वंश/कुल सम्प्रदाय समूह, (Clans) औपचारिक व सरकारी, प्रसार तंत्र और संस्थानों को आपसी विश्वास व आसरा/निर्भरता में मात देने में सफल हो जाते हैं।

'वंश/कुल समूह राजनीति' (Clan Politics) एक राजनीतिक शब्द संरचना है, जिसमेंवंश/सम्प्रदाय (*Clan Organisations*) संगठन, राजनीतिक व्यवस्था पर लम्बे समय तक अपना कब्जा तथा प्रभाव रखते हैं। इसकी कुछ झलक पुरानी समयावधि के इतिहास में मिलती है, जिसमें वंश, पुरानी राज्य व्यवस्था को सुदृढ़ करने, सरकारों के लगातार पुनःविस्तारण क्रम और राजनीतिक बदलाव के लिए प्रेरणा का काम करते थे। मध्य एशिया के कजाखस्तान जैसे देश में, वंश/कुल राजनीति (Clan Politics) लगातार राजनीति के क्षेत्र में स्थायी/नियत प्रक्रिया बन गई है, जो कि चालाकी से

हेरफेर करके, कजाख राज्य की राजनीतिक व्यवस्था पर अपना वर्चस्व बनाए हुए है। ''क्लानोव्यापोलितिका'' (*Klannovoyapolitika*) या वंश/कुल सम्प्रदाय राजनीति (Clan Politics), ''नस्लों/संजातीयता, ग्राहकवादिता, क्षेत्रीयता, या मैफियोसो (*Mafioso*) राजनीति'' के समान नहीं है और इसके राजनीतिक प्रभाव व स्थायित्व प्रभाव पृथक–पृथक है।

कैथलिन कोलिंस वंश समूह/कुल सम्प्रदाय के बारे में एक बहुत ही गहन अवधारणा/दृष्टिकोण अपनाती हैं जो कि आदिमकालीनवादी (*Premordialits*) यांत्रिकतावादी (*Instrumentalist*) और ऐतिहासिक संस्थावादी दृष्टिकोणों पर विकसित किया गया है। कॉलिस वंश/सम्प्रदाय समूह (Clan) को व्याख्याकृत करते हुए कहती हैं कि, ''ये एक अनौपचारिक संस्थान है जो कि अनेक व्यक्तियों के आपसी वंश/कुल आधारित संबंधों पर निर्भर करता है तथा इसमें वंश और समुदाय की दिखावटी पहचाने एक प्रसार तंत्र की तरह से एक दूसरे से जुड़ी होती है।'' लेकिन आगे वो कहती हैं कि, ''ये प्रसार तंत्र व्यक्तिगत के द्वारा कारणवश (सोची–समझी) परिकल्पनाओं या लेखा गणनाओं पर आधारित होते हैं जो कि समूहवादी और संस्थानगत परिप्रेक्ष्य में बने होते हैं।'' (**क्लैन पॉलिटिक्स एंड रिजिम ट्रान्जीशन इन सैन्ट्रल एशिया, 2006:1**) कॉलिस के अनुसार वंश समूह, वंशानुगतता/परिवारवाद के विस्तृत फैले हुए तंत्र पर निर्मित होते हैं जो कि जन्म या बनावटी रिश्तेदारी द्वारा परिभाषित किए जाते हैं। ये बहुत लंबे समय से चले आ रहे ऐतिहासिक परिवार संबंधों, लगावों, सम्मिलित महल्ला (*Mahalla*) या एक स्थानीय समिति, गांव व क्षेत्रीय प्रसार तंत्र, और स्कूल या व्यापार के सहयोगी आदि भी इसी के आधार पहचाने हैं। (**Collings*2006:26***)।

कॉलीस वंश/सम्प्रदाय समूह के बिल्कुल जड़ बिन्दु को बताते हुए कहती हैं कि ये आरोपण, वंशवाद–आधारित पुराने विश्वास व पहचान के नियम पर निर्भरित/निशरित है। फिर भी वंश समूहों/पहचानों को वो तर्क

संगत/विवेकपूर्ण अभिकर्ता मानती हैं। वंश/सम्प्रदाय समूह के अंदर, अभिजात वर्ग अपने सामाजिक ओहदे/हैसियत को बरकरार रखने, व उससे लगातार लाभ प्राप्ति हेतु, एक दूसरे के साथ राजनीतिक व आर्थिक व्यवस्था में एक प्रसार तंत्र के द्वारा जुड़े रहते हैं इसलिए वो विवेकपूर्ण अभिकर्ता होते हैं(**Collings2006:29**)। इसी तरह गैर–अभिजात चाहते हैं कि उनके वंश समूह के बड़े आश्रयदाता व संरक्षक उन्हें रोजगार, शिक्षा की प्राप्ति, उधार, कमी के हालात में साधनों की प्राप्ति और सामाजिक व राजनीतिक बढ़ोतरी में मार्गदर्शित करें (**Collings2006:29**)।

कॉलिस अवधारणात्मक रूप से तीन स्थितियों को वंश/साम्राज्य समूह (Clan) के अस्तित्व की दृढ़ता को आगे बढ़ाने का कारण मानती हैं वो है साम्राज्यवाद की वजह से राज्य निर्माण में देरी, राष्ट्र–पहचान के निर्माण में देरी, बाजार अर्थव्यवस्था की अनुपस्थिति और इसका एक मंदी आर्थिकता को अस्तित्व में रखना'' (**Collings 2006:44**)। ये परिस्थितियां, जो कि वंश/रिश्तेदारी आधारित सामुदायिक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में मौजूद रही, के कारण ''वंश/समूह राजनीति''(Clan Politics) का उद्भव हुआ। इसने (Clan Plotics) औपचारिक शासन पद्धति में घुसपैठ, भेदन व रूपांतरण कर दिया। वंश समूह (Clan) हमेशा ''औपचारिक शासन व्यवस्था की शक्तियों के पीछे उत्तोलक'' के अनौपचारिक भाग के तौर पर बने हुए हैं जो कि वंश/कुल आधारित पितृसत्ता के माध्यमों से अनौपचारिक ''खेल के नियमों'' को प्रतिस्थापित करने में लगे रहते हैं। जबकि इससे नए आधुनिक राज्य शासन सत्ताएं शायद ही औपचारिक तौर पर शायद होते हैं (**Collings2006:244**)। में अनौपचारिक (Informal) खेल के नियम इन वंश समूहों (Clans) के बीच समझौते के आधार पर निर्धारित होते हैं जिससे स्थायीत्व को प्रोत्साहन मिलता है और संसाधनों की लड़ाई में विभिन्न वंश समूहों के फायदे को सही तरीके से, उनके बीच के संसाधनों को निर्धारित करने में सहायता मिलती है (**Collings2002:237**)।

कॉलिंस अंत में कहती हैं कि ''जब तक आर्थिक व राजनीतिक परिस्थितियां, वंश समूहों को अच्छे प्रेरणादायक अच्छी मात्रा में संतोषजक लाभ, राज्य व्यवस्था में देते रहते हैं, तब तक वो असंभव रूप से करते हैं'' और इसी बीच वंश/कुल समूह आधारित राजनीति नकारात्मक चक्रण को भड़काने का काम करते हैं जो कि वंश/कुल समूह का लाभ करने की बजाए, कुल समूह के बीच विवादों का कारण बन जाते हैं।'' **(Collings**2006:21)एडवार्ड एकात्ज कजाखस्तान के अपने शोध के आधार पर कॉलिस के इस विचार से कुछ सहमत दिखते हैं।

एडवार्ड स्कात्ज अपनी किताब (2000), **'दा पालिटिक्स ऑफ मल्टीपल आईडेन्टिटिजः लिनेज एंड एथिनिसिटी ईन कजाखस्तान'** में अपने कुशाग्र कार्य द्वारा आधुनिक मध्य एशिया व कजाखस्तान की राजनीति कीअहम सच्चाईयों को बताते हैं किः वंश/कुल और वंशावली रिश्तेदारी प्रसार तंत्र आज भी शक्तिशाली तरीके से कजाख व अन्य मध्य एशिया राज्य व्यवस्था के सामाजिक व आर्थिक ढांचे में बहुत गहराई तक समाहित हैं। और वास्तव में, जैसे स्कात्ज खुद सच जानते हैं कि सन्निहित सोवियत विघटन के बाद स्वतंत्र राज्य व्यवस्थाएं इन सामाजिक संस्थाओं को स्थाई बनाए हुए हैं, चाहे वो जानबूझकर हों या बिना जाने। स्कात्ज का काम, वंश समूह की लगातार बढ़ती र्स्वव्यापकता, उनके प्रभाव, परिवार, और कबीला जनजाति आदि का ऐसा मिश्रण है जो क वंश राजनीति कि बड़े ही अस्पष्ट प्रतीयमान को तथा कजाखस्तान व मध्य एशिया की राजनीति के बहुदा पेचिदा स्वभाव को बड़े ही प्रभावी तरीके से समझाता है। **(Schatz 2000)**

एडवर्ड स्कात्ज (2004) के अपने कार्य **'मॉर्डन क्लैन पॉलिटिक्सःदा पावर ऑफ 'ब्लड' इन कजाखस्तान एंड बियोंड'** में बताता है कि, एक कम सूचना/जानकारी वाले समाज में, जहां कोई नहीं जानता है कि वास्तव में क्या हो रहा है, वंश व रिश्तेदारी वंशानुगतता नियुक्तियां, चाहें सच्चाई जो भी हो, विपक्ष/विरोध और राज्य निर्माण दोनों का ही जरिया व साधन बन जाती है। और आहिस्ता–आहिस्ता जनता की कल्पना या सोच पद्धति में एक

शक्तिशाली अभिकर्ता का स्थान ग्रहण कर लेती हैं। कजाखस्तान के संदर्भ में भी स्कात्ज नजरबायेव की राजनीति को इसी का परिणामस्वरूप मानता है। ये औपचारिक संस्थाओं में अनौपचारिक वंश समूह (Clan)की दखलंदाजी को वहां की राजनीति के संदर्भ में प्रस्तुत करता है। स्कात्ज वंशावली/रिश्तेदारी (*Kinship*) शब्द रचना का प्रयोग करने, कि कैसे वंश समूह की सदस्यता परिचित होती है की बजाए स्कात्ज मानता है कि वंश समूह की सदस्यता ''वंशावली विषयक ज्ञान''(*Genoalogial Kowledge*) से परिभाषित होती है, जो काल्पनिक बनावटी वंशानुगतता (*Fictive Kinship*) की तरह ''जो कि अभिजात वर्ग के द्वारा बनाई व तोड़ी–मरोड़ी जा सकती है, सिर्फ अपने शासन को बनाए रखने के लिए सही वैसे ही की जैसे यह किसी भी साम्प्रदायिक प्रभाव के द्वारा कांटी–छांटी जा सकती है। **(Schatz 2004:26)** स्कात्ज ने यह भी निर्देशित किया कि, वह जिसको ''पहचान की पुनरूत्पत्ति की प्रक्रिया'' कहता है में जो 'इसमें कालिक बिंदु श्रेणीबद्धता है जो कि विशेष लौकिक और स्थानिक संदर्भ और संयोगों से आपस में कारणवश बंधी होती है।'' **(Schatz 2004:13)**

कजाखस्तान में यह खास पहचान की पुनरूत्पत्ति की प्रक्रियाएं, जो कि वंश दृढ़ता के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार है, मुख्यतः ये सोवियत शासन व्यवस्था/प्रकृति के परिणामस्वरूप है। स्कात्ज के अनुसार ये प्रक्रियाएं कमी/घाटे की राजनैतिक अर्थव्यवस्थाएं, वंशों समूहों का कल्पनीय स्वभाव, और सोवियतों की वंश व सम्प्रदाय/कुल समूह श्रेणियों को तोड़ने, बांटने व रद्द करने का लक्षित अभियान है **(2004:17 स्कात्ज)**। स्कात्ज यह भी देखता है कि वंश/कुल समूह पहचानें राज्य प्रक्रियाओं का परिणाम है। इसमें राज्य की प्रक्रियाओं के द्वारा, विशेषाधिकार/प्राधिकार प्राप्त विशेष वंश समूह तंत्र के सदस्य ''उन वंश समूह/कुल समूह के लोगों के लिए घाटे या कमी का निर्माण करते हैं जो उस वंश/कुल समूह तंत्र का हिस्सा नहीं हैं।'' और वंश की भूमिका को राजनैतिक रंग दे देते हैं। **(Schatz, 2004:110)**

शिरिन अकीनर अपने लेख **''दा फारमेशन ऑफ कजाख आईडेनटिटीः फरोम ट्राईब टू नेशन–स्टेट''** में स्पष्ट करते हैं कि मध्य एशिया में वंश/कुल समूह अब सिर्फ पहले से प्रबल स्थानयिक पारिभाषित'', ''औपचारिक पहचान'' नहीं रह गए हैं बल्कि अब ''औपचारिक राष्ट्र–राज्य पहचान'' को प्रभावित करने की क्षमता में परिवर्तित हो चुके हैं।**(Shirin Akiner 1995:3-5)**

ईशाक रिको अपनी पुस्तक ''**पार्टी सिस्टम फॉर्मेशन इन कजाखस्तानः बिट्विन फार्मल एंड इनफॉर्मल पॉलिटिक्स''** में कहते हैं कि अनौपचारिक संस्थाएं (*Informal Institution*) तब प्रभाव में आई जब लोगों, राजनीतिक समूहों और राजनीतिक संस्थाओं ने अपने हित सबसे प्रमुख रखकर और अधिक से अधिक फायदा कमाने के लिए विभिन्न विकल्प खोजने शुरू किए। इस राजनीतिक खेल में राजनीतिक पार्टियां व समूह सबसे बड़े प्रभावी कर्ता साबित हुए हैं। जबकि हालांकि कुछ समाजों में और राजनीतिक वातावरण में, कुछ समूह अथाह व शक्तिशाली कर्ता के रूप में उभरे और उनका राजनीतिक व सामाजिक प्रभाव भी बहुत ज्यादा है जो कि उन समाजों के राजनैतिक व्यवहार को पूर्णतः नियंत्रित कर सकते हैं। ये समूह वंश/कुल समूह (Clan) हैं। मध्य एशियाई क्षेत्र व कजाखस्तान में इन वंश/कुल समूहों का वहां के राजनीतिक व्यवहार पर गहरा प्रभाव है, और यह प्रभाव ना सिर्फ नीचे से ऊपर की ओर है जैसे अगर कोई आदमी जो परिवार (वंश) का सदस्य है तथा उसके लिए कर्त्तव्यपरायण है चुनाव लड़ रहा है तथा उसके साथ एक पार्टी का राजनीतिक प्रतिनिधि चुनाव लड़ रहा है तो पहले वाले को परिवार (वंश) का सदस्य होने की वजह से ज्यादा वरीयता दी जाएगी) याबल्कि ऊपर से नीचे है (जैसे; राष्ट्रपति और मंत्री कुछ लाभ व सहायताएं मुख्यतः कुछ वंशों/कुलों का परिवारों को देते हैं ताकि आगे चलकर वो उनकी राजनीतिक आकांक्षाओं की पूर्ति करें)**(Isaac Rico 2011)**।

सामाजिक विज्ञान की लगभग सारी अवधारणाएं या तो समाज में घटी घटनाओं के अनुभवों पर आधारित होती है या फिर उसके सामाजिक ढांचे या

व्यवस्था में बदलाव के अनुक्रमों पर आधारित होती हैं। ये थ्योरियां सामाजिक विकास का वर्णनात्मक या प्रतिनिधित्व आधारित एक विस्तृत विवरणात्मक अध्ययन होती हैं। बहुत सी ये अवधारणाएं आधुनिकतावाद से जुड़ी या प्रभावित होती है। जैसे स्कोट राडनिब्ज **(Scott Radnitz2011)** अपनी पुस्तक **''ईन्फोरमल पॉलिटिक्स एंड दी स्टेट''** में कहते हैं ''राज्य व समाज से संबंधित बहुत सी अवधारणाएं व्यक्त या अव्यक्त रूप से आधुनीकिकरण की अवधारणाओं (थ्योरी) पर आधारित होती है। इससे अलावा, यहां कोई एकमात्र अवधारणा भी नहीं है जो राज्य, पार्टी, समाज व राजनीतिक समूहों की राजनीति की व्यवहारिकता को दर्शित कर पाए। तो राजनीतिक व्यवहार को समझने के लिए औपचारिक संस्थानिक नीतियों के साथ–साथ अनौपचारिक संस्थाओं के अध्ययन को भी बराबर ध्यान से विवेचित करना चाहिए। इसलिए अगर कजाखस्तान जैसे वंश/समूह/कुल राजनीति से प्रभावित देश के लोकतांत्रिकरण के महत्व को समझने के लिए उसके राज्य संस्थाओं जैसे पार्लियामेंट, संविधान, ज्यूडीसरी, मिडिया आदि औपचारिक संस्थानों के साथ–साथ क्लैन (वंश समूह/Clan) के अनौपचारिक राजनैतिक व्यवहार को भी समझना अत्यावश्यक है। **(Scott Radnitz 2011)**

जैसा कि ऊपर कहा गया है कि आज की राज्य व समाज व्यवस्थाओं को समझने के लिए आधुनिकतावादी अवधारणाओं को प्रयोग अत्यन्तावश्यक है। इसी को देखते हुए राज्य–समाज संबंधों के अवधारणाकर्ता/सिद्धांतकार, सबसे महत्वपूर्ण आधुनीकिरण सिद्धांत के समर्थक सोचते हैं कि आधुनीकिकरण के बलों का समाज पर एकसारित/समान रूप से प्रभाव पड़ेगा और यह सभी वंश समूहों/कुल/सम्प्रदायों (उप–राष्ट्रीय पहचान) जैसे अनौपचारिक पहचानों के साथ, राजनीतिक व सामाजिक महत्ता में विलयी हो जाएंगे। कॉलिस व स्कात्ज दोनों के लिए वंश/कुल पहचान (Clan identity) और सदस्यता, एक आदिम वंशावली या वंशावली–विषयक सिद्धांत पर आधारित है जो कि अभिजात वर्ग के द्वारा बनाया व तोड़ा–मरोड़ा जा सकता है। वंश/कुल राजनीति (Clan Politics) पहचान का राजनीतिकरण

सोवियत युग में किया गया और बाद में सोवियत संघ के विघटन के बाद यह एक अभिगम तंत्र में रूप में उभरी जो कि पहले कम मात्रा में मांग व पूर्ति से संबंधित थी। कॉलिस व स्कात्ज कहते हैं कि जबकि राज्य एक औपचारिक संस्थानुगत बना है लेकिन अनौपचारिक संस्थाएं, राज्य चरित्र, सत्ता व शक्ति के अभिमानों के लिए उत्तोलक (सहारे) का काम करती हैं और वहीं विभिन्न वंशों कुलों में टकराव रोकने के लिए एक उनके हितों की पूर्ति हेतु अनुबंध बनाती है। ये विद्वान मानते हैं कि राज्य कार्यविधियां ही 'वंश पहचान' (Clan Identity) की राजनीति को आधार प्रदान करती हैं। कालिन्स व स्कात्ज, राज्य–समाज संबंधों को एक ऐसा दृष्टिकोण प्रदान करते हैं, जिसमें वंश/कुल का अनौपचारिक सामाजिक संगठन सत्ता को रूपांतरित बदल कर देता है, और अनौपचारिक संस्थानिगत वंशावली सत्ता एक के बाद एक; मजबूत, स्थायी और वंश राजनीति पहचान को बदल देती है।**(Collins and Schatz 2002, 2005)**

बहुत लंबे समय के संघर्ष के बाद कजाखस्तान व मध्य एशिया के देशों के समाजों में आधुनिक राज्य व लोकतांत्रिकरण का बदलाव 20वीं सदी के अंतिम दशक में सोवियत विघटन के बाद आया। यह राज्य प्रणाली जैसा कि कॉलिस व स्कात्ज बताते हैं कि वंश/कुल राजनीति (Clan Plitics) द्वारा पूर्णतः व्याप्त है। इसलिए ये मध्य एशियाई समाज दो विरोधाभाषी आकार प्रणालियों में फैला हुआ है। यद्यपि औपचारिक/विधिवत संस्थानिगत राज्य–प्रणाली बड़ी मेहनत व लगन से, लोकतांत्रिकरण व राष्ट्र–पहचान के नाम पर एक विस्तृत व वृहत समाज व्यवस्था का बनाने का अथक प्रयास कर रहा है। लेकिन अनौपचारिक संस्थानिगत वंश सत्ता समूह (*Clan regime*) ऐसे प्रयासों को वंश/कुल के गलत राजनीतिकरण के द्वारा नीचा दिखाने का प्रयास कर रहे हैं, जिसकी वजह से वंश/कुल समूह (Clan) बहुत ही तीव्र गति से पहचान की राजनीति का एक लगातार बड़ा कारण बने हुए हैं।

कॉलिस व स्कात्ज की सिद्धांत व्यवस्था या थ्योरी का मुख्य आधार सिद्धांत ज्यॉल एस0 मिगडाल (**Joel S. Migdal**) की **स्टेट इन सोसायटी** अवधारणा है। यह सिद्धांत 'आधुनिकीकरण' के सिद्धांत से कहीं दूर का व्याख्यान है, जो कि 'राज्य' को एक 'स्वचालित संगठन', जिसकी अपनी निश्चित सीमाएं होती है। किसी भी समाज में, चाहे इसके बीच या कोई ओर सामाजिक बल के बीच होती है। और यह राज्य ''अन्य सामाजिक बलों के बीच राज्य के आपसी मेलजोल व सहसंबंध पर, राज्य व अन्य समाज समूहों के बीच आपसी सहयोग को उजागर करने, साथ ही साथ राज्य की सीमाओं को ध्यान में रखकर'' पर बल देता है। (**Migdal 2001:250**) यह आधुनिकीकरण सिद्धांतों के सांख्यिकी दृष्टिकोण को नकारता है, जो कि यह समझते हैं कि राज्य एक स्वायत्त ईकाई है, जिसके का समाज को बिल्कुल प्रभावित नहीं करते हैं। अपेक्षाकृत, यह समझा जाता है कि कुछ समय में समाज व्यवस्थाएं, राज्य को भेदन व बदल सकती हैं परंतु राज्य भी शायद समाज को बदल देते हैं।

एस.एन. कुमिंग अपनी किताब, **'कजाखस्तान, पॉवर एंड दा ईलीट'** में कजाखस्तान के राष्ट्रीय राजनीतिक अभिजात और बढ़ते हुए संस्थानों तथा ऐतिहासिक वातावरण को अभिलक्षित करती है। लेखक ने तीन मुख्य अवधारणाएं प्रयोग की हैं। पहली, वो राजनीतिक अभिजात्यों (*Political Elite*) की बनावट या बनने की प्रक्रिया समझाना चाहती हैं तथा उस प्रक्रिया को जिसकी वजह से ये पदाधिकारी यहां तक पहुंचे हैं बताना चाहती हैं। दूसरा, वो अभिजात्य वर्ग की कार्यविधि को विश्लेषित करती हैं कि कैसे ये अभिजात्य कुलीन सत्ता में बने हुए हैं और कैसे यह एक आधिकारिक व वैधता को प्राप्त करता है। तीसरा वो अभिजात के व्यवहार को जांचते हैं। वह राजनीतिक अभिजात/कुलीन को व्यवस्था का एक अहम हिस्सा ही बताती है। वह कहतीहै कि कुलीन अपने विस्तृत ऐतिहासिक और संस्थानिकृत वातावरण से जिसने उसको संचालित किया है अलग नहीं कर सकते हैं। लेखक इस बात पर जोर देती है कि संस्थाएं, पहचाने और हित सभी अभीजात कुलीन

को सत्ता में बरकरार रखते हैं और उसको इन सब को प्रभावित करने के आधारभूत साधन उपलब्ध करवाती हैं। लेखक इस विचार से पांच मुख्य नीतिगत चुनौतियों को, जो कि कजाखस्तान स्वतंत्र शासन के सामने उभरी है मुख्य कारण मानती है। ये ही वहां के कुलीन वंश शासन व्यवस्था तंत्र को बनाते हैं साम्यवादी सोवियत संघ शासन के बाद इनका घनीभवन (सुदृढ़ीकरण) वहां कजाखस्तान की व्यवस्था में ज्यादा हुआ है। ये सोवियत के बाद कुल/वंश शासन सुदृढ़ीकरण, इनका घरेलू व अंतर्राष्ट्रीय अंतर्संबंध और पहचान की राजनीति (Clan Politics) का वृद्धिकरण व प्रबंधन है। लेखक आखिरी नीतिगत निर्माण क्षेत्र को बड़ा ही निर्णायक मानता है क्योंकि यह उन समूहों को सांस्कृतिक और वैधानिक, वैचारिक और सैद्धांतिक आधार क्षेत्र प्रदान करती है। लेखक यह देखने के लिए कि ये वंश समूह, एक दूसरे के ऊपर आधिपत्य जमाते हैं या नहीं यह देखने के लिए उनकी सामाजिक पृष्ठभूमि का भी अध्ययन करती है। इसमें वह पाती है कि कुलीन की सामाजिक पृष्ठभूमि, एक व्यक्तिगत की व्यावहारिकताकी भूमिका ज्यादा बताती है ना कि उसके समूह की व्यावहारिक वह इससे अधिक एक सामाजिक शक्ति के सामाजिकढांचे के व्यवहार को स्पष्ट करने में सक्षम है। इसके बावजूद (तथापि) वह कहता है कि यहां इनके बीच जनसांख्किीय विशेषता जैसे जातीयता ज्यादा मिलती है और इनको सबसे ऊपर होने की क्षमता भी अधिक दिखती है। वह इन पुरूष नीतिस्त्र के आधिपत्य पर आधारित कजाखों के समाज में यह सलाह देता है कि इस समूह/वंश व्यवस्था का सदस्य होना ही एक व्यक्तिगत को, राजनीतिक कुलीन होने का अच्छा मौका देता है बजाए एक गैर–कजाख व्यक्ति की तुलना में(**S.N. Cummings2005**)।

प्रो0 फूलबदन अपनी पुस्तक **'डायनामिक्स ऑफ पॉलिटिकल डवलेपमेंट इन सेंट्रल एशिया'** में मध्य एशियाई क्षेत्र की राजनीतिक विकास गतिकी को अध्ययन करने का प्रयास करते हैं, और इस विकास के जन्मस्थान या उद्भव स्थल, जो कि इसी क्षेत्र में मौजूद हैं जानने का प्रयास करते हैं। लेखक अक्तूबर, 1917 की क्रांति से पहले मध्य एशिया क्षेत्र में

प्रचलित सामाजिक विन्यास को भी स्पष्ट करता है और ऐतिहासिक टकराव की दौड़ में कैसे मध्य एशियाई गणतंत्र सोवियत संघ के आधिपत्य में आ गए, स्पष्ट करता है। वह यह भी बताता है कि कैसे कम्यूनिस्ट नेताओं ने उनको बदलकर समावेशिक नियोजित नीतियों से परिचित करवाया लेखक गोर्बाचोव की बदलाव की नीति और बदलाव जो पूर्व सोवियत संघ के समय में घटे का विस्तृत जिक्र करता है। लेखक बताता है कि कैसे गोर्बाचोव ने अपने पूववर्तियों से बिल्कुल अलग अंदाज, बड़ी ही सूझ–बूझ से लगातार अपनाया। यहां लेखक मध्य एशियाई पांचों गणतंत्रों के संविधानों का भी अच्छा वर्णन करता है। जो वह मध्य एशियाई गणतंत्रों द्वारा परिकल्पित राजनैतिक व्यवस्था का उनके संवैधानिक परिप्रेक्ष्य में वर्णन करता है। सभी गणतंत्रों के लोकतांत्रिक राजनीतिकरण प्रक्रिया को भी समझाया गया है।**(Phoolbadan 2001)**

कैलिन कॉलिस अपने लेख 'दा पॉलिटिकल रोल ऑफ क्लैन्स ईन सेंट्रल एशिया' में वंश/कुल समूह पहचानों (Clan Identities) की सामाजिक–राजनैतिक ताकत व औचित्य को सामाजिक स्तर पर विवेचन करती है। यह वो नृजाति राष्ट्रीयता और धार्मिक पहचानों और वंश/कुल समूह तंत्र की आंतरिक कार्य व्यवस्था, उनके सामाजिक–आर्थिक आधार, कार्य और सामूहिक पहचान, जो वो उपलब्ध करवाते के परिप्रेक्ष्य में करती हैं। लेखक कहती हैं कि वंश/कुल पहचानें (Clan Identities) आज भी लगातार, मध्य एशियाई गणतंत्रों में शक्तिशाली हैं। वंश राजनीति या पहचान, अनौपचारिक (गांव) और औपचारिक कोलखोज (Kolkhoz) सामाजिक आर्थिक ढांचों दोनों में काफी भीतर तक चिन्हित है। ये ना तो सोवियत के द्वारा कभी खत्म की गई और ना ही सोवियत प्रयासों जो कि गणतंत्र आधारित सजातीय राष्ट्रीय पहचानों के द्वारा समाविष्ट की गई।

शाहराम अकबारचादेह (Shahram Akbarzadeh) अपने लेख ''दा पॉलिटिकल शेप ऑफ सेंट्रल एशिया'' में सोवियत संघ के बाद बनी मध्य एशियाई राजनीति की व्याख्या करता है। वह सामाजिक उपागमों

के प्रभाव के अध्ययन के साथ शुरू करते हुए कहता है कि ये सामाजिक प्रभाव ही मध्य एशिया की भविष्य की राजनीति का आचरण निर्धारित कर सकते हैं। वह तब कुलीन समूहों की मानसिकता को जांचता है। उनके शासन के तरीके, बिल्कुल उनकी आजादी प्राप्ति के समय के उथल–पुथल राजनीति के हैं जो लगातार चले आ रहे हैं। वह अंत में परिणामस्वरूप कहता है कि इन मौजूदा राज्य व्यवस्थाओं को अपनी शासन तकनीकों का पुनरीक्षण करना चाहिए जो कि अब भी अपने पहले के आदिम प्रथाओं के समाज के समतुल्य बनी हुई हैं। वह वंश/कुल अधिकृत समाज व्यवस्था को, राज्य व्यवस्था ईकाई का एक अभिन्न अंग, इन मध्य एशियाई देशों के परिपेक्ष्य में मानता है जो कि इनके लोकतांत्रिकरण के प्रयासों में सबसे बड़ा अवरोधक भी है।**(S. Akbarzadeh1997:517-542)**

स्टीवन सबोल (Steven Sabol) अपनी किताव **'एशियन कोलोनाईजेशन एंड दी जेनेसिस ऑफ कजाख नेशनल कॉनसियशनस'** को दो भागों में व्याख्यायित करता है। पहला भाग कजाख राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान, साम्राज्यवादी परिपेक्ष्य/प्रसंग में 20वीं सदी के कजाख प्रबुद्ध वर्ग का जो कि उस समय सामाजिक–राजनीतिक वंशावली को तय करते थे, उनका ऐतिहासिक अवलोकन करता है। लेखक कजाख वंशावली/नृजातीयता और संस्कृति, रूसी साम्राज्यवाद/ उपनिवेशन तथा प्रशासन, और 19वीं और प्रारंभिक 20वीं सदी में बने कजाख प्रबुद्ध वर्ग की उत्पत्ति की भी जांच पड़ताल करता है। सबोल कहता है कि केवल इसी काल की समझ के आधार पर आधुनिकीरण के इतिहासकार यह समझ सकते हैं कि कजाख प्रबुद्ध वर्ग की क्या कहानी है तथा वे उस समय की सामुदायिक रीति–रिवाजों और संस्थाओं के लचीलेपन को सराहेंगे फिर चाहें वो वंशावली/कुल समूह या निष्क्रिय ही क्यों ना हो। दूसरे भाग लेखक सामाजिक, राजनीतिक और राष्ट्रीय विचारों, जो कि कजाख प्रबुद्ध बुद्धिजीवी वर्ग के तीन प्रभावी सदस्यों से संबंधित हैं को जांचता है ये तीन बुद्धिजीवी अलीखान बोकाईखानोव (Alikhan Bokeikhonov), अखमत बाईतुर्सनोव (Akhmet Baitursnov),

मुखामेदजान सेरालिन (Mukhamedzhan Seralin) हैं। वह यकीनन दावे के साथ कहता है कि बेशक बाकी कजाख प्रबुद्ध वर्ग का, नवजात अपरिपक्व कजाख सामाजिक–राजनीतिक आंदोलन पर कामचलाऊ महत्वपूर्ण प्रभाव रहा था लेकिन इन तीन व्यक्तियों ने सबसे अच्छे असंख्य विचारों को संधित बनाकर और अनेक अभियानों द्वारा कजाख राष्ट्र को जगाने का बीड़ा उठाया जो कि अब तक घातक राष्ट्रीय–अर्ध–निद्रा में था। इन तीनों ने राष्ट्रीय राजनीतिक परिदृश्य में कजाख राष्ट्रीयता व वंश समूह एकबद्धता से कजाख में राजनीतिक विचारों का संचार 1917 के सोवियत क्रांति से पहले ही कर दिया था।**(Steven Sabol 2003:1-9)**

बिटराइस एफ0 मांज (Beatric F. Manz) की किताब '**सेन्ट्रल एशिया इन हिस्टोरिकल प्रस्पेक्टिव**' के दूसरे भाग में सोवियत समय में ही नृजातीय व सजातीय संबंधों की राजनीति व विवरणों को समझाया गया है। डॉनाल्ड कारलाईजले (Donald Carlisle) वर्णित करता है कि 1924 का राष्ट्रीय परिसीमन जो कि स्थानीय व केंद्रीय राष्ट्रीय राजनीति से संबंधित था ने बताया कि और सलाह दी कि परिणाम, सजातीय वंशीय विचार की बजाए राजनीति के द्वारा ज्यादा निर्धारित होते हैं जिसमें की मध्य एशिया के राजनीतिज्ञ एक बड़ी भूमिका का निर्वहन करते हैं। मुरीयल अतकीन (Muriel Atkin) यह पता लगाता है कि सोवियत नीतियों व लगातार बने रहे पिछड़ेपन व अल्पविकास के कारण मध्य एशिया के वंशीय पहचानों (Clan) व संबंधों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा।**(Beatric F. Manz 1998:23-28)**

अन्ना मतवीवा **(Anna Matveeva)** अपने लेख **''डेमोक्रटाईजेशन, लेजिटिमेशी पॉलिटिकल चेंज इन सेंट्रल एशिया''** में उन घटकों का विश्लेषण करती हैं जो इन मध्य एशियाई देशों की राजनैतिक शासन व्यवस्थाओं व शासन सत्ताओं की स्थापना में प्रभावी व प्रमुख रहे तथा इन सत्ताओं या सरकारों ने स्वतंत्रता के बाद क्या–क्या चुनौतियों का

सामना किया। ये इस पर भी ध्यान देती हैं कि इन सरकारों की वैधता के श्रोत क्या हैं जो कि यहां के लोकतांत्रीकरण और राजनीतिक बदलाव को आधार प्रदान करते हैं। वो यहां की वंश/कुल समूह राजनीति को यहां कि लोकतांत्रीकरण की प्रक्रिया में एक अहम भूमिका में देखती हैं। वंश समूह राजनीति (Clan Politics) मध्य एशिया के पांच देशों को प्रमुख रूप से प्रभावित करती है तथा उनकी सरकारों की वैधता को समझते हुए राजनीति को लोकतांत्रिकरणीय प्रक्रिया में संचालन हेतु पूर्णतः सहयोगात्मक दृष्टिकोण रखती है। इसकी कुछ कठिनाईयां भी हैं।(**Anna Matveeva 1999: 23–44)**

दमित्री फरमैन (DMITRI FURMAN)अपने लेख**"The Regime of Kazakhastan"** में सोवियत संघ के विघटन के बाद बने कजाखस्तान गणतंत्र के राजनीतिक शासन–सत्ता के विकास व संचालन के पीछे का तार्किक विवरण देते हैं, वे कजाखिस्तान की शासन व्यवस्था की तुलना, रूस की शासन व्यवस्था से करने की कोशिश भी करते हैं। केवल सोवियत विघटन के बाद बनी सत्ता–शासन व्यवस्थाओं का तुलनात्मक अध्ययन करके ही समझा जा सकता है कि ऐसा क्या उनमें उत्पत्ति के क्रमिक विकास काल में निर्धारित था जो उन्हें अंतर्निहित या सहज रूप से ‘‘सोवियत के बाद का’’ बनाए रखने में सहायक रहा। लेखक कजाख शासन–पद्धति या हुकूमत को वंश/कुल राजनीति के तौर पर अन्वेषित भी करता है तथा वहां की इस सच्चाई को अलग–अलग परिप्रेक्ष्य में देखता है। वह उस व्यवस्था को सरकारी संस्थानों, चुनाव–प्रक्रियाओं, राजनीतिक व्यवहारों, आपसी प्रक्रियाओं के संचालन में अहम मानता है। **(Furman, D. 2005: 195-200)**

मार्था ब्रिल ऑल्कॉटअपनी किताब "**Kazakhastan:Unfulfilled Promise**" (कजाखस्तानःअनफुलफील्ड प्रोमिस) में बताती है कि कैसे कजाखस्तान राजनीति के नेता, कजाख लोगों के राष्ट्रीय मुद्दों को उठाने में

बड़े ही प्रभावी व उत्साही रहे हैं, और विकास उन्होंने इस तरह किया कि वो केवल अपनी खुद की आवश्यकताओं व जरूरतों को पूरा करने में लगे रहे। लेखक बताती है कि कजाखी सरकार ने शुरू में एक दशक तक देश की आर्थिक क्रियाओं पर पूर्णतः नियंत्रण रखा तथा उसको अपने कुछ प्रिय वंश/कुलीन (Clan) नेताओं के आश्रय पर छोड़ दिया। वो होर्डे कबीलाई वंश समूह व्यवस्था जो कि कजाखस्तान की सामाजिक–व्यवस्था का आधार है को भी व्याख्यायित करते हुए कहती है कि कैसे कजाख के इन वंश/कुल होर्डे समूहों के बीच झगड़ा या तनाव चलता है यह होर्डेया झूज (Zhuz) वंशावली के बीच अभिजात्य दुश्मनी का कारण बनता है। लेकिन वो इसको बदलाव के लिए एक प्रमुख शक्ति के रूप में छूट भी मानती हैं। ऑल्कॉट कहती हैं कि कैसे कजाखस्तान का भ्रष्ट व अस्त–व्यस्त बाजार व्यवस्था बदलाव, अब भी कुछ थोड़े से अभिजात्य कुलीनों के हाथ में है जो मुख्यतः होर्डे (Zhuz) व्यवस्था के कुलीन वंशावली से संबंधित है। पहले भी सोवियत संघ के राज में ये संसाधन मॉस्को में बैठे कुछ कुलीन लोगों के हाथ में ही जाते थे। अब ये कजाखस्तान में ही राष्ट्रपति नजरबॉयेव व उसके आस–पास वाले रिश्तेदारों जो कि उसके वंश/कुल समूह से संबंधित हैं संरक्षित हैं। लेखक कहती है कि कजाख की एक बहुत बड़ी संख्या 2001 तक आते–आते पहले के अपने सोवियत काल शासन के स्तर से भी कम स्तर पर जीवन यापन कर रही थी। **(Martha Brill Olcott 2005:585-590)**

पॉल क्यूबिक (Paul Kubick) अपने लेख "**Autharitarianism in Central Asia: Curse and Cure?**" में सोवियत के बाद स्वतंत्र मध्य एशियाई देशों की शासन व्यवस्था व विकास का विवरण देता है। लेखक कहता है कि राष्ट्रपति शासन आंदोलन के द्वारा यह कहा गया कि ''सत्ता–शक्ति के खालीपन'' को जरूर भरा जाना चाहिए और एक निर्धारणात्मक कार्यात्मक नेतृत्व ही इन देशों की ''सही रास्ते'' पर आगे बढ़ा सकता है। इन देशों के मुख्यतः कजाखस्तान देश के लोकतांत्रिकरण के प्रथम दस वर्षों में बड़े ही सीमित अनुभव रहे हैं जिसमें देखा गया है कि वंश

समूह राजनीति व झगड़े तथा गिरती अर्थव्यवस्था ने लोकतांत्रीकरण की प्रक्रिया को धीमा कर दिया। निरंकुशता की सबसे कृपालु या हितकारी विधि या स्वरूप के साथ भी हमेशा अनेक परेशानियां बंधी/संयोजित रहती हैं। एक लोकतंत्रीय व्यवस्था होने तथा माने जाने के बावजूद, एक संवैधानिक व्यवस्था होने के साथ भी, कजाखस्तान के संस्थानों के बारे में परिलक्षित व व्याख्यायित साहित्य/लेखन को देखने के बाद पता चलता है कि कजाखस्तान में लोकतंत्र की तरफ मुड़ने या संचालित होने के बाद भी सच में क्या बदला। लोकतंत्र में पारगमन या की तरफ प्रस्थान के असल में मापन के लिए आसान सुविधा नहीं है और लेाकतंत्र को, अपने आप में परिभाषित करना भी मुश्किल काम है। कजाखस्तान जैसे वंश/कुल सम्प्रदाय राजनीति (Clan Politics) से प्रभावित लोकतांत्रीय शासन व्यवस्था में वंशावली समूह सामाजिक व्यवस्था पर आधारित संस्थानों व संरचनाओं के आधार पर बनी लोकतांत्रीकरण की प्रक्रिया को समझने के लिए अतिरिक्त प्रयासों की जरूरत होगी। यहां कुछ खास संकेतक/सूचक हैं जो कि पहले के राजनीतिज्ञों और विद्वानों के काम के आधार पर निर्धारित हैं तथा ये यह जानने में सहायक है कि कोई राष्ट्र क्या कोई देश लोकतांत्रीकरण की दिशा में आगे बढ़ रहा है या नहीं। दो ऐसे विद्वान (Scholors) हैं राबर्ट डहल व सैम्युल हरिगंटन। **(P. Kubicek 1998,*19*(1): 29-43)**

अपनी पुस्तक "**Polyarchy**" (पॉलियारकी) में **राबर्ट डहल** में Poly(Manly) (बहु) तथा Archy(Rule) (नियम/शासन) का एक विस्तृत वर्णन करते हुए बताया है कि वो "Polyarchy" शब्द का इस्तेमाल लोकतंत्र Domocracy के विरोध स्वरूप करते हैं। उनके विरोध का मुख्य कारण यह है कि वो 'सच्ची' True और 'आदर्श' Ideal लोकतंत्र Demoracy की थ्योरियों या सिद्धांतों और आज के समय के विभिन्न तरह के लोकतंत्रों के बीच एक बहुत बड़ा विरोधाभास मानते हैं। डहल के अनुसार इसमें सत्ता का स्पष्ट नियंत्रण नहीं होता है। इसमें सत्ता–शक्ति बहुत से

लोगों/अभिकर्ताओं में निहित होती है और ये ना तो 'तानाशाही' होती है और ना ही 'लोकतंत्र'। जिस प्रकार कजाख्तान में वंश समुहों में तथा औपचारिक सरकारी संस्थानों के बीच सत्ता शक्ति का नियंत्रण है। **(Robert Dahl 1973,1991)**

इसी प्रकार **सैमुअल हटिग्टंन** अपने कार्य **'The Third Wave: Democrdatization in the Late Twentieth Century'** में डहल के लोकतंत्र के प्रारूप वर्गीकरण के साथ शुरू करता है तथा इसको आगे बढ़ाते हुए जो कि उसको वह लोकतांत्रीकरणकी 20वीं सदी की धाराएं कहता है। वह मानता है कि डहल वास्तव में प्रतिद्वंद्वी/प्रतिस्पर्धापूर्ण चुनावी व्यवस्था में विश्वास करता है। डहल कहता है कि ''लोकतंत्र की केन्द्रीय प्रणाली, लोगों के द्वारा प्रतिस्पर्धात्मक चुनाव में अपने नेताओं का चुना जाना है।'' डहल की ही तरह हैटिग्टन किसी देश को तब लोकतंत्रीय वर्गीकृत करता या मानता है जब वह देश प्रतिस्पर्धात्मक चुनाव में उतना ही खुलापन रखता है जैसा कि डहल लोकतंत्र के लिए महत्वपूर्ण मानता है। इसलिए जब हम यहां वंश समूह राजनीति (Clan Politics) की बात करते हैं तो उसके माध्यम से लोकतांत्रीकरण के आधारभूत सिद्धांतों के आधार पर कजाखस्तान के लोकतांत्रीकरण का वर्णन करना भी बहुत ही अहम साबित होगा। इसमें वहां की सरकारों के व्यवहार, राजनीतिक पार्टियों के लोकतांत्रीकरण व संस्थानों के एक खुली सोच के बहुत संचालन तथा वंश समूहों के राजनैतिक व्यवहार को हमेशा प्रमुख रखते हुए लोकतंत्र के संस्थानों का बृहत् अध्ययन जरूरी है। **(S. P. Huntington 1993)**

अध्याय– द्वितीय

कजाखस्तानी कबीला/वंश समूह और राजनैतिक संस्थाओं का लोकतांत्रिकरण

दूसरे अध्याय में कजाखस्तान वंश/कबीला राजनीति व उनके उदय एवं कार्यविधि को केन्द्र में रखकर अध्ययन के केन्द्र में किया गया है। इसमें कजाखस्तान की इन गैर–औपचारिक अवैधानिक संस्थाओं का (informal institutions) औपचारिक व वैधानिक संस्थाओं (formal institutions) के निर्माण में क्या प्रभाव रहा है, का विशेष परिपेक्ष्य में अध्ययन किया गया है। इसमें प्रमुख तौर पर वंश / कबीला समूहों के सांखिकीय पहलू पर गौर किया गया है। इस अध्याय में कजाखिस्तानी सरकारी तंत्र में इनकी विशेष स्तर की भागीदारी को भी अध्यायय का विषय बनाया गया है। इसमें राजनैतिक संस्थाओं के लोकतांत्रीकरण की प्रक्रिया को विशेष तौर पर देखा गया है।

क. कबीला/वंश समूहों का जन्म और कार्यप्रणाली (Origin & function of Clan) :–

यह वृहत स्तर पर जाना गया है कि वंश–आधारित घूमंतू/खानाबदोश कजाखिस्तानी समाज, मुख्यतः सूचनाओं के आदान–प्रदान व सम्पति के संरचनात्मक प्रगति के सिद्धांत पर टिका हुआ है। कजाखिस्तान का इतिहास विभिन्न पहेलियों में उलझा हुआ एक पेचीदा व रहस्यमय इतिहास है। इन में से एक कजाख झूज (Juhzs) या कबीला से संबंधित है। जूझ (Zhus) एक बहुसंख्यक व्यक्ति समूह है जो कि कजाखिस्तान की जनसंख्या का प्रमुख सजातीय (प्रजातीय) संरचनात्मक संगठन है। यह कजाखिस्तान की कुल जनसंख्या का लगभग 70 से 80 प्रतिशत भाग है

जिसमें तीन प्रमुख क्रमागत श्रेणियां है। कजाख राष्ट्र का निर्माण इसी सजातीय, वंशावली व्यक्ति समूह के अथक प्रयासों से हुआ है। झूज (Zuzhs) का शाब्दिक अर्थ सौ (Hundred) होता है जिसमें मुख्यतः तीन श्रेणियां होती है। (i) उच्च जूझ (Higher Zhuzs) (ii) मध्य जूझ (Middle Zhuzs) तथा (iii) निम्न जूझ (Lower Zhus) इनको हॉरडे (Horde) नाम से भी जाना जाता है। वैसे हम जानते हैं कि जूझ (Zhuzs) शब्द की कोई शाब्दिक आधार संरचना स्पष्ट नहीं है लेकिन जूझ को सैकड़ों कबीलाई/घूमंतू समूहों (Clans) का एक सामूहिक सांगठनिक संकुल मानते हैं।

कजाखी राज्य–पद की सृजन संयोजन की शुरूआत 15वीं एवं 16वीं सदी में प्रारंभ हुई। इस समय तक कजाखी केवल राजनीतिक रूप से गौण सांगठनिक संरचनाएं थे। कजाखी खनैत (Khanate) कजाखी जनमानस एक दूसरे के ही पर्यायवाची हैं, जो कि कजाखी विभिन्न कबीला/वंश (Clan) समूहों व तूर्की के जनजातीय समूहों का एक संगठित लोगों का संघ थे। कजाख संघ जो कि दझानेबेक (Dzhanibek) और केरेई (Kerei) (1465-1466)**(History of Kuzkhistan; Almaty; Dauir 1993: 148)** द्वारा बनाया गया था, उसमें भविष्य में आगे बढ़ने व निरंतर शासन करने की असीत संभावनाएं थी। इस जनजातीय/कबीलाई एकता ने बाहरी आक्रमण से बचने के लिए दुश्मन से रक्षा हेतु अपनी सैन्य क्षमता को बढ़ाना निरंतर जारी रखा। इस कजाखी Khanate संघ ने पहले पहल आपसी जनजातीय/कबीलाई (Clan Unity) की वजह से बहुत–सी आर्थिक व शक्ति वर्धनीय सफलताओं को अर्जित किया।

ओरूस खान (Orus-Khan), जो दझाची (Dzhuchi) की पांचवी संतान था, को कजाख–खान श्रेणी को प्रारंभ करने वाला माना जाता है। चेंगीसीदस (Chengisids) जो कि झूज (Zhuzs/Hordes) के

विभिन्न समूह विभाजन के बाहर से था, टोर(Tore) अभिजात माना जाता था। इतिहासकार कजाख समूह को (Batu-Khan) बाटू–खान **(ए. काजीमझोनोव और के. टेरिबल, 'दा पॉलिटिकल ट्रेडिशन ऑफ स्टेपी' नेशनलीटन पेपर्स 26(3),1998:462)** के समय से ही प्रमुख रूप से तीन श्रेणियों में विभाजित करते हैं। उसके पिता के क्षेत्र (Ulus) का दक्षिण–पूर्वी भाग दझीची (Dzhuchi) के बड़े बेटे ओरडा–अझेन (Orda-Ezhen) के पास था, जबकि पश्चिमी भू–भाग तोकाई–टेमीर (Tokai-Temir) के कब्जे में था। और उसके बीच का फैला हुआ भाग बाटू (Batu) और शेईबानी (Sheibani) के आधिपत्य में था। दझीची के इस उलूस (Dzhuchi Ulus) विन्यास के स्वरूपानुसार झूज (Zhues) तीन हिस्सों में बंटे हुए थे– पहला (Ulu) या उच्च (Elder) झूज, दूसरा ओरटा (Orta Zhuz) झूज या मध्यम झूज (Middle Zhuz) तथा तीसरा किशी झूज (Kishi Zhuz) या सबसे छोटा (Younger) झूज।

इसलिए खैनेट काल (Khanate Period 15th-16th Century) में कजाखी सामाजिक संरचना मुख्यतः दो प्रमुख सिद्धांतों पर आधारित थी। इनमें से एक यह था कि जो भी कजाखी कबीला या जनजाति (Clan and tribe) उनके इस कजाखी, सामाजिक ढांच में प्रवेश करती थी तो उनको अपने आप को इसकी तीन श्रेणी संरचना आकार जैसे उलू झूज (Ulu Zhuz), ओरटा झूज (Orta Zhuz) और किशी झूज (Kishi) में शामिल व संगठित करना अनिवार्य था।

दूसरा आधारभूत सिद्धांत कजाख खानैत के अंदर ही सार्वजनिक संरचना (Public Structure) में कजाखी समाज का दो भागों में विभाजन था जो कि उसके दो आधारभूत भाग थे। ये अक–सूयेक (ak-suyek /white bone)और कारा–सूयेक (Kara-Suyyek/black bone) थे जो कि आर्थिक, राजनैतिक व कानूनी रूप से बहुत ज्यादा पृथक नहीं थे।

अक–सूयेक (Ak-Suyek), चंगेज खान के शासन व वंशज खानों का एक समूह था जिसे सुल्तान या सईद्स (Sayydis) और होदजास (Hodjas) भी कहते थे। बाकी सब समाज के अन्य समुदाय झुंड या गुट, दूसरे कारा–सूयेक (Kara-Suyek) लोगों द्वारा सरंचित थे। इन दोनों जन–समूहों को बांटने का एक सुदृढ़ सिद्धांत था जो कि बड़ी कठोरता से लागू किया जाता था।

अक सूयेक (White bone) शासन की बजाए, कारा सूयेक (Blak Bone) शासन व्यवस्था, विभिन्न कबीलों व जनजातीय समूहों (Clans and tribes) में विभक्त थी जो कि उसी कारा–सूयेक (White bone) की उप–समूह या समितियां थी। फलस्वरूप कारा सूयेक (blak bone) समुदाय के किसी भी प्रतिनिधि की स्थिति, चाहे वह कबीले (Clan) वंशानुगत शासक और या किसी सामान्य घुमंतू पशुपालक/चरवाहा हो, उस कबीले की विशेषाधिकार क्रमानुगत हैसियत/स्थिति के हिसाब से निर्धारित होती थी।

कजाख लोगों का यह त्रिकोणीय विभाजन, खुद कजाखिस्तान की स्टेपी के भूगोलिक स्थिति के कारण था। जब 16वीं सदी में खुद कजाख लोगों का राज था तब भी यह क्षेत्रतीन प्राकृतिक भू–क्षेत्रों (Geographic regions) में बंटा हुआ था तथा सभी में सर्दी व गर्मी की चारागाहें मौजूद थीं।

16वीं सदी के आधे तक हक नजार (1538-80) **(वास्तॉव. वी.वी. और मुखनोव एम.एस.,Alma-Ata; 1978:20)** के शासन के दौरान कजाखी लोगों ने अपने आप को, एक सांगठनिक और समूहित रूप देते हुए तीन भागों में बांटा, जिससे झूज (Zhuz) का तीन स्तरीय बंटवारा हुआ था। यह विचार की झूज (a) को अपने 'पारम्परिक इतिहास' को लगातार बचाकर रखने व उसको निरंतर आगे बढ़ाने के लिए तीन भागों में बंटने के बाद भी एक पहचान की लड़ाई में हमेशा साथ रहना, इनको हमेशा एक साथ बांधे

रहा। इन तीनों झूज (Zhues) समूहों में अनेक बार संघर्ष भी होता रहता था। सत्ता के केंद्रीयता को हथियाने हेतु ये झूज (Horde) कबीले, अपनी जनजातियता की पहचान को सर्वोपरी रखते हुए। निरंतर संघर्ष करते रहते थे। ये कजाखी झूज (Zhus) हालांकि विभिन्न कबीला, जनजाती संघों का एक सम्मेलन समिति थे परंतु सामान्यतः ये अपने आचार–विचार व संस्कृति में बहुत अलग–अलग मत–मतांतर को मानने वाले थे। ये किसी भी सामान्य समिति वंशानुगता में सहभागी नहीं थे। ये सिर्फ बाहरी आक्रमण से रक्षा हेतु कुछ लोगों का जनजातीय समझौता समूह थे जो कि सैन्य सहयोग के तौर पर एक–दूसरे से जुड़े हुए थे। ये तुर्की व मंगोल जनजातियों के दौर में बनाए गए सैन्य संगठनात्मक चरित्र को लिए कबीलाई संगठन थे। यह संभावित है कि ये कजाखी होर्डे या झूज (Zhus) मुख्य रूप से सैन सैनिकों उद्देश्यों के लिए संगठित हुए थे जो कि कजाख भू–भाग को उस विकट खतरे के दौर में रक्षा करने के लिए बने थे। **(Eyubin, v.p., Alma-Ata, 1983 :143)**

हालांकि तीन हॉरडे/झूज (Horde/Zhuz) में बंटे होने के बाद भी एक समान लोग थे। उनकी एक सम्मिलित व सामूहिक भाषा, संस्कृति व अर्थ–व्यवस्था थी। 16वीं सदी के प्रारंभ में यह अल्पकालिक, भूमि के अधिक से अधिक दोहन पर निर्भर थी जो कि हर एक कबीले व समूह की राज्य निष्ठा व वफादारी तथा एक दूसरे के प्रति विश्वास पर आधारित थी। इसी ने हर एक कबीले (a) का जनजातियों को एक साथ बांधकर हर एक हॉर्डे/झूज (a) व्यवस्था का निर्माण किया। फिर 17वीं सदी में जैसे–जैसे कजाख शासन ने अपना प्रभुत्व बढ़ाना शुरू किया तथा अपनी सीमाओं का विस्तार किया तो ये झूज/हॉर्डे (a) आहिस्ता–आहिस्ता तीन व्यवस्थित संघों या संगठनों में, कारणवश व अच्छे से परिभाषित तरीके से एक सुव्यवस्थित व सुदृढ़ भूखंड/ इलाकों में स्थापित हो गए। **(ईयूदिन वी.पी. Alma Ata-1903 :143, असफेन्डीयारोव एस.डी.,M.-Alma-Ata, 1935)**

इस तरह विभिन्न काल निष्पादनों से होता हुआ झूज/हॉर्डे (Clan System) का यह कबीलाई व्यवस्था का दौर 20वीं सदी में जा पहुंचा जहां रूसी जार शासन ने कजाख भूमि पर अपना आधिपत्य जमा लिया था। इस काल में झूज व्यवस्था का तीन स्तरीय विभेदन बहुत ही स्पष्ट व कठोर बना रहा। निम्न, मध्यम, उच्च झूज व्यवस्था में एक समानान्तर दूरी हमेशा पहले की तरह सफेद खून (White bone) व काला खून (Black Bone) तथा इन दोनों का मध्य एक (Blue Blood) नीला खून जो कि शासन व्यवस्था में अहम भागीदार था बना रहा। यद्यपि, एशियन शासन व्यवस्था के दौरान कजाखिस्तान के कबीलाई (Clan History) समाज के इतिहास में दो महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। ये दोनों जार के शासन के दौरान तथा सोवियत संघ के उदय के बाद हुए। जार के शासन के दौरान, कजाखिस्तानी कुलीन कबीलाई तंत्र / अभिजात वर्ग जो कि रूसीकरण की नीति से प्रभावित था के द्वारा कुछ आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक व प्रशासनिक बदलाव किए गए। जार के शासन व सोवियत संघ के शासन का तुलनात्मक अध्ययन बताता है कि जार के शासन में कजाख समाज व्यवस्था में इतना प्रभावशील बदलाव नहीं हुआ जितना कि सोवियत शासन के दौरान कजाखी कबिलाई समाज में आधारभूत बदलाव हुआ। सोवियत शासन के दौरान कबीलाई या जनजाती समूह की जीवन चर्चा या संस्कृति बहुत तीव्र गति से विकृत/खंडित हुई। इसलिए सोवियत शासन के दौरान पुरानी कजाख पहचान जो कि विभिन्न कबीलाई व घूमंतू जनजातीय समूहों पर आधारित थी सबसे ज्यादा प्रभावित हुई तथा यह नए रूप आधुनिक रूप से कुछ अपनी पुरानी पहचानों के साथ 20वीं सदी के प्रारंभ में राजनीतिक परिदृश्य में अवतरित हुई। यहां तक कि आधुनिक कजाखिस्तान का यह सीमांकन भी इसी काल में स्पष्ट रूप से अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में दृष्टिमान हुआ। इसमें अब कबीलाई राजनीति (Clan Polities), राजनीति के आधुनिक प्रतिमानों के साथ, सोवितय संघ की विभिन्न नीतियों के कारण निरंतर बदलती रही। विभिन्न कजाखी सामाजिक

समूहों व वंश/कबीला/समूह (Clan) का स्वरूप भी नए तरीके से बदला व उनकी कार्यप्रणाली में भी आमूलचूल परिवर्तन हुए।

सोवियत युग से पहले के काल में समूह तंत्र परंपरागत पारिवारिक रक्त संबंधों पर आधारित नियमों–बंधनों से बना था। राजनीतिक व आर्थिक सामुहिक कार्य संबंध व इच्छाएं, कबीलाई व समूह वंश पारस्परिकता के आधार पर उभर कर सामने आई। वंश/बंश समूह जुड़ाव सदियों को विरासत के तौर पर कबीलाई/खानाबदोश यायावार जिंदगी दिनचर्या के आधार पर सामने आई जिसमें व्यक्तिगत निर्णयों व जरूरतों को उस स्तर तक शक्ति संग्रहकता का सामूहिक अनुक्रम बना दिया गया, जब तक एक समूह रूप में सबसे हित एक साथ संकलित ना हो जाए। इसी समूह वंशवादी या कबीलाई (Clan) जुड़ाव की वजह से मध्य एशिया व कजाखिस्तान की राजनीति ने ऐसा अनौपचारिक चरित्र धारण कर लिया जिसमें की इसकी वजह से वहां कि औपचारिक शासन व्यवस्था व संस्थाओं का बहुत ही कम महत्व रह गया। बल्कि लोग इन्हीं अनौपचारिक तंत्रों के द्वारा अपना व अपनी समस्याओं का समाधान ढूंढ़ने लगे| **(Dukenbeav and Hansen, 2003: 24)** ये अनौपचारिक गैर–नियमित समूह तंत्र (Informal Networks) जो कि आपसी आदान–प्रदान व उपहार देने की भावना पर आधारित था, वह मुख्यतः जीवन के प्रमुख क्षेत्रों–जीजिविषा, सुरक्षा और सामाजिक समससात्मक क्रमचक्रण का अह्म हिस्सा था। **(Kuihnast and Dudwick 2004:8)**

हालांकि समूह/वंश जुड़ाव (Clan affiliation) मध्य एशिया व कजाखिस्तान की सामाजिक संरचना का प्रमुख भाग थे जिसमें वहां समाज व राजनीति एक साथ जुड़े हुए थे, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि आज की कजाखिस्तानी व मध्य एशियाई सामाजिकताएं अब भी पूर्णतः इसके जाल में फंसी हुई है और पारम्परिकता के उस ऐतिहासिक संगठन नियम को अब भी अक्षरशः मानती है। इस बात को समझाते हुए कि क्यों उस परम्परागत

सम सामाजिकता की कुछ कार्यप्रणालियां व तंत्र आज भी कजाखी व मध्य एशियाई समाजों में विद्यमान है, ब्रूबेकर व कूपर मानते हैं कि ''हमें यह देखना चाहिए कि जिस राजनीतिक तंत्र में हम उसके नियमों व कार्यप्रणालियों की बात कर रहे हैं जिसकी वजह से हम उसे एक 'राजनीतिक कपोल कथा/परिकथा कहते हैं व उसको 'राष्ट्र' और 'प्रजातीय समूह', 'कुल वंश' व सड़ी हुई 'पहचान' के साथ जोड़ते हैं, और एक निश्चित धारणा बनाते हैं, वह किसी खास समय उसकी कटु सच्चाई रही है।''**(ब्रूबेकर व कूपर 2000:5)**

जैसा कि हम जानते हैं 19वीं सदी के मध्य तक कजाखिस्तान जार के रूसी शासन प्रभाव में पूर्णतः आ चुका था, यह प्रभाव सन् 1730 के दौरान औपचारिक रूप से शुरू हो चुका था जो 19वीं सदी के मध्य तक कजाखिस्तान को पूर्णतः जार रूसी साम्राज्य का हिस्सा बना चुका था। यह पूरा चरण बहुत ही जटील व विवादपूर्ण था। इसके लिए 130 वर्ष खर्च किए गए कि कैसे कजाखिस्तान रूसी साम्राज्य की विदेश नीति व घरेलू नीति के राजनैतिक सरंक्षण में आ जाए।

यह ध्यान देने योग्य बात है कि छोटा या निम्न होर्डे/झूज (Little Harde and Younger Harde) व कुछ क्षेत्र मध्य झूज/होर्ड (Middle Harde/Zhuz) जो कि कजाखिस्तान के पश्चिमी केन्द्रीय व उत्तरी पूर्वी हिस्से थे, रूसीयों द्वारा शांतिपूर्ण तरीके से हथियाए गए। यह 18वीं सदी के अंत व 19वीं सदी के शुरूआत में मुमकिन हुआ। इसके अलावा दक्षिणी व दक्षिणी–पूर्वी क्षेत्रों, जो कि मुख्यतः महान झूज (Great an Elder Zhuz) का हिस्सा थे, उनको जार के शासन द्वारा सैन्य–बल इस्तेमाल करके 1850 और 1860 में रूसी साम्राज्य में शामिल किया गया। रूसी जार ने रूसी साम्राज्य में अपना नया राजनीतिक व कानूनी–व्यवस्थाक राज स्थापित किया। इसके लिए 1865 में वही एक स्टेपी–कमीशन**("The Regime in Kazakhstan", Furman, 224)** के नेतृत्व में एक आंतरिक मामलों का मंत्रालय व युद्ध मंत्रालय स्थापित किया गया। इन सब उपायों को

1890–1900 तक लगातार विभिन्न कजाखी क्षेत्रों में कठोरता से लागू किया गया जिससे कजाखिस्तान की कबीलाई/वंश (Clan System) की व्यवस्था बिल्कुल चरमरा गई। अब वहां की शासन व्यवस्था का सीधा संबंध रूसी जार की नीतियों पर निर्भर था जिससे कजाखी वंश या होर्डे (Zhus) सामाजिक व राजनीतिक संचालन व्यवस्था पर गहरा असर पड़ा। अब कजाखी जमीन को रूसी साम्राज्य की सम्पदा घोषित कर दिया गया। सब निर्णय सीधे जार के तत्वाधान में लिए जाने लगे जिससे (Clan) या जूझ व्यवस्था को असीम क्षति हुई। यह रूसी जारशाही लगभग 1917 के रूसी क्रांति के दौर तक चलती रही फिर उसके बाद एक नया दौर शुरू हुआ जिसे सोवियत रूस या संघ का दौर कहा जाता है जिसमें नए कम्यूनिस्ट शासन ने (Clan) या इन जैसी समूह वंशावली या कबीलाई व्यवस्थाओं को और अधिक क्षति पहुंचाई। 1917 के क्रांति दौर के बाद साम्यवादी सरकारों ने विभिन्न कार्यक्रमों जैसे लेनिन द्वारा लाई (NEP New Economical Policy) **("The Regime in Kazakhstan", Furman, 225)** तथा स्टालिन के द्वारा किए गए रूसीकरण के दौर तथा ब्रझनेव द्वारा अपनाई गई वर्जिन लैंड (VirginLand) **(Ministry of Kazakstan,Almaty:Dauir 1993:112-148)** नीतियों ने वंश/कबीलाई सामाजिक संरचना को बहुत आघात पहुंचाया गया। अब समाजवाद पर आधारित अनेक नीतियों ने कजाखिस्तानी समाज संरचना को एक नए दौर में पहुंचा दिया। अब विभिन्न झूज (Clan) व समूह (Zhuz) होर्डे आदि छोटे–छोटे भागों में बट गए तथा उनका मुख्य कार्य रूसी साम्यवादी शासन को चलाने के लिए काम आने वाले उपक्रम बनकर रह गए। साथ ही साथ अलास आर्गे (Alas Orda) जैसे राजनैतिक सांगठनिक समूह भी इस समूह (Clan) आधारित व्यवस्था को नए तरीके से प्रबंधित करने का प्रयास करने लगे। 1980 के दौर तक इन समूहों/कबीलों (Clan) को थोड़ी–थोड़ी राजनैतिक पहचान मिलनी शुरू हो चुकी थी जिसके बल पर वो एक अलग 'कजाखी' झूज (Clan) आधारित

समाज व राज्य व्यवस्था को बनाने का प्रयास करने लगे। 20 वीं सदी में 80 के दशक के अंत आते–आते ये समाज समूह (Clan) सुदृढ़ तौर पर अपने अधिकारों की मांग करने लगे तथा इसमें 1905 के बाद गोर्बायोव की ग्लास्तोस्त व प्रस्त्रोइका जैसी नीतियों की वजह से अब इन कबीलाई/वंश पहचानों को एक अलग 'कजाख' राष्ट्र–राज्य के निर्माण का सपना साकार होता दिखाई देने लगा। तथा कालांतर में 1990 में सोवियत संघ का विघटन हो गया और वह 15 अलग–अलग भागों में विभाजित हो गया। इसमें मध्य–एशियाई क्षेत्र में 5 नए राष्ट्र–राज्यों का प्रादुभाव हुआ जिसमें कजाखिस्तान सबसे बड़े भू–क्षेत्र के रूप में अपनी कबीलाई व वंश समूह की परम्परा (Clan Culture) के साथ एक नया स्वतंत्रता प्राप्त लोकतांत्रिक व्यवस्था वाला गणतंत्र बना।

ख. कजाख झूज/ Zhuz की जनसंख्या व भौगोलिक स्थिति :–

कजाखिस्तान 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद स्वतंत्र हुआ एक गणतांत्रिक लोकतंत्र बना, जिसका सामाजिक ढांचा वंशावली/समूह (Clan Structure) व्यवस्था पर आधारित था। इस स्वतंत्रता की सभी शोधकर्ता या विचारक एक सोवियत शासन के द्वारा की गई सबसे बड़ी भूल मानते थे, क्योंकि यह ना तो इन गणतंत्रों व मुख्यतः कजाखिस्तान की किसी भी मांग पर आधारित नेतृत्व क्षमता द्वारा लड़कर प्राप्त स्वतंत्रता थी और ना ही इसके लिए कोई स्वतंत्रता संघर्ष किया गया था। यह सोवियत शासन की ईमारत के धराशायी हो जाने के कारण हुआ जो मास्को की अपनी राजनैतिक व आर्थिक कमजोरियों के कारण संभव हो पाया। **(Sally Cumming 2002 :1)** इसलिए कजाखिस्तान को स्वतंत्रता की तरफ फेका गया जोकि उस की इच्छा के स्वरूप नहीं था। **(Olcott 1992)**

आधुनिक कजाखिस्तान में झूज की स्थति जानने के लिए सबसे पहले उनका जनसंख्या आंकड़ा व उनके निवास क्षेत्र का पता होना

अत्यावश्यक है। हम जानते हैं परंपरागत तौर पर भूगौलिक क्षेत्र के आधार पर वंश भाषा के आधार पर तथा अन्य राजनीतिक व सामाजिक परिमानों पर झूज (Zhuz) को मुख्यतः तीन भागों में बांटा जाता था। आधुनिक काल में स्वतंत्र लोकतांत्रिक कजाखस्तान गणतंत्र में भी झूज (Zhuz/Hard) तीन ही श्रेणियों में विभाजित हैं जो कि विभिन्न हिस्सों में भिन्न–भिन्न उप–श्रेणियों में भी बंटे है। इस समूह/वंश (Clan) व्यवस्था के कजाखी कर्ता (Zhuz) झूज वंश समुदाय (Clan Identity) पहचान को निम्न तरीके से जनसंख्या व क्षेत्र के तौर पर वितरित किया जाता हैः–

(i) वंशिक (Geonological) वर्गीकरण में सूचनाओं के प्रसार जो किए पीढ़ी दर पीढ़ी एक समाज से दूसरे समाज में प्रसारित हैं को प्रमुख कारण माना गया है झूज के होने का तथा सम्पत्ति भी इसी का एक भाग है। **(N.E. Masanov, Kochevaia Tsivilizatsila Kazakhor, 2000:4-8)**

(ii) यहां कम प्रसिद्ध लेकिन अच्छे तर्क आधारित विचार है। जिसे (A. Znev/lU) (ल्यू) ने दिया जिसमें वह एक तथाकथिय तीन अक्षीय कजाख समाज की बात करता है, जो कि झूज व्यवस्था के लिए सटीक है। यह है एक बायां पार्श्वभाग (left flank) एक केन्द्र (Centre) तथा आखिरी दायां पार्श्वभाग (Right Flank) है। **(U.A. Zuev, Kazakhstan V epokhu feodalizma, Alma-Ata, 1981: 63-78)**

(iii) लेकिन यहां तीसरा तथ्यआधारित विचार है, एस.डी.एसॅफेनडीवरोव (S.D.) का, उसका समर्थन किया है एम.पी. बईआतकिन (M.P. Viatkin) और वी.पी. ईयूदीन (V.P. Indin) ने जिमसें उन्होंने कजाख झूज की उत्पत्ति का कारण भौगोलिक क्षेत्र की स्थितियों को माना है। यह कजाखिस्तान के तीन प्राकृतिक हिस्सों में बंटे होने के कारण है। ये क्षेत्र हैं–सेमिरेकाई (Semirechoie), पश्चिमी कजाखस्तान (Western Kazakastan) मुगोदजार से लेकर तथा पूर्वी कजाखस्तान दक्षिणी ऊरला पहाड़ियों से लेकर। ये सारे

कारक चरित्र प्राकृतिक रूप से ही कजाखिस्तान के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक प्रक्रिया को आधार मानकर विभिन्न प्रमुख आधारों पर इन हिस्सों में बांटते हैं।**(S.D. Asfendiarov; Istavia Kazakhstana's dreveishikh Veremen Moxo Alma-Ata,(1), 1935: 82, V.P. Indin, Prdy: 148)**

उच्च समूह (Eleder Harde) का भू–क्षेत्र रूसी क्रांति के पहले के प्रशासनिक सीमा क्षेत्र के आसपास ही मानता है जिसमें कोपाल (Kopal), दझारकेन्ट और बरेनई उर्दइज (Veinyi uezds) आते हैं जो कि सोमिरेक (Semirkei) ऑबलास्ट और अउलीई–अटा (Aulie-Ata) और चिमकेन्त ईदस (Chimkent Verzds) जो कि सिर–दरिया (Syr-Dariya) आबलास्ट (Oblast) में पड़ता है, का हिस्सा हैं। ये आज के आधुनिक तालदीकुरगान (Taldykurgan), अल्माटी (Almaty) दझाम्बुल (Dzhambul) और चीमकेन्ट ऑब्लास्ट (Chimkent Oblasts) के ही सीमाक्षेत्र का हिस्सा हैं।

19वीं सदी में कजाख उच्च झूज (Elder Zhuz) की जनसंख्या अनुमानतः सात लाख के (Seven Hundred Thousand) के लगभग थी। सन् 1989 की जनसंख्या गणना के अनुसार आज के आधुनिक कजाकिस्तान में उच्च झूज (Elder) झूज की जनसंख्या लगभग 18 लाख से 20 लाख के बीच थी। अब सन् 2000 में ये बढ़कर लगभग 22 लाख से 25 लाख तक पहुंच गई है। यह गति कम होने का कारण 1931–32 का अकाल भी है। झालाईरस (Zhalairs) जो कि संख्या समूह में, रूसी क्रांति के पहले तक लगभग, सौ से दस हजार तक माने जाते हैं, ये कजाखस्तान के अलझूज वंश समूह (Elazhuz Clan) के सबसे बड़े सदस्य माने जाते हैं। कजाखी शेझेरे (Shezhere) कहते हैं कि कजाखी उच्च झूज वंश समूह (Elder Zhuz) के इस झालाईस (Zalairs) समूह का कोई बच्चा भी, इस

वंश समूंह के अन्य बूढ़े लोगों से बड़ा समझा जाता है तथा उसका स्थान ऊंचा है।

कजाखी मध्यम झूज (Middle Zhuz) परम्परागत रूप से मध्य, उत्तरी और पूर्वी कजाखिस्तान के भागों में बसे हैं और वे सिर दरिया (Syr-Dariya) के मध्य से लेकर, और दक्षिणी कजाखिस्तान को बीच से चीरते हुए भाग तथा मध्य एशिया (रूसी अपने साम्राज्य के दौरान कजाखिस्तान को छोड़कर अन्य मध्य एशिया के देशों के लिए इस्तेमाल करेंगे जो सिरीदनिुआनिया आचिईआ (Sredniania Azia) में अवस्थित हैं। आज के कजाखिस्तान में ये सब मध्यम झूज विभिन्न आबलास्ट (Oblasts) मुख्यतः पूर्वी कजाखस्तान (Oblasts) उत्तर कजाखस्तान, पावलोदार (Pavlodar), कारागाण्डा अकमोला (Akmda) कुस्तानई (Kustanai) और अल्माटी के कुछ हिस्सों, द0 कजाखस्तान और कजयेल–ओरडा (Kzyl Orda) क्षेत्रों में अवस्थित हैं।

19वीं सदी के अंत व 20वीं सदी में मध्यम झूज के (Middle Zhuz) कजाखी लोगों की जनसंख्या लगभग 1.2 से 1.3 मिलियन के बीच में थी। फिर 1984 के जनगणना के अनुसार यह बढ़कर 3 मिलयन के करीब पहुंच गई अभी 2000 के आसपास यह बढ़कर 3.2 मिलियन पहुंच गई। कुछ मध्यम झूज अन्य देशों, मंगोलिया, रूस, चीन और मध्य एशिया में भी हैं उनको मिलाकर यह लगभग 4.5 मिलियन पहुंच जाएगी।

अंत में हम निम्न झूज (Younger/Lower Zhuz) को देखते हैं तो पाते हैं कि युवा/निम्न सूज (Younger Lower Zhuz) परम्परागत तौर पर पश्चिमी कजाखस्तान में मुगोदझार (Mugodzhar) और ईगिज–तोबोल–तुरगाई (Irgiz-Tobal-Turgai) जतविभाजक से लेकर, पश्चिमी छोर कैस्पीयन सागर (Caspian Sea) तक फैले हैं। और ये अमू दरिया के नीचे वाले छोर (Ama Daria) और सिर दरिया (Sry DAriya)

नदियों से लेकर यूराल (Ural) और तोबोल (Tobal) तक फैले हैं। उत्तरी हिस्से अस्तस्यूत पठार (Usriut Plateau) और मोन्गायशलाक (Mangyshlak), पूर्वी भाग कस्पीयन मैदान और ऊंचाईयों महान सयरत (Greater Obshchi Syrt) ईमबेन (Emben) और पश्चिमी भाग तुरगाई पठान इसके साथ-साथ बसे अराल व तुरान के उत्तरी भाग के अंदर थे। आजकल निम्न या युवा झूज (Younger Zhuz) पश्चिमी कजाखस्तान, ग्यूरईव (Guryev), मान्गाईशलाक (Mangyshalk) और क्ईल ओरडा (Kzyl-Orda) ओबलास्ट में अवस्थित है।

19वीं व 20वीं सदी में युवा/निम्न झूज कजाख (Younger Zhuz) की जनसंख्या लगभग 1.1 मिलियन (लगभग 10 लाख) थी। 1989 में यह बढ़कर 1.5 मिलियन (लगभग 15 लाख) हो गई। यही जनसंख्या सन् 2000 के आसपास लगभग 2 मिलियन (20 लाख) को पार कर गई है। 1930 के अकाल ने युवा/निम्न झूज (Younger Zhuz) की जनसंख्या को भी प्रभावित किया। कलाख युवा झूज (Younger Zhuz) के लिए एक सामान्य शब्दावली अल्शयईन (Alshyn) का प्रयोग किया जाता है।

ग. कबीला/वंश समूह प्रभाव (Klanovest) और आधुनिक कजाखस्तान (Clan factor and Modern Kazhkhastan) :-

तथाकथित वंशानुगत समूह (Clan) का प्रभाव आज भी आधुनिक प्रगतिशील कजाखस्तान में देखने को मिलता है। लेकिन यह मुश्किल से एक ही तरह का एकीकरण एवं चरित्रण नहीं है जिसमें की कजाखस्तान का राजनीतिक-सामाजिक व्यवस्था-क्रम एवं स्वःतरक्की/अभ्युदय संभव हो पाए। यह बहुत ही अलग-अलग तरह की प्रक्रियाओं से होकर गुजरते हुए आज के कजाखी लोकतांत्रिक समाज का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। किसी से भी ज्यादा यह वंश (Clan) एक मनोवैज्ञानिक या जहनी प्रभाव है जो कि समाज की राजनीतिक जिंदगी और सबसे महत्वपूर्ण

प्रशासनकर्ताओं के जीवन की तरक्की और उनकी बहुत से रोजगार इच्छाओं और उनके आगे बढ़ने का रास्ता निर्देशित करता है।

यह सच प्रतीत या संबंधित लगता है कि लोग लगातार, संसाधनों व अवसरों को हमेशा एक क्लैन/वंश समूह (Clan) या (Zhuz) झूज कलैन के बाध्यकारी चश्में से देखना पसंद करते हैं। झूज वंश समूह (Zhuz Clan) के बारे में यह बहुत प्रसिद्ध अवधारणा है कि उसका संबंध कजाखस्तान के राजनीतिक जीवन से जुड़ा है। यह एक बात है जो प्रत्येक कजाख को अच्छे से मालूम है। इनके वंश के लक्षण दोनों तरह से निर्भर करते हैं वो चाहे वांशिक (Geneological) वरिष्ठ या जनसंख्या अनुपात हो। ''सबसे बड़ा झूज (Elder Zhuz) सबसे बड़े भाई की तरह है और शासन करना उसका वैधानिक अधिकार है।'' ''मध्यम झूज (Middle Zhuz) जनसंख्या में सबसे ज्यादा है और सबसे ज्यादा पढ़े लिखे हैं तो अपने अधिकार क्षेत्र में रहते हुए शक्ति की मांग कर सकता है।'' और ''युवा झूज या निम्न/छोटा झुज (Younger Zhuz) सबसे छोटे भाई की तरह है, जो जनसंख्या में सबसे कम है और शासन (शक्ति) की मांग करने का उसको कोई अधिकार नहीं है।'' इसको देखते हुए माना जा सकता कि वंश/समूह के (Clan) प्रभाव की वजह से किसी भी एक व्यक्ति का औचित्य किसी एक स्थाल/व्यक्ति के मुकाबले ज्यादा हो जाता है। यह उसको अपने वंश/समूह विशेष की इच्छाओं की पूर्ति हेतु, उस वंश समूह ईकाई या शासन ईकाई का सबसे ज्यादा ईमानदार रहने को प्रेरित करता है जिससे प्रति उसकी राजनीतिक जीवन में निष्पक्षता व स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने की क्षमता पर सवालिया निशान लगाता है। यह वंश/समूह प्रभाव (Clan factor) ही है जो और सब बाकी चीजों में प्रशासनिक शासन व्यवस्था चलान के लिए प्रशासकों की सीमा निर्धारण करता है। यह भी निर्धारित करता है कि उसके लोक सेवा का क्षेत्र, कौशल का क्षेत्र और सामाजिक संबंध और सत्ता में सीमाएं व निर्वासन कितना है।

आधुनिक कजाखिस्तान में जहां, राष्ट्रपति नुरसुल्तान जरबाटोव ने अपना ही एक शासन तंत्र/साम्राज्य स्थापित कर लिया हैं जहां वंश समूह/झूज (Clan) का प्रभाव लोगों के सामाजिक चेतना, व्यक्तिगत स्थापन, और राष्ट्रपति के विरोधियों की प्रतियोगिता को खत्म करने के लिए व्यक्तिगत लाभ, कम्पनी/औद्योगिकी ऐक्य भाव/समन्वय और दृढ़ीकरण/संस्थापन, साथ ही साथ राजनीतिक विरोध, राज्य व्यवस्था का अभिन्न अवयव या उपकरण है। ए. अकिशेव ने भी इसका बारे में कहा है कि, जो परम्परागत अच्छाईया, अभी थोड़ी बहुत धुंधली पड़ने लगी थी फिर से उभर रही है। मुख्य तौर पर इसका चरित्र यह सामने आता है कि ये कबीलाई व वंशीय समूह (Clan) संबंधों को सुदृढ़ करते हुए, मध्यकालीन पुनरूद्धार का अहसास करवाती है। इसमें अनुवांशिक, कबिलाई संबंध प्रतीत होता है जो मुख्य तौर पर कृषि करने वाले लोगों में होता है। नाममात्र से ये हानिकारक दिखती है लेकिन सब मध्य एशियाई देशों में विद्यमान हैं तथा यहां शासन के लिए एक आरामदायक वातावरण बनाए हुए हैं। **(A.K. Akishev "Starye platia Nnovykh Khonov", Almaty 2000:101)**

कजाखिस्तान का राजनीतिक प्रक्षेप पथ वंश/समूह राजनीति से ग्रसित है। नजरबायेव ने पहले पहल वर्षों में, वंश/कुल समझौता को करवाने वाले बिचौलिये की छवि बनाई। उसने छोटे वंशावली घरानों व तीन बड़े कबीलाई वंश समूहों के बीच की ऐतिहासिक बंटावारे की परिस्थितियों का सामना किया। **(Schatz 2000)** तथापि कुछ वादों और कुछ स्तर के मिडिया के स्वाभाविक उलझनों और राजनीतिक पार्टी उदारीकरण, सभी तीनों हॉर्डे/झुज (Zhuz/Horde) के प्रतिनिधियों के समावेशन के बाद भी नजरबायेव की सत्ता कुछ समय बाद निरकुंशता की तरह मुड़ गई। जैसा कि कैथलिन कॉलिन कहती हैं कि,''तेल आर्थिकता पर रक्षित व बन होने के बाद नजरबायेव ने एक ऐसी महा उत्कृष्ट–राष्ट्रपति शासन व्यवस्था को सुदृढ़ करना शुरू किया जिसमें उसके तंत्र में सत्ता, शक्ति व संस्थानों सभी को पूर्णतः अपने कब्जे में ले लिया है'' **(Collins 2004:257)**

नजरबायेव ने अपने विशाल वंश को, सभी महत्वपूर्ण आर्थिक व राजनीतिक विभागों में बैठा दिया। राष्ट्रपति की सबसे छोटी बेटी आलिया ने ''(कन्स्ट्रकशन)निर्माण उद्योग जैसे महत्वपूर्ण भाग पर असिमित नियंत्रण और साथ ही साथ नियंत्रण जमा लिया।'' **(Franke, Gawrich & Alakbarov 2009:114)** उसकी दूसरी बेटी डसिगा नजरबोयब (Dariga Naeabayeva) और उसके पति रखात अलाईव (Aliv) ने मिडिया व अन्य महत्वपूर्ण व्यवसायों पर कब्जा जमाए रखा। **(Collins 2004: 23-56)** नजरबायेव के दूसरे दामाद तैमुर कुलीबेव (Timur Kulibaev) ने 1990 मॅ उभरी कजाख आर्थिक व्यवस्था पर अधिकार, मुख्यतः गैस व तेल क्षेत्र पर कब्जा प्राप्त किया। काफी आलोचनाओं के बाद भी राष्ट्रपति के रिश्तेदारों का ऊंचे पदों व खुद के बड़े व्यवसायिक हितों का होना, कजाखिस्तान की वंश/कुल आनुवांशिकता या वंशानुगता के आधार पर है। नजरबायेव ने एक बार कहा था कि, ''मेरे परिवार के सारे सदस्य, इस देश के सामान्य लोगों की तरह ही सामान्य नागरिक है। उनको अन्यों की तरह व्यावासायिक गतिविधियां करने, सार्वजनिक पद ग्रहण करने व उद्योग करने का उतना ही अधिकार है जितना अन्य को है। लेकिन सब लोगों की तरह ही उनको भी कानून तोड़ने की इजाजत नहीं है तथा वो कानून के सामने समान है।'' **(Novosti 2010: 65)**

एक कजाखी राजनीतिक विज्ञानी दोस्सयेप सतपायेव (Dossyp Satpaev) कुशलतापूर्वक लिखते हैं : ''राजनीति में सक्रिय होने की सहमति ही, विभिन्न अनौपचारिक व व्यक्तिगत वंश संबंधों समझौता जो कि 'विशेष परिवार के बीच हुए हैं, या शासन सत्ता के आंतरिक वक्र/भाग/हिस्से और विभिन्न प्रतियोगिताओं को अच्छी तरह समझना होगा कि एक बार व्यवसायिक दौड़ और राजनीतिक सहभागिता क्षेत्र में अपने के बाद उसके नियमों के अनुसार उनके नियमों का निर्विवादित रूप से पालन करना होगा।'' **(Frank, Gawich & Alakbarov 2009 :115)**

कजाखिस्तान का सत्ता–शक्ति ढांचा एक पिरामिड की शक्ल में बना है। राष्ट्रपति सबसे ऊपर होता है जो कि अपनी विशाल–वंश/कुल/वशांनुगता (Mega-Clan) से जिसमें उसके परिवार के सदस्य भी शामिल होते हैं, घिरा होता है और औद्योगिक व राजनीतिक अभिजात्य इस पिरामिड के तल में अवशिष्ट होते हैं। जब यह अभिजात वर्ग की बात है तो ये दो उप–संस्कृति समूह के अंदर बांटे जाते हैं। पहला उप–संस्कृति समूह वह है जिसमें ''परम्परागत क्रमानुगता में होर्डे/झूज (Horde/Zhuz) आते हैं, जो कि अनुवांशिक वंशानुगता के वरिष्ठता व आकार पर निर्भर करता है।'' और दूसरा ''बहुत ही दृढ़ता से बना विकसित समूह व्यवस्था पर आधारित भूतपूर्व कम्युनिस्ट नेताओं, पहले के सोवियत आर्थिक ढांचे और नए उद्योग समूह'' होता है।**(Franke,Gawrich,Alakbarov 2009:116)**

इन व्यवसायिक अभिजात्यों/महानुभावों में अपने (ढांचे) कार्य के लिए खूनी अनुवांशिक रिश्ते व वंशावली रिश्तेदारी संबंध होने जरूरी नहीं है। बल्कि इसके बजाए अपने लाभों व व्यवसायों के लिए लॉबी (जोकि दबाव डालने वाला प्रकोष्ठ होता है) बनाना इसके आधारभूत नियम हैं। अपने शक्ति व आर्थिक समभागों को निर्वाहित करने के लिए ये संगठित दबाव समूह के रूप में काम करते हैं। इसलिए ये हमेशा अपने आप को राष्ट्रपति के नजदीकी बनाने या बने रहने का प्रयास करते हैं इससे इनकी वफादारी भी प्रकट होती है साथ ही इनका ओहदा पर स्वरूप बना रहता है।

घ.राजनीतिक संस्थाओं का लोकतांत्रिकरण (Democratisation of political institutions) :–

सोवियत संघ के विघटन को शुरू में कजाखस्तान जैसे अनेक नए स्वतंत्र मध्य एशियाई देशों द्वारा बड़े ही आशावादी दृष्टिकोण से देखा गया। अकादमिक जगत में यह सोवियत संघ के विघटन के बाद शुरूआती दौर में बने कजाखिस्तान जैसे देशों के शासन–व्यवस्था को 'लोकतंत्र के संक्रमण' के काल के रूप में देखा जाता है। सोवियत संघ के विघटन ने ही कजाखस्तान

जैसे इन मध्य एशियाई देशों में अनेक चुनौतियों को उभार दिया। इन राष्ट्र–राज्यों को अखिल–संघ अर्थव्यवस्था अखिल संघ अर्थव्यवस्था के विखण्डन को स्वीकार करना पड़ा खुली बाजार व्यवस्था की दिशा में परिवर्तनों के दौर की तरफ कदम बढ़ाना पड़ा की दिशा में परिवर्तनों के दौर की तरफ कदम बढ़ाना पड़ा। कजाखस्तान जैसे नए स्वतंत्र मध्य एशियाई देश को सोवियत संघ के बाद के लोकतांत्रिकरण का दौर बिना किसी पूर्व अनुभव के लोकतंत्रीय राजनीति को स्थापित करना बड़ा ही कठिन व महंगा साबित हो रहा था।

1991 के अंत में सोवियत संघ के विघटन के बाद कजाखस्तान को अनिच्छा से घोषित स्वतंत्रता प्राप्त हुई। कजाखस्तान ने न तो गणतंत्र की स्वतंत्रता की न अलगाव की मांग थी, और ना ही कोई संगठित राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन था। **(Sally Cummings; Kazakhastan Power, and the Elite, 2005: 12)** इस अन्छित स्वतंत्रता प्राप्ति में अनेक कारण अंतर्निहित थे। कजाखस्तान, सभी सोवियत संघ गणतंत्रों में सबसे ज्यादा जातीय आधार पर विजातीय (Heterogeneous) था। इस देश में अनेक वंशाकुल सम्प्रदाय पहचान समूह थे जो इसकी मुख्य जनसंख्या का आधार थे। इन्हें झूज/हॉर्डे वंश (Zhuz/Horde Clan) कहा जाता है। ये उस समय कजाखस्ता की कुल नृजातीय व जातीय जनसंख्या का लगभग 60–70 प्रतिशत तक हिस्सा थे। इसके अलावा, कजाखस्तान 2,727,300 वर्ग कि. मी. क्षेत्रफल के साथ दुनिया का 9वां सबसे बड़ा देश बना **(Maghew B, Plukett R. and Richmond S; Central Asia, 2000: 45-48)** ।

इसके विपरित इतनी बड़ी सीमा वाले इस देश में सिर्फ 16.1 लाख निवासी ही थे। स्वतंत्रता ने कजाखस्तान की राजनीति की प्रकृति को भी आकार दिया परंतु यह सही मायनों में लोकतांत्रिक सिद्धांतों की समर्थक नहीं रही। (**Martha Brill Olcott 1997: 56**) इससे पहले कजाखस्तान के लिए लोकतांत्रिक संस्थाओं को मुश्किल से ही कोई पूर्वानुभव था। कजाख

लोकतंत्र के लिए केवल एक सार्थक अग्रदूत पूर्व–उपनिवेशी काल से था, जब वंश/कुल सम्प्रदाय राजनीति (Clan Politics) अक्साकाल्स (Aksakals) को शासन करती थी, अऊल्स (Auls) बुनियादी प्रवासी ईकाई, जब आवश्यक रूप से बाएई (Byis) कुल/सम्प्रदाय/कबीले के प्रतिनिधियों को चुनने के लिए मिलते थे, जो आगे बारी में सुल्तान (Sultans) को चुनते थे तथा फिर सुल्तान अपने खान (Khans) को चुनते थे। हालांकि कुलतंत्रीय इस व्यवस्था के नींव में शासन की प्रतिनिधित्व प्रणाली के बीज थे। लेकिन इस प्रकार की नियुक्तियां, लोकप्रिय आधार पर निर्वाचित विधायी संस्थानों/सरंचनाओं के साथ मेल नहीं खाती थी। (**Ian Bremmer and Cory Welt, "The Traible with Democrdacy in Kazakhastan" Central Asian Survey, Vol. 15(2),1996: 180)**

लोकतांत्रिकरण की प्रक्रिया हमेशा उसी तरीके से नियंत्रित होती है जिस तरीकों से समाज संरचित हुए हैं। कजाख्स्तान के समाज का सामाजिक ताना–बाना एक मिश्रित, परिवार, वंश, कबीले–नृजातीय समूह, उप–सजातीय और क्षेत्रीय जुड़ाव व वफादारी की व्यवस्था से बना है। ये राज्य–निष्ठा या राजनिष्ठा के तंत्र, पश्चिमी देशों द्वारा गुमनामी अव्यैक्तिकता की कमी की वजह से ज्यादा मजबूत हुए। नामधारी/नाममात्र की राष्ट्रीयता के बीच आपसी आंतरिक मतभेद/मंडल/श्रेणियों बहुदा/अक्सर हर रोज के कार्यों व आर्थिक व सामाजिक दिनचर्या पर थोड़ा'सा प्रभाव डालते हैं, लेकिन सामाजिक प्रतिष्ठापूर्ण पद की नियुक्ति में अहम भूमिका निभाते हैं। सोवियत संघ के समय पर परिवार व वंश समूह तंत्र (Clan Netwroks) व्यक्तिगत व राज्य के बीच एक मध्यवर्ती/अंतस्थ का काम किया करते थे और एक सामाजिक समर्थक प्रणाली के रूप में भी कार्य करते थे। हालांकि, उत्तर–सोवियत काल में इन समुदायों या सम्प्रदायों की व्यवहारिकता व जीवन क्षमता के लिए, इनके बीच के झगड़े व बंटवारे का पूर्णतः एक वास्तविक आशंकित खतरा बना हुआ है

और यह लोगों के बीच एक खाई पैदा कर रहा है। **(Anna Matveeva 1999: 34-78)**

आजादी के दस साल बाद तक कजाखस्तान व उस जैसे अन्य मध्य एशियाई देशों में शासन राजनैतिक संस्थाओं का चरित्र वैसा ही बना रहा था जैसा सोवियत संघ के समय में था। यह सम्पूर्णवादी सत्ता नेतृत्व हमेशा सोवियत की नीतियों व संरचनाओं पर आधारित रहा तथा नए रूप में वह अधिनायकवाद (Anthoritarianism) की तरह आकर्षित हुआ। कजाखस्तान में भी सत्ता का, एक वंश कुलीन समूह आधारित, सोवियत सत्ता संस्थानों की ऐतिहासिकता लिए, ऐसा मिश्रण तैयार हुआ जिसने लोकतांत्रिकरण की प्रक्रिया को कजाखस्तान की स्वतंत्रता के पहले दस साल बड़ी ही विकट परिस्थितियों में संचालित किया। **(Cumming 2002: 56)** एक बहुत अच्छा विचार प्रस्तुता करती हैं और कहती है, ''सब उत्तर–सोवियत राष्ट्र–राज्य सोवियत काल के मार्क्सवादी–लेनिनवादी सत्ता संचालन आदर्श से दूर चले गए थे। लेकिन पुरानी व्यवस्था के कुछ अवशेष इनमें बचे रह गए। नेतृत्व की विचारधारा अब नहीं बची थी, अगर थीं भी तो बहुत कम।'' कजाखस्तान गणतंत्र में स्वतंत्रता प्राप्ति से सन् 2001 तक हम लोकतांत्रिकरण की प्रक्रिया को हम मुख्यतः तीन समयावधियों में देखते हैं।

कजाखस्तान के लोकतांत्रिय विकास में प्रथम दौर सन् 1991 से 1995 तक था जिसे कि उस दौरान 'पश्चिमी–समर्थक' लोकतांत्रिकरण व्यवस्था तथा विदेश नीति एवं लोकतंत्रीय प्राकृतिवाद' (Democratic Romanticism) या 'लोकतंत्रीय छायावाद या अव्यवहारिकतावाद' भी कहते हैं। इसी समय में सोवियत आदेश प्रशासनिक व्यवस्था के तत्वों को, यहां कि लोकतांत्रिक व्यवस्था ने संरक्षित किया गया। जनसंख्या समूह उस समय राजनीतिक रूप से व्यवस्थित थे। उस समय राष्ट्रपति की शक्तियों में निरंतर बढ़ोतरी व उसके समानांतर अन्य संस्थानों व प्रतिनिधात्मक ईकाइयों का ह्रास हो रहा था। इसने, सामाजिक–विकास, आर्थिक उन्नति व राजनैतिक विकास के उत्कृष्टता मॉडल की खोज की जगह ले ली। दूसरे चरण (1995–1999)

में राष्ट्रपति नजरबायेव को नए शक्ति अवतार व लोकतंत्र के संरक्षक के रूप में, शक्तियों के एक जगह संग्रहित कर लेने का प्रभाव दिखता है। यह राष्ट्रपति की शक्तियों को ज्यादा से ज्यादा बढ़ाने व प्रभावशाली दबाव समूहों के एक तंत्र के अंतिम गठन के लिए एक नियंत्रण बनाना, 'बहुपक्षीकरण' के द्वारा 'विशेष तरीके' सिद्धांत को कजाखस्तान में प्रसिद्ध बनाना, एशियन सिद्धांत तरीके को अपने देश के विकास का नया आर्थिक व राजनैतिक–सामाजिक विकास का जरिया बनाना तथा विभिन्न कुल/वंश समूह व विपक्षों के बीच उभरते तनाव जो कि राजनीतिक शक्तियों को लेकर बना आदि का बड़ा ही संघर्षमय दौर था। इसमें विभिन्न लोकतांत्रिक संस्थानों की प्रतिष्ठा पर आघात किए गए। मीडिया के किन्ही विशेष हाथों में सिमट जाने से उसकी कार्यक्षमता पर प्रभाव पड़ा। इसके बाद 1999 से 2001 तक के काल को अस्थायी स्थिरीकरण का काल कहते हैं। इसमें द्रूत गति से तीव्र आर्थिक सुधार एवं विकास की प्राथमिकता मिली। यह विकास, एक रूढ़ीवादी राजनैतिक, वंशावली समूह (Clan Plitics) राजनीति के संरक्षण के साथ–साथ चला रहा। इस दौरान प्रशासनिक अधिकारों, सत्ता और शक्ति को दृढ़ करने तथा राष्ट्रपति व राजनैतिक अभिजात्यों की सत्ता को सुदृढ़ करने का दौर चलता रहा। कजाखस्तान के समाज के लिए पहले कुछ साल स्वतंत्रता के बाद, सोवियत संघ के शासन की विरासत से निजात पाने और तीव्र लोकतांत्रिकरण की उम्मीद के छोटे से कालक्रम का हिस्सा थे। जैसे मार्था ऑल्कॉट (Marth Olcott)कहती है कि इस समय, पहले कुछ साल, आम तौर पर लोकतंत्र की तरफ मुड़ने व आगे बढ़ने के सिद्धांत पर आधारित थे और यह व्यापक आर्थिक सुधार के माध्यम से उसके लिए समर्पित थे। **(Olcott 2002:2-6)**

कुमिंग आगे कहती हैं कि, ''सभी मध्य एशियाई स्वतंत्रता प्राप्त देशों में राष्ट्रपतियों ने संस्थानों को शक्ति प्राप्त करने के लिए तैयार किया और उन्होंने इसमें सफलता भी पाई। मौजूदा अधिनायकवाद व प्रभावी नेतृत्व की ये धाराएं, उनकी (नेताओं) शखियत, लक्षण, गुण, अनुक्रमता व नीतियों

से निकलती हैं।'' वह सलाह देती हैं कि, ''यहां अधिनायकता बने रहने के लिए राष्ट्रपति व्यवस्थाओं के बारे में पहले से कुछ भी निर्धारित नहीं है, इसके बजाय व्यवस्थाओं के प्रकार आंशिक रूप से अभिकर्ताओं की इच्छा द्वारा निर्धारित है।'' अधिनायकवाद की तरफ एकात्मक प्रतिगमन, संस्थागत पसंद के गतिमान प्रदर्शन को महत्वपूर्ण बताता है।''(**Cummings 2002: 20**)

राबर्ट डहल कहते हैं कि संस्थानों को सरकार की नीतियां मतदाताओं की पसंद को ध्यान में रखकर बनानी चाहिए, लेकिन कजाखस्तान के संस्थान या प्रशासन मतदाताओं की पंसद की बजाए राष्ट्रपति की पसंद के लोकतांत्रिकरण के जहाज को बचाते प्रतीत होते हैं। (**Dahl 1971**) इस विवरण में भी यह प्रकाश डाला गया है कि कजाखस्तान में Huntington के द्वारा बताए गए अगुआ/प्रणेता नेतृत्व की कमी है, जो कि लोकतंत्र और लोकतांत्रिकरण को समर्पित हैं। इसी तरह से उसे उसी वक्त बहुत से शोधकर्ता व विचारक समझते हैं कि कजाखस्तान लोकतांत्रिकरण की बजाए अधिनायकवाद की तरफ ज्यादा बढ़ रहा था।(**Huntington 1991**)

जोव्तिस (**Zohvits**), जो कि कजाखस्तान के लोकतांत्रिकरण को तीन भागों में बांटता है। वह तीन समयावधियों में कजाख लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया को विभाजित करता है। उसकी राय में सन् 1991 से 1994 के बीच प्रथम भाग में कजाखस्तान, ज्यादा ''आजाद/स्वतंत्र'' और लोकतांत्रिक देश था, जहां उस समय बोलने व मीडिया की स्वतंत्रता के क्षेत्र में कजाखीस्तान में संतोषजनक प्रगति हुई थी।''(**Ruffin and Waugh 1999:58-60**) तथापि दूसरी अवस्था जो कि 1994 व 1995 के शुरूआत में प्रारंभ हुई। यह अवस्था काल, संवैधानिक न्यायालय द्वारा सुप्रीम सोवियत या संसद (Parliament) को भंग करने का गवाह बनी। जोवित्स के अनुसार 'इस में न्यायायिक संस्था की सर्वोच्च व्यवस्था ने कजाखस्तान की राजनीतिक व्यवस्था के विकासकाल को अवरूद्ध कर दिया और गणतंत्र राज्य व उसके

निवासियों को बिना किसी विधायिका व प्रतिनिधित्व शक्ति के छोड़ दिया।'' इसके बाद तीसरी अवस्था जो कि 1997–98 में शुरू हुई थी। उमें कोई भी स्पष्ट विभेदन समझ सकता है जब सरकार ने विपक्षी पार्टियों, उसके द्वारा किए जा रहे विरोध प्रदर्शनों और बिना ईजाजत के सभा करने आदि का प्रत्यक्ष रूप से दमन करना शुरू कर दिया। **(Ruffin and Waugh 1999:60-62)** जोक्तिस यह दर्शाता है कि सभा अधिकार व स्वतंत्रताएं, राज्य के संविधान द्वारा पक्क तौर पर निर्धारित थी, उन सब को, दूसरी व तीसरी अवस्था या स्तर पर कानून को सक्षम करने' के नाम पर काट–छाट कर कम कर दिया गया।''

जब हम कजाख लोकतांत्रिकरण की बात करते हैं तो यहां पर हमें सकारात्मक कारक स्पष्ट निर्दिष्ट होते हैं। मार्थ ब्रिल ऑल्कॉट **(Marth Brill Olcott)** अपने कार्य **''Kazakhastan: Unfulfilled Promise (2002)''** में वह आजादी के बाद देश के राजनीतिक इतिहास को लिपिबद्ध करती हैं और वंश/कुल समूह राजनीति के काल में कजाखस्तान के लोकतांत्रिकरण व राज्य–निर्माण प्रक्रिया को समझाती हैं। वो 'नागरिक समाज' (Civil Society) को कजाखस्तान के लोकतंत्र के अध्ययन हेतु बड़ा ही ध्यानाकर्षण का तत्व मानती है। ऑल्काट, नजरबायेव की सत्ता या सरकार के द्वारा जनित राजनीतिक बाधाओं को लोकतंत्रिकरण की प्रक्रिया में रूकावट करने की चेष्टा या गतिविधि के तौर पर मानती है। **(Olcott 2002: 23)** इसी तरह जुलियाना गरोन पिलोन **(Juliana Geran Pilon)** मानती है कि कजाखस्तान व मध्य एशिया के लोग राजनीतिक जीवन में भागीदारी करना बहुत पसंद करते हैं और वो लोकतांत्रिक अधिकारों का भी समर्थन करते हैं। लेकिन वो मानती है कि स्थानीय सांस्कृतिक कारण/तत्व, नागरिक संबंधित गतिविधियों की गहराई का निर्धारण करते हैं जो कि 'नागरिक समाज' को लोकतांत्रिक बदलाव का प्रभावशाली साधन/बाहक बनाते हैं। **(Pilon 1998:23-24)** ये सांस्कृतिक तत्व वहां मौजूद अनेक वंश/कुल समूह

(Clans) ही है जो कि अपनी सामाजिक व सांस्कृतिक विभिन्निताओं पर आधारित रीति–रिवाजों परम्पराओं, नियमों, रहन–सहन, आदी को यहां के लोकतांत्रिकरण की प्रक्रिया में अहम साधन मानते हैं।

इस प्रकार इस अध्याय में वंश/कबीला समूह का विस्तृत अध्ययन करते हुए उनका राजनीतिक संस्थाओं के लोकतांत्रिकरण में उनकी भूमिका का सुशिक्षित अध्ययन यह निर्दिष्ट करता है कि कजाखस्तान गणतंत्र के स्वतंत्रता के बाद ये अनौपचारिक संस्थाएं विभिन्न राजनीतिक सामाजिक उपबंधों व प्रक्रियाओं द्वारा देश के लोकतांत्रिक वातावरण के निर्माण में महत्वपूर्ण रूप से निमित कार्यरत थे। इसमें कजाखस्तान के झूज/हार्डे कबीलों/वंश समूह (Clan) के ऐतिहासिक व वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डालते हुए, उसके भौगोलिक, राजनैतिक संकेद्रण व उसकी औपचारिक संस्थाओं में भागीदारी को स्पष्टतः दर्शाया गया है। हालांकि देश की आजादी के बाद सन् 1991 में इनकी जनसंख्या कुल जनसंख्या का 45 प्रतिशत के आसपास थी लेकिन प्रथम दशक के अंत तक यह 60 प्रतिशत गई थी जिससे वहां की लोकतांत्रिक संघटन प्रक्रिया में कई महत्वपूर्ण बदलाव आए। अतः अंत में यह स्पष्ट होता है कि कजाखस्तान के लोकतांत्रिकरण में कबीला/वंश समूहों का अहम योगदान रहा है।

अध्याय –तृतीय

कजाखस्तान में कबीलासमूह या वंशानुगत राजनीति

(Clan Politics in Kazakhstan)

इस अध्याय में कजाखस्तान गणतंत्र की वंशानुगत राजनीति या कुल/सम्प्रदाय समूह राजनीति का अध्ययन किया गया है। इसमें कजाखस्तान देश के विभिन्न अनौपचारिक व औपचारिक संस्थानों के ऐतिहासिक व आधुनिक संबंधों का विश्लेषण किया गया है। इसमें एक स्तर पर वंशानुगत राजनीति (Clan Politics) को सम्पूर्ण देश के ढांचे में विचारित किया है तथा विशेष तौर पर वहां के राष्ट्रपति नुरसुल्तान नजरबायेव के काल का वहां की वंशानुगत राजनीति में क्या योगदान है, यह भी विश्लेषित किया गया है।

क. कजाखस्तान में कबीलायी/वंश समूह राजनीति (Clan Politics in Kazakhstan) :–

क्तोपसोईका या कबीलाई वंश समूह राजनीति (Clan Politics) सजातीय, व्यक्तिवादी (Clientist), क्षेत्रीयता, मैफियासो (Mafioso) राजनीति के समरूप नहीं है। सोवियत संघ के विघटन के बाद मध्य एशियाई देशों के नेतृत्व ने तेजी से अपने स्थान व पहचान को स्वतंत्र नेतृत्व के तौर पर सुदृढ़ किया, जिसके लिए उन्होंने स्थानीय शक्ति को मजबूती से आधार बनाया और अपने ही कबीले/वंश समूह के समर्थकों को महत्वपूर्ण स्थानों पर नियुक्त किया। अकिनर (Akiner) ऐसी व्याख्या करते हैं कि मध्य एशियाई कबीले अब अपनी स्थानीय विशेष पहचान, अनौपचारिक पहचान (Informal Identity) से नहीं जाने जाते हैं बल्कि उनकी पहचान अब औपचारिक राष्ट्र–राज्य पहचान (Nation State Identity) की तरह अवस्थानंतरित हो गई है। जैसा कि कबीले/वंश समूह पारस्परिक आदर को बढ़ावा देते हैं और

विशिष्ट वंश सम्प्रदायों या कबीलाई समाज के बीच विनिमय पर भी जोर देते हैं जिसकी वजह से संरचनात्मक व औपचारिक (Formal Network) तंत्र में भी विनिमय–समृद्धि (Exchange Prosperity) होती है। कबीलाई/वंश समूह समाज में राजनीतिक अभिजात्य (Political Elite), नियामक व चेतनात्मक स्तर पर अपने कबीलों वंश समूहों के शुभ/कल्याण करने हेतु बाध्य होते हैं। जिसकी वजह से सहचन कबीलाई/वंश समूह सदस्यों को सामाजिक आर्थिक व राजनैतिक अवसरों का लाभ मिलता है। राजनैतिक अभिजात्यों की इस उदारता के बदले कबीलाई समाज उनका समर्थन करता है जो कि इनकी राजनैतिक ताकत के बने रहने का एक महत्वपूर्ण कारक है।

मध्य एशियाई राजनीति के अपने अध्ययन में कैथलिन कॉलिन सलाह देती हैं कि ''वंश समूह/कबीला'', मध्य एशियाई राजनीति में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं उनके लिए ''वंश/कुल समूह/कबीले''(Clans) एक महत्वपूर्ण ''सामाजिक अभिकर्ता (Social Actars)'' या 'सामाजिक सक्रियक' और यद्यपि ये ''आधुनिक राज्य के पहले घटित हुए है, लेकिन फिर भी ये प्रामाणिक सामग्री, अनौपचारिक और तर्कसंगत तत्वों द्वारा राज्य को परिस्थितियों के अनुकूल अग्रिम दिशा में अग्रसारित करने में सक्षम है। ये अपने बड़े आदिवासी/कबीलाई संगठनों के टूटने के बावजूद कायम हैं और उन्होंने ग्राहकवादिता (Clientalism) और वंशावली उन्नति को अपनी संरक्षण और उत्तर जीविता की राणनीति के रूप में इस्तेमाल किया है। **(Collins 2006:43)** कोलिंस कहती है कि ''वंश समूह/कबीले'' की निरंतरता देने व कायम करने के लिए सैकड़ों कारकों का हाथ है, यह जार व सोवियत शासन के अधीन अपने के बावजूद मुमकीन हुआ है।

स्कात्ज ऐसा दावा करते हैं कि वंश समूह या संगोत्रता वंशावली विवेक व स्थान पर आधारित कबीले कजाखस्तान की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। वह ऐसा भी दावा करते हैं कि सोवियत संघ की नीतियों ने स्थानीय कबीलों का प्रभुत्व बढ़ाया था, जिसने कि होर्डे (Zhuz)

के बीच की प्रतिस्पर्धा को जन्म दिया जो कि कबीलों के बीच हो रही प्रतिस्पर्धा की वजह से निष्प्रभ हो गए। सोवियत संघ ने कबीलों/वंशों की छवि को मलिन किया जिसी वजह से उप–सजातीय पहचान एक नई दिशा की तरफ खास कर (Kolkhoz) की तरफ केंद्रित हुई। स्कात्ज इस बात पर निश्चित ध्यान देते है कि कबीले सामान्यतः (Kolkhoz) के परिक्षेत्र में अक्षुण्ण एवं अखंड रहते हैं। और स्कात्ज आगे कहते हैं कि सोवियत संघ से स्वतंत्रता के बाद से, कजाखस्तान में कबीलाई/वंश प्रतिद्वंद्वता बहुत बढ़ी है और होर्डे (i)कबीले/वंश का महत्व राजनीतिक परिपेक्ष्य में पुनर्जागृत हुआ है। **(Schatz 2002:95-96)**

यद्यपि स्कात्ज ऐसा कहते हैं कि होर्डे (Zhuz) के बीच की प्रतिद्वंद्वता सोवियत काल में निस्तेज व निष्प्रभ हुई थी, परंतु वो पर्याप्त–रूपेण व्याख्या करने में विफल रहते हैं कि होर्डे (Zhuz) स्वतंत्रता के बाद पुनर्जागृत कैसे हुए। स्कात्ज व्याख्या करता है कि किस तरह से होर्डे कबीले/वंश समूह (Zhuz) कजाखस्तान की राजनीति के लिए विवेचनात्मक व सृजनात्मक महत्व रखते हैं। यद्यपि वो कहता है कि ये सारे परिणाम कई बार सामान्य अपेक्षाओं को चौंकाते हैं जैसे वस्तुतः अगर बात करें तो नजरबायेव का कबीला या वंश का (Clan) प्रभुत्व स्पष्टतः गोचर नहीं होता है। स्कात्ज कहता है कि वास्तव में जो कजाखस्तानी राजनीति में घटनाएं घटती हैं वो किसी विशेष वंश समूह/कबीले और साथ ही साथ कबीलाई सरकारें को भी संतुलित करती है।

डेनियल किमाजे (**Daniel Kimmage**) कहता है कि कबीले कजाखस्तान की वर्तमान राजनीति में एक महत्वपूर्ण कारक है। पाल कास्तों (**Pal kolsto**) के शब्दों में कजाखस्तान की राजनीति कजाख के तीन सबसे बड़े उप–सजातीय समूह झूज/होर्डे (Zhuz/Hordo) के विनिमय व युक्ति के आधार पर निर्धारित होती है। एडवर्ड स्कात्ज प्रमुखता से इस बात को विशेष तौर पर कहते हैं कि नातेदारी/सगोत्रता (Kinship) वंशवादिता एक मौन

सच्चाई है जिसकी पैठ, रोजमर्रा की जिंदगी में गहराई तक है। हम जानते हैं कि ऐतिहासिक रूप से सजातीय/नृजातीय कजाख तीन होर्डे/झूज (Hordes/Zhuz) में विभाजित हैं जिनको क्रमशः शीर्ष (Higher Horde) मध्यम (Middle Horde), निम्न होर्डे (Lower Horde) के नाम से जाना जाता है। इनके बाद संबद्धता वंशवाद के पितृसत्तात्मक वशांवली के आधार पर निर्धारित होती है। यद्यपि कजाख लोग घूमंतू व यायावर (Nomadic) थे, परंतु सोवियत संघ की नीतियों की वजह से उनमें स्थायित्व आया और वे संसाधन व सम्पदा के एकीकरण की तरफ अग्रसारित हुए। इसके परिणामस्वरूप होर्डे (Zhuz/Horde) तीन भागौलिक क्षेत्रों में स्थापित हुए। ये हॉर्डे/झूज रस में उपविभाजित हैं जो कि छोटे–कबीलाई समूहों/वंश समूहों के समकक्ष एक वंशावली ईकाई है। सबसे बड़ा समूह (Rus) में कजाखस्तान के दक्षिणी हिस्से के निवासी हैं जो कि कजाखस्तान की पूरी जनसंख्या के दक्षिणी हिस्से के निवासी हैं जो कि कजाखस्तान की पूरी जनसंख्या का 35 प्रतिशत हिस्सा है।

करिमोव (Karimov) की तरह नूर सुल्तान नजारबायेव का उदय अपेक्षाकृत परंपरागत राजनीति के द्वारा हुआ। उसका जन्म वर्तमान समय में अल्माटी (Almety) के निकट चेमीलगन (Chemolgan) में हुआ था। 1960 में अपनी प्राथमिक शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात् नजरबयेव (Nazarbayev) कार्य करने के लिए करागन्डा मेटालुरगिकल कम्बाइन में टर्मिटाऊ (Termitau) में राजनीति में सक्रिय हुए। कोम्सोमील और क्षेत्रीय कम्युनिस्ट पार्टी से अवरोध के पश्चात् नजरबयेव को 1979 में कारागांडा क्षेत्रीय समिति का द्वितीय सचिव (Secretary) नियुक्त किया गया और इसके पश्चात् केंद्रीय संघीय समिति के उद्योग सचिव (Secretary for Industry) बनाया गया। 1984 में मैत्री सभा के अध्यक्ष के रूप में अपनी नियुक्ति के पश्चात् नजरबयेव प्रथम सचिव दिनमुखायेद (Dinmukhamed Kunaev) कुनैव के बाद गणराज्य में द्वितीय महत्वपूर्ण स्थिति/हैसियत पर

विराजमान हुए। 40 वर्ष की उम्र में नजरबयेव (Nazarbayev) सबसे युवा सचिव बने। सैली कमिंग्स (Sally Cummings) के अनुसार दूसरे प्रभावी कजाख के तौर पर नजरबयेव (Nazarbaem Limaev) कुनायेव को उखाड़ फेंकना चाहते थे पदच्यूत करना चाहते थे। **(Sally N. Cummings Phd Otiss 1999:74-75, 2002:59)**

1986 में कजाखिस्तान (Kazakhaistan) की कम्यूनिस्ट पार्टी (Communist Party of Kazakistahan) के 16वें अधिवेशन में कुनैव (Kunaev) को पदच्युत करने की बात की, जब उसने विज्ञान अकादमी (Academy of Sciences) के अध्यक्ष उसके भाई अस्क्र (Askar)के प्रदर्शन की आलोचना की। कुनैव (Kunaev) ने इस कदम को विश्वासघात के रूप में देखा और मोस्को से नजरबयेव के हटाने का आदेश जारी कर दिया। नजरबयेव (Nazarbayev) के समर्थकों ने विरोध स्वरूप प्रदर्शन कर कुनैव (Kunaev) के हटाये जाने की बात की। गोरवाचेव (Gorbachev) ने नजरबयेव (Nazarbayev) को न हटाकर कुनैव (Kunaev) को हटा दिया। कुनैव (Kunaev) ने जो जमीनी स्तर पर अपनी पहुंच बनायी थी उसके प्रथम सचिव के रूप में 22 वर्षों में अर्जित की थी उसे धूमिल करने के लिए एक क्षेत्री रशियन नेता गैनेडी कोलविन (Gennady Kolbin) जिसने अलग–आटा अल्माटी (Alma-Ata/Lamaty) में दिसंबर में तीन दिन तक विप्लव दंगे करवाकर की उसकी जगह चुन लिया गया। इस समय में जो दंगे हुए उसने लंबे समय से गोर्वाचेव की चलती आ रही शक्ति और संसाधनों की राजनीति जो कबीला तत्वों (Clan elements) के ऊपर प्रभावी थी को बड़े स्तर पर आघात पहुंचाया। अंततः जून 1989 में पश्चिमी गणराज्य में एक और विप्लव/दंगों की श्रृंखला के कारण कोल्विन (Kolbin) को हटा दिया गया। उसके नजरबयेव के द्वारा प्रति स्थापित किया गया जो एक संतुलित आवेदक के रूप में हटा दोनो कबीला (Clan) अभिजातों के

लिए स्वीकार्य था। उसे करिमोव (Korimov) की तरह ही संतुलित व्यक्ति के रूप में देखा गया जो अभिजात वर्ग के हितों को नुकसान नहीं पहंचा सकता था। **(Cumming 1999:75-76,Collins 2002:242, Collins 2002:176-76, Ahmed Rashid 2002:38, Ian Brummer and Cory Welt 1995: 139)**

नजरबेयव (Nazarbayev) मुख्यतः कोल्विन (Kolbin) को विस्थापित कर अपनी स्थिति और संबंध मजबूत बनाने के लिए अन्य कजाख (Kazakh) नेताओं से संबंध स्थापित करने लगा। अपने अधिपत्य को बढ़ाने के लिए उसने राज्य नौकशाही, सेना, सुरक्षा और पार्टी तंत्र का भरपूर आश्रय लिया। संस्थाओं को औपचारिक रूप से अपव्यय/प्रयोग (Manipulation) सोवियत युग की सत्य और प्रयुक्त तकनीक थी जिसे नजरबायेव ने अपने आप को सुदृढ़ बनाने के लिए प्रयुक्त किया। इसके अतिरिक्त मार्च 1990 में नजरबयेव (Nazarbyev) की अध्यक्षता में नवस्थापित संसद के द्वारा राष्ट्रध्यक्षता (Presidency) में परिवर्तित कर दिया। दिसंबर 1990 के चुनावी जीत में नजरबयेव ने 98 प्रतिशत मत प्राप्त किये जो उनके प्रतिद्वंद्वी Khasen Kozhakmetov, जो 1980 के विप्लव/दंगों में शरीक व अति राष्ट्रवादी थे, भी अपने नामांकन करवाने में असफल रहे जब उनकी हस्ताक्षर याचिका को संदिग्ध रूप से गायब कर दिया गया। इस प्रकार अनवरत रूप से राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों की विभिन्न रणनीतियों यथा आवेदनों को अस्वीकार करना तथा विधि गतिरोध उत्पन करना, के मायम से उन्हें अगले चुनाव में कजाख (Kazakh) कानून के द्वारा अवैधानिक घोषित कर दिया गया। 1991–1997 तक नजरबयेव ने मुख्यतः अपने सगे–संबंधियों को ही ऊंचे ओहदों तक समिति रखा। **(Cummings; 1999:74,76-77, 92, Cummings 2009:75)** 1998 तक राष्ट्रपति के द्वारा कार्यपालिका पर संपूर्ण नियंत्रण स्थापित कर लिया गया। अनौपचारिक/तंत्र कजाकिस्तानी राजनीति पर हावी हो गया, बजाय गैरकानूनी औपचारिक/आधिकारिक तंत्र के।

Deniel Kimmage और अन्य का मानना है कि कबीलायी राजनीति ने निरंतर रूप से कजाख राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पालकॉलसवो के शब्दों में, ''कजाकिस्तान की राजनीति मुख्य रूप से सौदेबाजी और पैतरेबाजी से संचालित होती है जो मुख्यतः कजाकिस्तान के तीन उपक्षेत्रों के समूह जिन्हें 'होर्ड्स' (Hords) वंश/कबीलो के रूप में जाने जाते हैं के बीच घूमती है।

एडवर्ड सकात्ज (Edward Schatz) इसी बात पर जोर देते हुए कहते हैं कि नातेदारी के बंधन ही मुख्य रूप से गुप्त वास्तविकता है जो प्रतिदिन की जिंदगी में व्याप्त है। (**Pal kolsto 1996:130)** ऐतिहासिक रूप से निजातीय (Kazakh) कजाख तीन जत्थें (Hordes/Zhus) में विभाजित है जो क्रमशः वृहद, मध्यम और लघु रूप में निर्दिष्ट/उल्लिखित है। संबंध मुख्यतः पितृसत्तात्मक वंशावली पर आधारित है। हालांकि कजाकिस्तानी खानाबदोश थे, सोवियत नीतियों ने भी उन्हें गतिहीन बना दिया जो उनके भौगौलिक कारकों में इन तीनों क्षेत्रों के सामूहिक सामजस्य पर आधारित था। ये समूह (Hordes) फिर से (rus) के रूप में उपविभाजित थे जो छोटे कबीला समुदाय के बराबर थे। बड़े समूह मुख्यतः कजाकिस्तान के दक्षिणी भाग के मूल निवासियों (Natives) को सम्मिलित करते हैं जो जनसंख्या का 35 प्रतिशत भाग है। **(Deniel Kimmage 2006, Pal Klasto 1996: 132-133, Edward Schatz 2004:XV)**

यह मुख्यतः ग्यारह उपविभाग–दवलत (Dovlat) और Adban, Suvan, Shaprashty (Chaprashty) Esti, Ochakti, Sari, Vyscum, Calayir, Qomgli, Chachkili और Sirgeli को सम्मलित करते हैं। मध्य भाग मुख्यतः सबसे ज्यादा 40 प्रतिशत जनसंख्या और पांच भाग Gireg, Nayman, Argin, Qipchag और Qcnrat को सम्मिलित करता है। यह उत्तरी मार्ग से जुड़ा हुआ है। छोटे भाग में तीन विभाजन (Flimilu/Alimoglu), Bayoli (Bayoglu) और Ceti-ru(yediurgu) है।

यह 25 प्रतिशत जनसंख्या और राज्य के दक्षिणी भाग में केंद्र का प्रतिनिधित्व करता है। इस शोध ग्रंथ में Schatz के द्वारा प्रयुक्त वृहद, मध्य व लघु क्षेत्रीय कबीलों का प्रयोग कजाकिस्तान के प्राथमिक स्तर पर पहचान के मुद्दे के विमर्श के लिए किया जा सकताहै। **(David Hoffman, 2000)**

पारम्परिक कजाख (Kazakh) प्रथाएं ही निर्धारित करती थीं कि उच्च राजनेता बड़े कबीले अथवा मध्य कबले से चुना जाएगा जबकि छोटे सहयोगी भी आवश्यक सहयोगी के रूप में एक प्रभावशाली तरीके से शक्ति विखंडन के केंद्र बनते हैं। प्रारंभिक सोवियत युग में मोस्को (Moscow) ने मध्यवर्गीय अभिजात वर्ग के अनुगृहीत (Fovor) किया। हालांकि स्टालिन के द्वारा परिशोधन से इस समूह को तबाह किया गया और शीर्ष (Elder) के समूह का समर्थन और नेतृत्व किया गया। शीर्ष के पांच नेताओं के प्रारूप की व्यवस्था के लिए शीर्ष व निचले स्तर पर वितरण किया गया जबकि मध्यवर्ग को एक ही प्राप्त हुआ। **(M. Bill 2000: 184, Schatz 2002: 30-31, Bichel 2002:74, Dave 1996:62, Luong 1996:60-65)**

इस विस्थापन को हृदय शीर्ष क्षेत्र (Heart of Elder territory) में पूंजी को आल्मा–आटा (Almaata/Almaty) के लिए प्रवाहित किया गया। अन्य मध्य एशियाई गणराज्यों की तरह ब्रजनेव काल भी 1964 में शीर्ष समुदाय से Dinmukhamed Kunaev प्रथम सचिव के रूप में एक व्यक्ति के लंबी अवधि तक पदरिहण का गवाह है। वंश परंपरा के तहत्व पर जोर देने वालों में कुनैव (Kunaev) ने संपूर्ण गणराज्य में कजाकीकरण की स्थिति को संभाला। कबीलाई स्तर पर ये चयन घटित/किया गया। क्षेत्रीय नेताओं में अपने क्षेत्री प्रयुक्त विभाजन (Oblasts) के आधार पर एक कबीले में राजनीतिक और आर्थिक पक्ष बांटना शुरू कर दिया। और इन प्रथाओं के लिए वास्तव में गंभीर रूप से मास्को में अधिकारियों के द्वारा सजा दी गई। इन सबके बावजूद भी कबीली व्यवस्था सुदृढ़ बनी रही। सोवियत युग के अंत

तक शीर्ष अभिजात वर्ग ने राजनीति के अधिपत्य बनाये रखा। जबकि मध्य अभिजात वर्ग रूसीकरण के कारण तकनीकी कार्यों में प्रतिष्ठित रहा। लघु कबीलों ने अपने आप को हाशिए पर ही पाया बावजूद इसके के अधिकतम प्राकृतिक संसाधन उनके क्षेत्र में व्याप्त/विद्यमान है। **(Schatz 2002:98-100)**

उत्तर सोवियत कजाकिस्तान में भी कबीला तंत्र ने राजनीतिक और आर्थिक स्तरों पर महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। सैज (Schatz) बताते हैं कि वंशावली संबंधी ज्ञान में रूचि बढ़ने से वृहद स्तर पर ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर Ru और Zhuz के लिए अनुष्ठान किए जाने लगे। और इन पहचानों के महत्व को स्वीकार किया जाने लगा। **(Lung 1996:71-75)**

हॉफमेन (Hoffman) इस तथ्य पर और अधिक जोर देते हुए कहते हैं कि (Zhuz) तंत्र को समझे बगैर कजाकिस्तानी राज्य को समझना मुश्किल है क्योंकि ये अंतराकजाख राजनैतिक वृत्ति को प्रदर्शित करते हैं। हालांकि कजाक नौकरशाहों और राजनेताओं की मूलवृत्ति और सामर्थ्य को जीवनी के माध्यम से बयान की जा सकती है। लोंग (Lung) भी कहते हैं कि हालांकि कजाकिस्तान एक केंद्रीय राज्य होने के नति अंतर्राष्ट्रीय साख रखता है, परंतु वास्तविकता में समाज के अनौपचारिक तत्व ही संस्थानिक ढांचों में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। जैसा कि पूर्व में वर्णित किया जा चुका है कि केंद्रीय राज्य आर्थिक मुद्दों पर क्षेत्रीय राज्यों से संपर्क स्थापित करना कायम रखा। **(Hoffman 1996:245)**

करिमोव (Karimov) की तरह ही नजरबयेव (Nazarbayev) को भी इन तीन क्षेत्रीय कबीलों (Umbrella clans) में अनौपचारिक संतुलन स्थापित करने की जरूरत महसूस हुई। जबकि (Nazarbayev) अपने पूर्ववर्ती (Kunaev) की तरह दीर्घ क्षेत्रीय कबीला (ElderUmbrella Clan) से संबंधित हैं, वह (Shaprasthy) उपसमूह से संबंधित हैं एक छोटा समूह जो

बड़े रूपरेखा तैयार करता है। कजाकिस्तानी राजनीतिक अभिजात वर्ग ने वही गठबंधन रणनीति अपनायी जो सोवियत युग में सर्वोच्च पांच नेताओं की स्थिति थी, उनका विभाजन इस प्रकार है– वृहद या दीर्घ को सीनेट का अध्यक्ष और राष्ट्रपति, मध्य (Middle) को मजलिस का अध्यक्ष (Chairman of Majilis) और राज्य सचिव व प्रधान मंत्री लघु/छोटे (Younger) को बनाया गया। **(Schatz 2002:156-57, Hoffman 1996:245, Collins 2002:257-58, Cummings 2006:13, Olcott 2010:116-120, Robert 2006:186)**

इस ऊर्ध्वाधर संरचना में सबसे ऊंचे राष्ट्रपति नजरबयेव (Nazarbayev) क्षेत्रीय राज्यपालों (Oblast) की जिन्होंने अपने क्षेत्र में बड़े तौर पर शहर एवं जिला प्रशासन में नियुक्तियां की। नजरबयेव ने राज्यपालों को स्वायत्त रूप में अपनी शक्ति जो उनके स्वयं के संरक्षण पर आधारित थी वृद्धि करने से रोका। हालांकि जन्मस्थान या वतन (Sod) हमेशा एक क्षेत्रीय कबीले (Same umbrella clan) से ही निर्धारित हो रहा था जो सामान्य रूप से नौकरशाही में प्रतिनिधित्व मुख्यतः काबीलायी संयों पर जोर देता है। नजरबयेव के समय शर्ति नीति और कैडर (Cadre) विकास के साथ कबीलायी हितों का संरक्षण और उनके परिवार एवं मित्रों को उपहार देने के आवश्यकता को प्रमुखता के साथ संचालित किया गया। नजरबयेव की रणनीति को कुनैव (Kunaev) की नीतियों का अनुसरण ही कहा जा सकता है। 'कबीलायी संबंधों/संपर्क' (Nurbulat Masanor) को प्रमुख अभिजात नियुक्तियों को मुख्य कारक के रूप में दावा करते हैं। कमिंग (Cumming) सांख्यिकिएं रूप से बताते हैं, 40 प्रतिशत आंतरिक अभिजात वर्ग (Elder clan) से है, जबकि 28 प्रतिशत (Middle clan) से और 9 प्रतिशत (Younger Clan) से है। Elder अभिजात कारणों पर छोटे पदों पर होने के बावजूद भी अधिक प्रभाव रखते हैं। Middle अभिजात के बारे में

Masanov बताते हैं उनकी स्थिति महत्वपूर्ण है पर राजनीतिक नहीं। Elder अभिजात मुख्यतः तब और ज्यादा शक्ति प्राप्त करने लगा जब 1990 के बाद विदेशी निवेश किया जाने लगा जो मुख्यतः राष्ट्रपति के परिवार के लोग ही है। (**Schatz 2002, 2004:188; 193-213, Cummings 2006:20-22, Collin 2002, 2006:190-200, 200-205**)

यद्यपि Elder umbrella Clan का शीर्ष पर अधिपत्य रहा, परंतु शेष राज्य में स्थिति और भी ज्यादा जटिल थी। Middle Clan मुख्यतः नौकरशाही में बहुसंख्यक होने के कारण संख्या के आधार पर सर्वोच्च थे। Elder जहां 43 प्रतिशत थे जबकि Younger की संख्या काफी कम मात्र 13 प्रतिशत थी। इस स्थिति को बहुत से कारकों के माध्यम से समझा जा सकता है, जिसमें सोवियत युग में Middle Clan की शैक्षणिक स्थिति बेहतर थी। इसके अतिरिक्त नजरवयेब की पत्नी Sara Alpysovna Nazarbayeva मुख्य रूप से एक विशिष्ट मध्यवर्ग से ताल्लुक रखती थी, और उन दोनों की शादी उत्तर–दक्षिण के गठबंधन में एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में परिणित हुआ। उसके अंतिम समय तक Nazarbayev के करीबी रहे। Middle Clan का नियुक्तियों में प्रभाव मुख्यतः तब हुआ जब 1997 में पूंजी का स्थानांतरण Almaty से Astana होने लगा। अंततः पूंजी निवेश प्रवाह का नियंत्रण इसके अभिजात वर्ग के द्वारा 1990 के बाद Younger clan क्षेत्रों में किया जाने लगा। परिणामस्वरूप सारा विदेशी निवेश पूंजी आधारित हो गया। ठीक इसी समय कुछ Younger को भी उच्च स्थिति प्राप्त करने का मौका दिया गया जैसा कि Nurlan Balgimbaev जो 1977 से 1999 तक प्रधान मंत्री के रूप में सेवारत रहे।

संपूर्णतः नजरबयेव ने कबीलाई संतुलन को प्रोत्साहित किया। नजरबयेव ने आंकलन किया वह चाहे तो अपनी परिवार व संबंधियों को भौतिक लाभ पहुंचा सकता है। परंतु उसे कबीला आधारित आधारभूत

अस्थिरता को नकारना चाहिए **(Schatz 2004:100-3, Olcott 2010:185-87)**। इसके लिए हम देखें तो संसाधनों के नियंत्रण के लिए कबीलायी संघर्ष जारी है, परंतु कोई भी कबीला समूह दूसरे के पूर्ण निषेध के द्वारा राज्य पर संपूर्ण प्रभुसत्ता प्राप्त नहीं कर सकता है।

ख. कबीला/वंश समूह के बीच प्रतिस्पर्धा :–

बहुत से विद्वानों द्वारा कबीला/वंश समूह राजनीति का विश्लेषण किया है । उन्होंने कहा है कि वंश/कबीले की स्थिति की प्रवृत्ति गतिहीन है तथा इसमें सोवियत के संघ के अतीत के असंशोधित अवशेष हैं **(Schatz 2000)**। उदाहरणतः तर्क यह है कि व्यक्तिगत स्तर पर कजाखों में कबीला/वंश समूह संबद्धता की बढ़ती केंद्रियता, उस सरकार की नीति के अपेक्षित परिणाम एक कजाख राष्ट्रीय पहचान के विकास को प्रोत्साहन देने का हिस्सा है। इससे एकजुट कजाख की भावना से सुदूर, विशेष रूप से कबीले और आदिवासी वंश समूह पहचानों पर आधारित इन समूहों में कजाख के इतिहास;परंपराओं और भाषा आदि के लिए एकजुटता के प्रयासों में उप–राष्ट्रीय मतभेद बढ़ चुके हैं। जबकि साधारण कजाख के लिए कबीले/वंश समूह पहचान महत्व प्राप्त कर रही है। इन विपरितताओं के बावजूद हालांकि स्कात्ज (Schatz) की अभिजात कुलीन वर्ग के स्तर की रिपोर्ट में मिश्रित परिणाम व अवयव मिलते हैं। **(Schatz: 2004, 2005)** एक तरफ जहां कोई कबीला (Zhuz or Horde) जो राष्ट्रपति नजरबायेक के अंतर्गत आता है और या फिर जिस कबीले से कई प्रमुख राजनीतिक नियुक्तियां हुई हैं वह 'राष्ट्रीय राजनीति' के 'शीर्ष पर' पर हावी है। **(Schatz 2004:p.99)** इसी तरह नजरबायेव भी वरिष्ठ झूज/हॉर्डे (Senior Horde) से संबंधित है। कबीलों या वंश समूह (Clans) ने आर्थिक अभाव की बाधा द्वारा राज्य के कार्यकारी भागों पर नियंत्रण बना लिया था इसमें संसाधनों की कमी व कजोर औपचारिक संस्थाओं पर नियंत्रण भी शामिल है।

फिर भी यह प्रभुत्व पूर्णतः नहीं है क्योंकि राष्ट्रपति ने साथ–साथ कबीला/वंश समूह 'संतुलन का नीति' की पालन भी किया जिससे कि अन्य कबीलों/वंश समूहों के गुटों के प्रतिनिधियों को भी आधिकारिक तौर पर शासन–सत्ता में शामिल किया गया।

वैथलिन कॉलिंस अपनी किताब (2006) में कजाखस्तान के संदर्भ में वंश/कबीला समूह राजनीति की व्याख्या करते हुए कहती हैं कि कजाखस्तान में कबीला/वंश समूह संघर्ष या प्रतिस्पर्धा कम व्यापक है, खासकर बाकी मध्य एशिया की तुलना में बहुत कम कबीला/वंश समूह प्रतिस्पर्धा मिलती है। एक ओर जहां स्कात्ज (Schaz) का सुझाव है कि राष्ट्रपति की कबीलों/वंश समूह में संतुलन की नीति द्वारा सरकार के निचले स्तर पर कबीलों में संघर्ष मौन अवस्था में है। कालिस (Collins) बताती है कि आर्थिक समृद्धि के परिणामस्वरूप, इस मामले में कबीला राजनीति (Clan Politics) ज्यादा सीमित और नियंत्रित रूप में मौजूद हैं **(Collins 2006:6)** विपरित आर्थिक परिस्थितियों में दुलर्भ संस्थानों का अधिग्रहण करने की क्षमता बढ़ाने के लिए, इन कबीला वंश समुदायों (Clans) को अपने सदस्यों की सदस्य संख्या में वृद्धि करना, इन वंश/कबीले समूहों की एक जरूरतन कार्यप्रणाली होती है लेकिन आर्थिक विकास और समृद्धि की अवधि के दौरान इन राजनीतिक कबीला वंश समूहों का महत्व घर जाता है। इस प्रकार किर्गीस्तान, ताजिकिस्तान और उज्बेकिस्तान की राजनीति में एक मजबूत व अधिक सक्रिय बल हो सकता है क्योंकि वहां आबादी गरीब है तथा उनकी अर्थव्यवस्थाएं गिरावट में रही है और उन्होंने स्थिर व बहुत धीमी गति में विस्तार किया है। पहले दशक में, कजाखस्तान में ऊर्जा, बैंकिंग, रियल स्टेट और निर्माण क्षेत्र में अत्यधिक तेजी ने देश को एक क्षेत्रीय आर्थिक महाशक्ति में बदल दिया, जिसने की साथी पड़ोसी देशों से भी प्रवास्ति मजदूरों को हजारों की संख्या में यहां आने के लिए आकर्षित किया। यह समृद्धि ही कॉलिस के तर्क में कजाखस्तान को कबीला/वंश समूह राजनीति को कम जीवंत बनाती है।

हालांकि कैथलिन कॉलिस का पहले का काम (2002,2003,2004 कजाखस्तान में कबीला समूह जो कि पूरे मध्य एशिया की राजनीति को प्रभावित करते हैं, को ''राजनीति व आर्थिक शक्तियों को प्राप्त करने का सबसे प्राथमिक स्रोत'' बताता है **(Collins 2004:226)** । कबीला वंश समूह ने 'आर्थिक कमी संसाधनों की विपन्नता और कमजोर औपचारिक संस्थानों' से ग्रसित व बाधित राज्य के अंगों व कार्यों पर नियंत्रण जमा लिया। कालिस समझाती है कि ''अनौपचारिक रूप से कार्यान्वयन' करते हुए ''ये संघर्षरत कबीले/वंश समूह आपस में केंद्रीय राज्य के कार्यालयों व संसाधनों का बंटवारा किए' **(Collins 2002:143)** और इसलिए कबीला राजनीति से ऊर्जा–संसाधनों से भरपूर कजाखस्तान भी प्रतिरक्षित नहीं था **(Collins 2004:260)**। कॉलिस इस तरह कबीला/वंश समूह गुटों को राज्य के प्रतिस्पर्धियों व विरोधियों के रूप में समझती है।

दूसरी तरफ स्कात्ज कहता है कि कजाखस्तान ने कबीला/वंश समूह बहुत आवश्यक रूप से राज्य के खिलाफ नहीं खड़े हो रहे थे। यह इसलिए क्योंकि कबीला समूहों में संतुलन बनाकर, राज्य व कबीला/वंश समूहों में दुश्मनी को कम किया गया था। जब यह 'कबीला संतुलन' सफलतापूर्वक पूरा किया गया तो कोई भी एक कबीला/वंश समूह दूसरे कबीले पर हावी नहीं होता और कजाखस्तान में प्रकट कबीला संघर्ष टल गया। इस प्रकार, स्कात्ज (Schatz) तर्क देता है कि कबीलों में दिखाई व समझे गए संघर्ष की कमी और किसी कबीले (Clan) के एकतरफा वर्चस्व की वजह से हम यह अनुमान नहीं लगा सकते कि, कबिले/वंश समूह सार्वजनिक व निजी संसाधनों के वितरण में कोई भूमिका नहीं निभाते हैं। इसके काफी विपरित वंश/कबीला समूह राजनीति तब भी आंतरिक रूप से चल रही हो सकती है जबकि इसके प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं दे रहे हों। **(Schatz 2005)**

यहां स्कात्ज (Schatz) व कोलिंस (Collins) कजाखस्तानी राजनीति को समझने के लिए वंश/कबीला समूह अवधारणा दृष्टिकोण की प्रमुख कमीयों की तरफ ध्यान खींचते हैं। इस अध्ययन में ये दोनों कबीला/वंश समूह तंत्र के राजनीतिक परिणामों के संबंध को स्पष्ट तौर पर अभी तक संदर्भित नहीं कर पाए **(Raodniftz 2007)**। स्कात्ज का तर्क शायद सही हो सकता है, प्रकट कबीले/वंश में संघर्ष की अनुपस्थितित को सबूत के रूप में नहीं लिया जा सकता कि कबीले/वंश समूह (Clan) राजनीति में पूर्णतः कोई भूमिका नहीं निभाते या इतनी ही सीमा पार कर सकते हैं। यद्यपि, जिन प्रत्यक्ष परिणामों में इनको एक कारण वश कहानी बताने के लिए जोड़ा जा सकता है तथा हमें कई उपायों के साथ छोड़ दिया जाता है जिसके द्वारा हम कबीलों को अन्य कारकों के सापेक्ष रख सकें। जैसे स्कात्ज कहते हैं कि, ''कबीला/वंश समूह राजनीति पर्दे के पीछे थी व रिश्ते आपारदर्शी थे।'' दूसरी जगह वह बताते हैं कि, ''हालांकि मैंने उन्हें गिनती करने की कोशिश की, लेकिन कबीला या वंश समूह वे राजनीतिक प्रतिभास है जिसको मापना दुष्कर है'' **(Radniftz 2007, Schatz 2004:109-122)**। ये शर्तें न केवल अनुभवतः दस्तावेज किए हुए कबीला/वंश समूहों की व्यावहारिकता की समस्या बिंदु को उजागर करती हैं तथा उनकी प्रत्यक्ष राजनीतिक महत्व को भी दर्शाती है लेकिन बल्कि ये इस दावे पर संदेह भी पैदा करती हैं कि कबीले/वंश समूह कजाखस्तान की राजनीति में निसंदेह एक प्रधान कर्ता (कारक) हैं। हालांकि कबीले या वंश समूह एक सामाजिक संस्था के रूप में कजाखस्तान की आंतरिक देशीय राजनीति में, एक भूमिका निभा सकते हैं या निभाते हैं, यह योगदान/भूमिका ना तो नियत (definitive) **(Cummings 2005)** हैं और ना ही सतत (constant) है **(Schatz 2005, Kyrbasov 2007)** कोलिंस के विपरित, स्कात्ज यह नहीं कहता है कि कबीला/वंश समूह संघर्ष (Clan Conflict) ही कजाखस्तान के राजनीतिक परिणामों के पीछे मौलिक शक्ति/बल है। यद्यपि स्कात्ज बहस

करता है कि कबीला/वंश 'वजह' है और सुझाता है कि कबीलों/वंश समूहों का वहां के राजनीतिक जीवन पर एक सार्थक प्रभाव है।

ग. राष्ट्रपति नजरबायेव की कबीला/वंश समूह राजनीति व पितृसत्तात्मकता राजनीति :–

कजाखस्तान की राजनीतिक परिस्थितियो के विश्लेषण को, राष्ट्रपति नजरबायेव की 'अपने राजनीतिक सत्ता अधिकार को मजबूत करने और देश की जटिल कबीला/वंश समूह प्रणाली के प्रबंधन' रणनीति को बिना व्याख्यित किए नहीं समझा जा सकता। दरअसल, कजाखस्तान की राजनीति के बारे में कई पर्यवेक्षकों ने बताया है कि स्वतंत्रता के प्रथम दशक के शुरूआत से ही नजरबायेव की राजनीतिक सत्ता को वास्तविक खतरा, का सैधांतिक वामा पक्ष या दाये पक्ष से नहीं था, बल्कि अपने अंदर की ही कजाखस्तानी कबीला/वंश समूह राजनीति से हैं, जो कि लोगों को ना सिर्फ सैद्धांतिक तौर पर सम्मिलित या जोड़ती है बल्कि जाति/वंश संबंधी भी पंक्तिबद्ध करती है **(Schatz 2004:85, Aschimtz 2003)**। जैसे फरमैन कहता है कि, ''कजाखी समाज ही है, जिसने कबीलाई वंश समूह या हॉर्ड संबंधों को संरक्षित किया है और जो पहले के सत्ताओं (रूसियों के समय) में भी 'विखंडित' व 'निस्सहाय' नहीं हुआ। दरअसल साम्यवाद के बाद से ही वहां हमेशा से कजाखस्तान के कबीला/वंश समूहों व औपचारिक संस्थाओं के मध्य परस्पर संवाद स्थापित किया गया है। महान् होर्डे (Great Harde) के साथ संबद्ध कबीले/वंश समूह (Clan) 1920 के दशक के बाद से ही गणराज्य को नियंत्रित करते थे। **(Furman 2005:204-231)**

सन् 1990 के बाद कजाखस्तान की स्वतंत्रता के बाद से ही नजरबायेव के कबीले या वंश समूह (Greater Horde) महान होर्डे/समूज को बाकी कबीले/वंश समूहों से गहरे व गंभीर प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। विशेष रूप से मध्य होर्डे/झूज (Middle Zhuz) कबीला समूहों द्वारा कड़ा

प्रतिरोध झेलना पड़ा। हालांकि राष्ट्रपति द्वारा इसका जवाब अन्य हार्डे/झूज कबीलों/वंश समूहों के प्रतिनिधियों को नियुक्त करके दिया गया लेकिन यह नियुक्तियां रणनीतिक महत्वहीन पदों पर की गई। सन् 1999 तक, मुख्य विपक्षी नेताओं अन्य होर्डे/झेज कबीलों के रूप में वर्तमान शासन द्वारा सहयोजित किए जा रहे थे और राजनीतिक सत्ता राष्ट्रपति नजरबायेव के हाथों में एकाग्रभाव से संकेंद्रित थी। नजरबायेव ने अपने ही अंनदरूनी/आंतरिक मंडली/दायरे से उत्पन्न/उभरते विपक्ष के प्रतिरोध को खत्म करने की कोशिश में, अपने ही कबीले /वंश समूह (Clan) पर ध्यान केंद्रित किया। **(Schimitz 2012:31, Schatz 2004:240, Elena Maltseva and Schatz 2012:57)**

कजाखस्तान के प्रथम दशक के काल में कबीला/वंश समूह राजनीति के नजरबायेव व उसके कबीले/वंश से संबंधित होने का मुख्य कारण उसकी दोनों बेटियों के पति थे। ये दोनों थेष राखत अलीव (Rakhat Aliev) और तिमुर (Timur) जो कि क्रमशः सन् 1997 में पहला टैक्स निरीक्षक के प्रमुख कें रूप में और बाद में राष्ट्रीय सुरक्षा समिति के उप–प्रमुख के रूप में नियुक्त किया गया तथा दूसरे राज्य राष्ट्रीय तेल कम्पनी (Kazakh Oil) के उप प्रमुख के रूप में नामित किया गया। उन दोनों ने नजरबायेव के आधिकारिक उत्तराधिकारी बनने की कुछ उम्मीदें रखी थी। और उनके पास, अपने स्वयं के मीडिया आउटलेट वाले हित समूहों और राष्ट्रीय प्रशासन व सरकार में उनके अपने प्रतिनिधियों के समर्थ समूह थे। मगर इन दोनों में से एक राखत अलीव (Rakhat Aliev) ने नजरबायेव की स्थिति को खुलेआम चुनौती देने की कोशिश की। अलीव (Aliev) जो कि राष्ट्रपति नजरबायेव की बेटी दरीगा (Dariga) का पति था, ने कजाखस्तान के राष्ट्रपति सहित, पूरे अभिजात वर्ग की समझौता सामग्री को संचित कर लिया था। अलीव (Aliev) कि इस चेष्टा ने राष्ट्रपति नजरबायेव की आंखे खोल दी तथा राष्ट्रपति ने दामाद की तरफ से आ रहे खतरे को भांपकर उसे

प्रतिबंधित कर दिया। उसे राजनीति से दूर रखने व अपनी रक्षा करने के लिए नजरबायेव ने अलीव (Aliev) को आस्ट्रिया मे निर्वासित करके राजदूत बनाकर भेज दिया तथा पार्लियोमेंट में एक कानून बनाया जो कि ''कजाखस्तान राज्य के पहले राष्ट्रपति पर'' था जिसमें उसने पवित्रता को जांचने हेतू शपथ की पेशकश की। **(Schatz and Mooltseva 2012:58)**

राष्ट्रपति नजबायेव के नेतृत्व में राजनैतिक केंद्रीकरण की प्रक्रिया जो कि 1990 के शुरूवाती दशक दौर में प्रारंभ हुई द्वारा एक अत्यधिक केंद्रीकृत व्यवस्था के परिणाम के रूप में सामने आई। जिसमें कि राष्ट्रपति पदानुक्रम के शीर्ष पर अवस्थित था तथा सभी शासन शक्ति की संरचनाओं व व्यवस्थाओं को नियंत्रित करता था। साथ ही साथ क्षेत्रीय अधिकारियों और सभी कबीला/वंश समूहों के सदस्यों को भी नियंत्रित करता था। यह केवल सत्ता शक्ति के पूर्व मौजूद वितरण से ही संभव नहीं हो पाया था जिसने की नजरबायेव को आगे भी उकसे हाथों में शक्ति को मजबूत करने के अवसर की पेशकश की थी बल्कि यह नजरबायेव की नेतृत्व शैली के कारण था और उसके द्वारा विभिन्न अनुनय तकनीक व तरीकों के प्रभावी उपयोग करने की कार्यकुशलता के वजह से था।

अध्याय – चतुर्थ

कजाखस्तान में कबीला/वंश कुल समूह का सरकार में प्रतिनिधित्व और राजनीतिक व्यवस्था

इस अध्याय में वंश/कुल/कबीलाई समूह की कजाख्स्तान की राजनीतिक व्यवस्था व सरकार में भागीदारी व हिस्सेदारी को स्पष्ट किया है। इसमें लोकतांत्रिक संस्थानों, विधायिका, राजनीतिक पाटियां, (ज्यूडिशरी) न्यायपालिका तथा मिडिया में वंश/कुल समुह राजनीति की भूमिका का भी संक्षिप्त रूप से अध्ययन किया गया है। यह कजाख गणतंत्र के राजनीतिक व्यवस्था के लोकतांत्रिक ढांचों की कमियों व उन पर वंश समूह राजनीति की वजह से पड़े वाले प्रभाओं को भी दर्शाता है। यह अध्याय राजनीतिक व्यवस्था के कालक्रम के कजाखस्तान की स्वतंत्रता से लेकर सन् 2001 तक के दौरान ही विश्लेषित करता है।

क. कजाखस्तान में राजनीतिक व्यवस्था का विकासः स्वतंत्रता से लेकर 2001 तकः–

यह अध्याय, कजाखस्तान में अनौपचारिक रूपों के राजनैतिक व्यवहार संबंध और उनके बीच के संबंधों और स्वतंत्रता के बाद के औपचारिक संस्थाओं के विकास तथा मध्य एशियाई देशों के अंदर शासन के प्रतिरूपों विशेषकर उनके लोकतांत्रिक, अधिनायकवाद के विकास की व्याख्या करता है तथा कजाखस्तान में मौजूद वंश/समूह राजनीति का व इस तरह के अनौपचारिक समूहों का औपचारिक सरकारी व राजनीतिक व्यवस्था केंद्रों पर प्रभाव प्रदर्शित करता है। इस अध्याय में उत्तर सोवियत कजाखस्तान के राजनीतिक विकास व राजनीतिक व्यवस्था का अध्ययन किया गया है तथा यहां कजाखस्तान के 'स्वयं की अधिनायकवादी व्यवस्था' (Self Authoritarian System), जिसमें राष्ट्रपति की शक्तियां, संसद व अन्य सभी संस्थानों पर भारी पड़ती हैं।

इसमें संविधान, मिडिया, संसद, राजनीतिक पार्टियों व नागरिक समाज में स्थिति का अध्ययन किया गया है।

1991में मिली अपनी स्वतंत्रता के बाद कजाखस्तान गणतंत्र निम्नलिखित कालनुक्रमों से होकर आज के आधुनिक दौर तक पहुंचा हैः–

1. 1991 से 1995 का सोवियत संघ के विघटन के बाद का काल :–

विशेष लक्षण

- ''पश्चिम की तरह'' का लोकतांत्रिक प्राकृतवाद या छायावाद
- सोवियत प्रशासनिक व्यवस्था जो कि कमांड–आधारित थी, कुछ तत्वों का अवधारण करना। आम जनता के बीच असाधारण राजनीतिक गतिविधियां
- राज्य के विधायी अंगों के प्रभाव में कटौती करते हुए सामानांतर तौर पर राष्ट्रपति की सत्ता व शक्तियों को मजबूत करने की क्रमिक शुरूआत।
- सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक विकास के लिए एक इष्टतम मॉडल की खोज शुरू

2. 1995 से 1999 तक राज्य सत्ता का निश्चित मानवीकरण :–

विशेष लक्षण

- संविधान में राष्ट्रपति पद के लिए स्थापित शक्तियों का विस्तारण
- विभिन्न प्रभावकारी दबाव समूहों के बीच सत्ता के संतुलन के संरक्षण के लिए एक तंत्र के अंतिम गठन का प्रयास।
- कजाखस्तान के ''विशेष पथ'' के सिद्धांत को लोकप्रिय करना।
- ''पहले अर्थव्यवस्था फिर राजनीति'' की एक शोध के बाद राजनीतिक और सामाजिक–आर्थिक विकास के लिए एक 'एशियाई मॉडल' का विकल्प अपनाया
- सरकार और विपक्ष के बीच विवादास्पद टकराव की शुरूआत

3. 1999–2001: अस्थायी स्थिरीकरण :–

विशेष लक्षण

- रूढ़िवादी राजनीतिक व्यवस्था के साथ आर्थिक सुधारों की त्वरित गति
- स्थापित सत्तावादी प्रणाली का एक संकेतक के रूप में राष्ट्रपति की शक्तियों का विस्तार
- राजनीतिक अभिजात वर्ग के अस्थायी स्थिरता

[k- 1991 ls 2001 ds nkSjku oa'k dchyk lewg dh dtk[kLrku dh ljdkj esa Hkwfedk %&

कजाखस्तान एक एकात्मक गणतंत्र है, (Unitary republic) जो कि सोवियत संघ के विघटन के बाद (1991) से पहली बार और अब तक केवल एकमात्र राष्ट्रपति नूरसुल्तान अबीशेविच नजरबायेव द्वारा शासित है। उनका राजनैतिक, कैरियर, सोवियत संघ के शासन काल में, कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ कजाखस्तान के केन्द्रीय कमेटी के प्रथम सचिव दिनमुखाम्मेद कुनायेव (Dinmukhammed Kunaev) **(Dmitri Furman 2005:197)** के सानिध्य में शुरू हुआ। तब से आज तक एक कठोर राष्ट्रपति सत्तावाद की प्रसार कजाखस्तान की राजनीतिक व्यवस्था व सरकारी तंत्र में लोकतंत्र के एक अलग स्वरूप को हमारे सामने रखता है। सन् 1991 अपनी स्वतंत्रता से लेकर सन् 2001 तक के प्रथम दशक में कजाखस्तान में वंश समूह तथा कबीला समूह (Clan Politics) राजनीति का प्रभाव लगभग सभी सार्वजनिक सरकारी संस्थाओं और राजनैतिक व्यवस्थाओं पर पड़ा। ये अनौपचारिक व्यवस्थाएं विभिन्न सामाजिक–आर्थिक व राजनीतिक शक्तियों को अपने अंदर समेटे रहती है जो स्वतंत्रता के बाद कजाखस्तान में बनी औपचारिक संस्थाओं (Formal Institutions) के व्यवस्थात्मक ढांचे पर महत्वपूर्ण व परिवर्तनकारी प्रभाव डालती है।

कजाखस्तान में झूज/हॉर्डे कबीला समूह की कोई कार्यात्मक संगठनात्मक संरचना नहीं थी जैसे कि स्कॉटलैण्ड में मध्यकालीन व्यवस्था

थी। कजाखस्तान कबीला/वंश समूह एक सोचने का तरीका ज्यादा है। जिसमें वंशावली व व्यक्ति समूह में चल रही प्रक्रियाओं को एक ही वंशावली कबीला समूह की समानता के एक ही चश्में के माध्यम से व्याख्या की जाती है। सोवियत समय में बने, सामाजिक व्याख्या का यह पारंपरिक सिद्धांत, राजनीतिक प्रक्रियाओं की क्रमिक फेरबदल की प्रक्रियाओं की पहचान करके सार्वभौमिक व्याख्या करने के तरीके में बदल गया। उच्च झूज (Greater Zhuz) के कजाख जैसे कजाखस्तान की कम्युनिस्ट पार्टी के पहले सेक्रेट्री दिनमुखामेद कुनायेव इस पौराणिक समूह से थे। जब से वे सतई (Sty) जनजाति, जो कि उच्च झूज का भाग थी से संबंधित थे और वे लोग उन्हें अपने अंदर का एक अपना सदस्य'' समझते थे। मध्य झूज/हॉर्डे (Middle Zhuz) कजाख विपरितता उनकी 'उनका अपना' नहीं समझते थे।

आज तक, कजाखस्तान के सामाजिक और राजनीतिक प्रक्रियाओं में भाग लेने के लिए व व्याख्या करने के लिए कबीला/वंश समूह महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। जनता/सार्वजनिक अधिकारियों व सरकारी माध्यमों में आवेदन व चयन और कैरियर मार्गों में आवेदन हेतु वंशावली/कबीला समूह महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक कारक हैं। वंश/कुल–कबीला समूह घटक (तत्व) ही उस या इस पद हेतु एक व्यक्ति के दावे की नींव रखते हैं, उसकी इच्छाओं को पोषित करते हैं और वह राजनैतिक जीवन में वे एक स्वतंत्र भूमिका निभाने के लिए अपनी क्षमता का निर्धारण कर पाता है। कजाखस्तान में जहां राष्ट्रपति नूरसुल्तान नजरआयेव ने अपना एक स्वशक्ति साम्राज्य स्थापित कर लिया है। वंश/कबीला समूह विवेचना या विचार से राष्ट्रपति द्वारा अपने फायदे के लिए नीतियों का निर्माण और प्रतिद्वंद्वता को खत्म करना, और नीतियों में हेरफेर कर राष्ट्रपति को अधिक सक्षम बनाना, यहां कार्पोरेट समेकन, या राजनीतिक विरोधियों की उपस्थिति सरकार के अपने भीतर ही होना, प्रमुख राजनैतिक चरित्र है।

पहले जब कुनायेव (Kunaev) कजाखस्तान में पार्टी का नेता था तो वह निम्न या छोटे झूज/हॉर्डे (Small Zhuz/Horde) के सदस्यों को,

सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी के पोलित ब्यूरो द्वारा नियुक्त करने के लिए गणराज्य कर सका। क्योंकि, वह जानता था कि वे संख्या में बहुत ही कम थे, इसलिए ग्रामीण इलाकों में जमे रहनेके कारण और इसलिए राजधानी में प्रभाव में कमी से, वे कभी भी या तो उसे सत्ता में चुनौती देने के लिए या उसके उत्तराधिकारी बनने के लिए सक्षम नहीं हो पाएंगे। कुनायेव (Kunaev) का प्रमुख विरोधी मध्य झूज/होर्डे (Middle Zhuz) से संबंधित आया। वह उन्हें अपदों पर आसीन रखता था जो कि महत्वपूर्ण जान पड़ते थे। लेकिन वास्तव में वे दूसरी श्रेणी के पद थे। जैसे मंत्रियों की सभा का अध्यक्ष एक क्षेत्र का पार्टी का मुखिया और वह झूजों/होर्डे को कभी भी महत्वपूर्ण कार्यों की पूर्ति हेतु नियुक्त नहीं करता था; जेसे वह कजाखस्तान की कम्युनिस्ट पार्टी के केन्द्रीय समिति के पोलित ब्यूरों में उनको नियुक्त नहीं करता था। इसके बाद आए स्वतंत्र कजाखस्तान के राष्ट्रपति नजरबायेव ने भी कुनायेव की किताब से ही अपनी नीतियों को चलाने की विधा को समान रूप से अपनाया। जब कजाखस्तान की स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रपति नजरबायेव, मध्य झूज /हॉर्डे (Middle Zhuz) जो कि सबसे ज्यादा जनसंख्या में और शहरीकरण के प्रभाव में था की उदासियों व निराश राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं को जानते थे और उस वर्ग के राजनैतिक अभिजात और बौद्धिक समूह की इच्छाओं व आकांक्षाओं का ख्याल रखते थे। वह माध्यम झूज (Middle Zhuz) के प्रतिनिधयों को, यह साबित करने के लिए कि उनकी व्यक्तिगत नीतियां कितनी संतुलित हैं हेतू अपने नजदीक बनाए रखते थे। यह भूमिका तब उप–राष्ट्रपति ईरिक असानबायेव (Erik Asanbaev) जो कि बाद में ‘‘पदावनत’’ (Demoted) करके जर्मनी के राजदूत बनाए गए, को सौंपी गई थी। बाद में प्रधानमंत्री अकाझान कजेगेल्डीन (Akezhan Kazhegeldin) की नियुक्ति यह दर्शाने के लिए की गई की राष्ट्रपति की नजर में सब झूज–वंशावलियां (Zhuz-Clans) समान हैं। मध्यम झूज (Middle Zhuz/Horde) के अभिजात राजनीतिज्ञ व बौद्धिक वर्ग की राय

में, इस नियुक्ति ने कुछ भी प्रमाणित नहीं किया, क्योंकि कजेगेल्डीन (Kazhageldin) मध्यम सूज (Middle Zhuz) की एक बहुत कम प्रभावशाली जनजाति, उवाक कबीला जनजाति से (Uak Tribe) संबंधित था। मध्यम झूज/हॉर्डे प्रशासनिक ढांचे या नौकरशाही को जो कि कुनायेव (Kunaev) के समय में भी थी तथा नजरवायेव के समय में भी थी, एक आज्ञाकारी प्राणी या सृजन, कथित तौर पर सरकार के ऊपरी स्तरों में झूज वंशावली (Zhuz-Clan) का एक बराबर प्रतिनिधित्व का प्रतीक माना गया था। लेकिन सच्चाई हमेशा इसके विपरित रही। आजादी के चार साल बाद ही जो झूज (i) प्रमुख पदों पर नियुक्त थे उनमें ऊन महान/बड़े झूज (Higher/Greater Zhuz) के प्रतिनिधि थे और उनमें भी नजरबायेव के रिश्तेदार ज्यादा थे; और या फिर निम्न झूज (Small Zhuz) के लोग थे। जो बाकी बचे थे और जनता की राय में नजरों में सत्ता के लिए वैध दावेदारी नहीं कर सकते थे वे राजनीतिक जिंदगी में एक स्वतंत्र भूमिका निभाने लगे थे। यह तथ्य/अवधारणा जो कि सम्प्रभु कजाखस्तान के पहले कुछ वर्षो में कम देखने को मिली लेकिन समय बीतने के साथ, जैसे–जैसे सत्ता–शासन की सारी शक्तियां राष्ट्रपति नजरबायेव के हाथों में लगातार बढ़कर सिमटने लगी, वैसे–वैसे यह वृहत–स्तर पर दिखाई देने लगी।

सन् 1998 में उच्च झूज (Greater Zhuz) के बहुत से सदस्य कजाखस्तान में ऊंचे पदों पर आसनी थे जो कि निर्णय लेने की वास्तविक शक्ति या क्षमतावान थे। इनमें खुद राष्ट्रपति रजरबायेव और उनके नजदीकी संबंधी रिश्तेदार व सदस्य भी इसी वंश/कुल समूह से थे। राष्ट्रपति के सलाहकार नुरताव अबेयकायेव, रक्षा मंत्री मुख्तार अल्तयनबेक (Mukhtar Altynbav), तथा सिनेट के स्पीकर/सभापति उमीरबेक बैगेल्डी (Umirbek Baigeldi) और मिडिया और सूचना प्राद्योगिकी की निर्देशक अब्तेनबेक सास्येम्बायेव (Altyanbek Sarsembaev) भी इसी ऊंच झूज (Greater Zhuz) का हिस्सा थे। इससे पता चलता है कि कजाखस्तान के आजादी के

बाद के प्रथम दशक के मध्य में ही कजाखी राजनीतिक व्यवस्था में वंश/कबीला/कुल समूह राजनीति ने अपनी पैठ बना ली थी। इसमें बहुत से जिम्मेदारी के पदों पर एक ही वंशावली ग्रेटर/ऊंच झूज (Higher Zhuz) का कब्जा दिखता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि अन्य वंश कुल–कबीला समूहों का प्रभुत्व कजाख राजनीति में थोड़ा कम प्रतीत होता है। लेकिन मुख्यतः यह साफ है कि वंश/कुल समूह (Clan) ही कजाखस्तान की आंतरिक राजनीति व वातावरण को तैयार करते हैं जो कि कजाख की राजनीतिक व्यवस्था का हिस्सा बनकर वहां के लोकतांत्रिकरण की प्रक्रिया को संचालित करने के लिए कर्तव्यपरायण तरीके से आगे बढ़ रहे हैं। **(Nurbulat E. Masanov 2008, Vol-4, issue 3)**

निम्न झूज के प्रतिनिधि (Small Zhuz/Horde) भी 1990 के मध्य समय सरकार के उच्च पदों पर आसानी थे, जैसे प्रधानमंत्री नूरलान बालगीमबायेव, राज्य सचिव अबिस केकिलबायेव, मजलिस (संसद का निचला सदन) के सभापति मरात ओसपानोव (Marat Ospanov) और राष्ट्रपति के वैज्ञानिक–विश्लेषण केन्द्र के निर्देशक मरात ताजीन (Marat Tazhin) भी इसी निम्न झूज (Lower/Small Zhuz) वंशावली समूह (Clan) से संबंधित थे।

1990 के दशक के मध्य में मध्यम झूज/हॉर्डे (Middle Zhuz/Harde) का उच्च सरकारी पदों पर खास प्रतिनिधित्व नहीं था। हालांकि यह अजीब प्रतीत होता है कि कैसे हमेशा की तरह, पूरी तरह औपचारिक तौर पर, अल्माटी (Almaty) को जो कि उच्च झूज के परम्परागत कजाख क्षेत्र में स्थित है और उस समय कजाखस्तान की राजधानी भी थी। उस अल्माटी शहर को राजधानी बदलकर, मध्य झूज कजाखों के (Middle Zhuz) परम्परागत भू–क्षेत्र अस्ताना/अकमोला (Akmola) में राजधानी शहर के रूप में स्थानांतरित कर दिया गया। उस समय के सभी मध्य झूज/हॉर्डे के प्रमुख सबसे पहचाने जाने वाले राजनीतिक नेता, या तो राजदूत के तौर

पर ''देश निकाले'' या ''निर्वासन'' के दौर से गुजर रहे थे। और या फिर कार्य क्षेत्र से बाहर कर दिए गए थे। जैसे नजरबायेव के पहनों पूर्व–विरोधी ऑल्जास सुलेईमेनोव (Olzhas Suleimenov) को इटली, पूर्व उप–राष्ट्रपति इरिक असानबायेव (Erik Asanbaev) को जर्मनी तथा पूर्व उप–प्रधानमंत्री बालताश तुरसुनबायेव (Baltash Tursunbaev) को तुर्की से निर्वासित कर दिया गया और पूर्व प्रधानमंत्री उकेझान कजेगेल्डीन (Akezhan Karhegeldin) को कार्य से निष्काषित कर दिया गया। ये सब मध्य झूज के प्रभावशाली चेहरे थे। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि मध्य झूज 1990 के दशक का सबसे प्रभावशाली विपक्ष के रूप में मजाखस्तानी राजनीतिक परिदृश्य में मौजूद वंशावली/कबीला समूह (Clan group) था। **(Nurbulat E.M. Masana Publication 1998, Prism Volume: 4, Issue: 3)**

जैसे–जैसे राजनीतिक शक्तियां/सत्ता राष्ट्रपति नजरबायेव के काल में निरंतर उनके हाथों में सिमटती चली गई। झूज वंश/कुल समूह को बराबर प्रतिनिधित्व का प्रयास वैसे–वैसे मधिम पड़ता चला गया। पहले का सोवियत संघ की तुलना में पहले चार साल तक तो गणतंत्र कजाखस्तान में इन वंश समूहों को बराबर प्रभुसत्ता प्रतिनिधित्व प्राप्त हुआ लेकिन उसके बाद 1995 के संवैधानिक बदलाव के बाद यह प्रयास सकारात्मक राष्ट्रपति शासन एवं उसके रिश्तेदारों व नजदीकी लोगों के विशेषाधिकार तथा राजनीतिक समूहता के बिखराव की ओर मुड़ गया तथा इन वंशावलियों में खुद अपने बीच आर्थिक–राजनैतिक प्रतिद्वंद्वता का तीक्ष्ण दौर शुरू हुआ। 1995 के बाद अब राज्य का आधुनिकीकरण व औद्योगिकीकरण तीव्र गति से शुरू हुआ जिसमें अनौपचारिक संस्थाओं का महत्व घटा तथा औपचारिक संस्थानिगत विकास का लोकतांत्रिकरण का नया युग प्रारंभ हुआ। हालांकि इनकी महत्ता पूर्णतः समाप्त नहीं हुई बल्कि यह एकल व्यक्तिवादी पितृसत्तात्मकता (Neopatrononialism) तथा राज्य के अधिकानायकवाद (Autharitarianism) की तरह बढ़ना शुरू हुआ जिसमें एक वंशावली का

अधिपत्य ना होकर विभिन्न वंश समूहों से व्यक्तिगत तौर पर प्रतिनिधित्व व सत्ताप्रार्यणता का स्वरूप राजनीतिक परिदृश्य में वृहत स्तर पर निर्देशित हुआ।

ग.आधुनिक कजाखस्तान की राजनैतिक संस्थाए / व्यवस्थाएंः–

1991 के सोवियत विघटन के बाद अस्तित्व में आए लोकतांत्रिक कजाखस्तान गणतंत्र में राजनीतिक व्यवस्थाएं व संस्थाएं विभिन्न चरणों से गुजरते हुए आधुनिक कल्याणकारी राज्य के मानकों को छूने में कुछ हद तक सफल हुई है। कजाखस्तान एक एकात्मक गणतंत्र के रूप में विभिन्न राजनीतिक चरणों के दौर से संवैधानिक शासन सत्ता के लोकतांत्रिकरण को आत्मसात कर पाने में सफल हुआ है। सन् 1991 से लेकर 2001 तक के दशक में कजाखस्तानी राजनैतिक विकास के विभिन्न आयामों का विस्तृत ब्यौरा अग्रलिखित है। यहां जब कजाखस्तान के राजनीतिक संस्थाओं एवं व्यवस्थाओं का अध्ययन किया जा रहा है तो इसमें, वहां के संविधान की व्याख्या/विवेचना करना जरूरी है, जिसमें कि कजाख नागरिकों के अधिकार एवं कर्तव्य स्वतंत्रताएं वहां के राष्ट्रपति के प्राधिकार को निर्धारित करते हैं तथा संसद, न्यायालय, सरकार, राजनीतिक पार्टियां, नागरिक समान और मिडिया के बारे में भी प्राधिकार निर्धारित की गई है।

स्वतंत्रता के शुरू में कम्युनिष्ट विरासत पर काबू करके, स्वतंत्रता के बाद राज्य के लोकतांत्रिकरण की प्रक्रिया को तेज करके, सामाजिक–राजनैतिक और आर्थिक विकास की उम्मीद के वर्ष थे। मार्था ऑल्कॉट (Martha Olcott) इन वर्षों को वर्णित करते हुए कहती हैं कि, ‘‘अपने स्वतंत्रता के पहले कुछ सालों में, देश के सत्तावान कुलीनों ने लोकतंत्र के संक्रमण के विचार के साथ कम से कम छेड़खानी की थी तथा चल रहे व्यापक आर्थिक सुधारों को पूरी तरह से समर्थन किया।’’ **(Olcott 2002, 2)**

कजाखस्तानी कम्युनिष्ट पार्टी के प्रथम केंद्रीय कमेटी सचिव कुमायेव (Kunaev) के दिसंबर 1986 में सोवियत संघ काल के दौरान ही विभिन्न धांधलियों व वंशवाद या कबीलावाद में उलझ जाने तथा उसके निष्काषित होने के बाद एक रूसी गेनाडी कोलबिन (Gennady Kolbin) को कजाखस्तान का शासन सौंपा गया। बाहरी होने की वजह से कोलबिन को कजाखस्तान में घोर विरोध झेलना पड़ा। उसकी नियुक्ति कजाखस्तान की राजधानी व अन्य शहरों में हिंसात्मक प्रदर्शनों का परिणाम बनी। इससे प्रभावित होकर मास्को के शासन ने जून 1989 में नुरसुल्तान नजबायेव को कजाख केन्द्रीय कमेटी का प्रथम सुल्तान बना दिया। **(Furman 2004: 198-99)** नजरबायेव ने अपने चालाक राजनैतिक कौशल से सत्ता–शक्ति की तीव्र ईच्छा को शुरू के राजनैतिक जीवन में ही प्रदर्शित कर दिया था। आजादी के बाद के 1 दिसंबर 1991 के हुए पहले राष्ट्रपति चुनाव में ही नजरबायेव ने, शासन व्यवस्था के दुरूपयोग द्वारा अपनी जीत को सुनिश्चित करके, कजाखस्तान की राजनीति की दिशा को स्वःसंचालित करना शुरू कर दिया। **(Furman 2004: 199-200)** इस चुनाव के दो हफ्ते बाद ही 16 दिसंबर, 1991 को कजाखस्तान औपचारिक तौर पर, सोवितय विघटन द्वारा उससे अलग होकर एक नव स्वतंत्र देश बन गया।

ग(1). कजाखस्तान में संविधान विकास का विवरण, 1991 से 2001तक :–

स्वतंत्र कजाखस्तान के संविधान विकास का दौर वैसे तो 1993 के संविधान निर्माण के बाद प्रांरभ हुआश लेकिन इसका आधार इसके पूर्व के सोवियत शासन काल में भी थोड़ा बहुत मौजूद मिलता है। कजाखस्तान के ऐतिहासिक रूप से, 1993 के संविधान से पहले तीन विभिन्न संविधान हुए जो कि सोवियत संघ के शासन द्वारा इस क्षेत्र की राजनीतिक व सामाजिक प्रक्रियों को संचालित करने के लिए लगाया गया। **(Asheulov 2001:22)**

प्रथम संविधान 1926 में बना कजाखस्तान, रूसी सोशलिस्ट संघीय गणराज्य का एक स्वायत्त गणतंत्र हुआ करता था। बाद में जब 1937 में कजाखस्तान पूर्ण–रूपेण, सोवियत संघ (USSR) का एक गणतंत्र बन गया, तब एक नया संविधान अपनाया गया। इस संविधान में, कजाखस्तान का स्वैच्छिक व बराबर एकीकरण, दूसरे गणराज्यों की तरह सोवियत संघ (USSR) में कर दिया गया। इसके साथ–साथ अपनी संप्रभुता एवं क्षेत्रीय अखंडता को भी कजाखस्तान भोग सकता था। इसमें संविधान द्वारा श्रम अधिकार, आराम, पेंशन, सेवानिवृत्ति भत्ता, शिक्षा, बोलने की व मिलने की आजादी और बहुत से आधारभूत मानव अधिकारों को सुरक्षित व संरक्षित किया गया। विडम्बना यह थी कि यह संविधान स्टालिन के दमन और शुद्धिकरण (Purges) नीतियों के उस कठिन दौर में अपनाया गया। **(ibid, 26)** कजाखस्तान ने 1978 में एक नए संविधान निर्माण के दौर में प्रवेश किया था, जिसे कजाख सोवियत गणराज्य के संविधान के रूप में जाना जाता था। इस संविधान में मुख्यतः पिछले संविधान के प्रावधानों को दोहराया गया लेकिन कम्युनिस्ट पार्टी की सत्ता शक्ति की प्रभुता को गणतंत्र कजाख की शक्ति और प्रशासनिक संरचना पर सर्वोच्च घोषित किया गया था। परेस्त्रोइका (Perestroika) के समय में 1990 के समय एक बिल्कुल नया संविधान अपनाया गया, जिसमें की इस संविधान के चरित्र को पूर्णतः बदल दिया। इसके विधानों या कानून में राष्ट्रपति के पद से परिचित करवाया गया और ''सोवियत'' व ''सोशलिस्ट'' शब्द को हटाकर, इसको गणतंत्र का नाम दिया गया और इसके साथ ही कजाखस्तान की स्वतंत्रता की तैयारी के लिए कुछ अन्य कानून भी बनाए गए। कजाखस्तान की स्वतंत्रता की घोषण 25 अक्तूबर, 1990 को कर दी गई।

कजाखस्तान गणतंत्र में नए संविधान की घोषण 1993 में की गई जिससे एक नई शासन व्यवस्था का स्वरूप निर्धारित किया गया। सुप्रीम काऊंसिल (Supreme Council) जो कि मुख्य विधायिका निकाय के रूप में काम करती थी ने नए संविधान को कजाखस्तान गणतंत्र के लिए स्वीकृत

किया। इस संविधान में, लोगों की सम्प्रभुता, राज्य की स्वतंत्रता, निजी सम्पत्ति, प्रशासनिक शक्तियों का सत्ता का विभाजन, न्यायालयों या अदालतों के प्राधिकार और कानून लागू करने वाली अभिकरणों या एजेंसियों के प्रावधानों को शामिल किया गया। यह माना गया कि इस संविधान द्वारा कजाखस्तान को अधिक संसदीय गणतंत्र का स्वरूप दिया गया। (Ryskozha, 2008) यह सुप्रीम काऊंसिल को अंततः भंग कर दिया गया, क्योंकि यह सोवियत संघ के समय में 1990 में, सोवियत संघ के प्रतिनिधि के तौर पर निर्वाचित माना गया था और अब तक सोवियत संघ का विघटन हो चुका था। **(Ministry of Parliamentarism Devlopment in Kazakhastan 2010)**

सन् 1993 के अपने पहले संविधान के साथ, कजाखस्तान ने एक अर्द्ध–राष्ट्रपति गणतंत्र (Semi-Presidential republic) को अपनाया जो कि एक सदनीय विधायिका (Unicameral-legisltature) के साथ संचारित था। यह एक सदनीय विधायिका मॉडल 1958 के फ्रांस गणतंत्र के संविधान पर आधारित था। **(Olcott 1977:219, Hunter 1996:41, Knox 2008:483-484)** हालांकि नजरबायेव इसको एक नाकाफी व असंतोषजनक समझौता मानता था, क्योंकि अन्य बातों के अलावा, यह सजातीय वंश समूह के तनाव को प्रेरित करता था। (Furman 2005; 209) इसमें राष्ट्र–राज्य निर्माण की प्रक्रिया को जातीय–राष्ट्रवादी अवधारणा के प्रभुत्व के तौर पर देखा गया, जिसने की एक कजाखों व रूसियों के बीच एक जातीय–तनाव की भावना को बढ़ाया जिससे सामाजिक बिखराव और बीच के दायरे को और बढ़ाने का काम किया। इसी कारण से नए संविधान ने जातीय केंद्रियता दृष्टिकोण को राजनीतिक–क्षेत्रीय अवधारणा की जगह स्थानांतरित किया। **(Zobirova 2003:118, cummings 2002:7)**

सन् 1995 में कजाख संविधान को फिर से संशोधित किया गया तथा राष्ट्रपति की शक्तियों को और बढ़ा दिया गया। अमेरिकी फ्रांसीसी

संविधान की राष्ट्रपति की सुदृढ़ शक्तियों को मिलाकर जिससे की उसकी सरकार की अन्य संस्थाओं व अभिकरणों पर दृढ़ नियंत्रण हो जाए, मुख्यतः विधायिका पर नियंत्रण, इसलिए कजाख संविधान में शुद्ध राष्ट्रपति शासनीय पद्धति को कार्यकारी समेकन का मुखिया बनाया गया। **(Cummings 2002:7 Gumppenberg 2002:138, Hunter 1996:42)** हालांकि यह संविधान कजाखस्तान को एक लोकतांत्रिक एवं धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित करते हुए सरकार को तीन विभिन्न ईकाईयों में उनके कार्यानुरूप बांटता था। कुछ समय बाद, इस दौरान, संसद के सदस्यों की संख्या को 1990 से 360 सदस्य से 1994 में 144 कर दिया तथा 1995 में 114 सदस्य कर दिया गया। **(Hunter 1996:40-42, Brammer/Wett 1995:143, Maunts Charjan 1996:2, Furman 2005:215)** फूरमैन के अनुसार कि विधायिका के अधिकारों में कटौती ने राष्ट्रपति के नियंत्रण को, उस पद बढ़ा दिया।

संविधान को संशोधित करने के परिप्रेक्षय में नजरबायेव ने एक असंवैधानिक **"Assembly of People of Kazakhstan" (saresemboyev 2007:199, Isaacs 2008:382)** ''कजाखस्तान लोगों की सभा'' की स्थापना की, जिसके द्वारा उसने अपने राष्ट्रपति काल को दिसंबर, 2000 तक बढ़ा दिया। यह निर्णय 29 अप्रैल, 1995 को राष्ट्रीय जनमत संग्रह के द्वारा लागू किया गया। यह अगस्त 1995 के एक और जनमत संग्रह, जो कि नए संविधान द्वारा लाया गया ने नजरबायेव की राष्ट्रपति की शक्तियों को और बढ़ा दिया **(Olcott 1997:230, Abazov 1999:171, Knox 208:478, Schatz 2003:18)** नए संविधान ने राष्ट्रपति की प्रभुत्ता को बढ़ाया, उसमें उप–राष्ट्रपति के पद को समाप्त करके और कैबिनेट को अपनी इच्छा के आधार पर समाप्त करने का अधिकार दिया। **(Economist Intelligence Unit 1999:7)**

सन् 1998 में संसद ने संविधान संशोधन के द्वारा राष्ट्रपति पद को अधिकतम उम्र व उसके कार्यकाल को पांच से सात साल के लिए बढ़ा दिया गया। इसने पहले से मौजूद ः50 प्रतिशत से ज्यादा वोट आने पर ही उस चुनाव की वैधता को स्वीकारा जाएगा' जैसी प्रतिनिधित्व चुनाव वैधता प्रक्रिया को भी खत्म कर दिया। इसके द्वारा ''मजलिस'' (संसद का निम्न सदन) (Majlis) के आधार को बढ़ाकर 67 से 77 उपसहायक कर दिया तथा उनका कार्यकाल 4 साल से बढ़ाकर 6 साल कर दिया गया। संसद की सीट जीतने के लिए, एक राजनैतिक दल को कुल हुए मतदान का 7 प्रतिशत से ज्यादा वोट पाना होगा, नियम बना दिया गया। **(Gumppenberg 2002:139, Economist Intelligence Unit 1999:6-7)** इन संशोधनों को प्रभाव/व्यवहार में लाने के लिए नजरबायेव ने, जनवरी, 1999 में ही चुनाव करवा दिए बल्कि तब उसका सन् 2000 के अंत तक का कार्यकाल बचा हुआ था। वह फिर से सात साल के लिए निर्वाचित हो गया गया। **(Knox 2008:478)**

इस तरह हम देखते हैं कि कजाखस्तान गणतंत्र में मुलतः संविधान के शासन का प्रशासनिक ढ़ाचा है। लेकिन फिर भी इसमें मौजूद नजरायेव के शासन सत्ता का हस्तक्षेप भी बना रहता है। हम जानते हैं कि संविधान किसी राज्य के ढांच को संचालित करने का एक विषय संकेतक है। यह अपने, अंदर, अपने नागरिकों व संस्थाओं के अधिकार व कर्तव्य समेटे होता है, तथा आधारभूत राजनीतिक सिद्धांतों को परिभाषित करता है। संरचनाओं की स्थापना करता है राज्य की प्रक्रियायों, शक्तियों व अंगों के कर्तव्यों को संचालित करता है। इसी को आधार बनाकर स्वतंत्र गणतंत्रीय कजाखस्तान में भी संविधान की स्थापना की गई है। इसकी प्रस्तावना कोदेखने पर कोई भी यह कह सकता है कि कजाखस्तान के आधिकारिक संविधान में जातिय एवं नागरिकीय अव्यव संकल्पित हैं क्योंकि उत्तर–सोवियत कजाखस्तान के अधिकारियों ने राज्य की छवि को एक सुदृढ़ ''कजाख की मौलिक मातृभूमि''(Primardial Homeland of Kazakhs) के रूप में स्थापित

किया है, जो कि संजाति विषयक पारिभाषिक ढांचा है और एक नागरिक राज्य ने ''गजाखस्तानी लोग''(People of Kazakhstan) राज्य धारणा को गठित किया। सन् 1993के संविधाान में कजाख राज्य के लिए कम असरदार शब्द ''स्वदेशी''(Ancient) की बजाए ''प्राचीन'' (Indigenous) शब्द प्रयोग किया गया। और सन् 1995 के संविधान में ''कजाख गणराज्य एक राज्य प्रणाली के रूप में कजाख लोगों द्वारा स्वनिर्धारित राष्ट्र है।'' को हटा दिया गया। जैसा कि येफ्ताचेल **(Yiftache 2001:359)** ने भी कहा है कि राष्ट्रवाद में मातृभूमि एक ऐसा भू–क्षेत्र माना जाता है जिसमें उसके सदस्य ऐतिहासिक काल में भी बसे हुए थे। समूह के जन्म स्थान एवं जातीय जुड़ाव की वजह से ही मातृभूमि जुड़ाव मुख्यतः क्षेत्र के स्वामित्व की अनन्य भावनाओं को समेटे होता है। जबकि मातृभूमि जातीय राष्ट्रवाद का आधार तैयार करती है। फिर भी भावना दवे (2004) के अनुसार बिना कानूनी संस्थागत सुरक्षा उपायों के समर्थन के बिना इस ''महा संजातीय कजाखस्तान'' पहचान "Supra-ethnic Kazakhstani" की विशेषता को वर्णित करना वहां के लिए बहुत छोटा–सा प्रयास है। यह कजाखस्तानी पहचान केवल कागजों पर मौजूद है। उदाहरणतः सन् 1999 के जनगणना में 'कजाखस्तानी' नाम का कोई ऐसा वर्गीकरण नहीं था और इसके बजाय, राष्ट्रीयता अभी भी सभी पहचान दस्तावेजों में रहता है। इस प्रकार कजाख की राष्ट्रीयता व वंश संजातीय समूह राष्ट्रीयता उनके परम्परागत ढांचे का भाग तो है जो की सामाजिक विकास काल के साथ–साथ अब भी लोगों के सामाजिक–राजनीतिक ढांचे का अहम हिस्सा है लेकिन संवैधानिक तौर पर ''राष्ट्रीयता'' में केवल कजाखस्तान राष्ट्रीयता की पहचान को वरीयता दी जाती है। **(Bhavna Dave 2004)**

इसी आधार पर यह कहा जा सकता है वंश/कुल समूह पहचान (Clan Identity) का संवैधानिक ढांचे में लिखित तौर पर कोई स्थान नहीं है लेकिन सरकार निर्माण में अहम भूमिका अदा करके ये संविधान की भावना को संशोधित कर सकते हैं। स्वतंत्रता के बाद कजाखस्तान, संविधान निर्माण

व राजनीतिक विकास के दौर से गुजरा। पहले दौर जो कि 1992 से 1994 के दौरान घटित हुआ ने राजनैतिक उदारीकरण की आधुनिक नीति और विभिन्न राजनैतिक आंदोलनों का निर्माण किया जो कि संसद में भी प्रस्तुत हुए द्वारा कजाखस्तानी राजनीति को सृजित किया। इसने 1994–95 में सुप्रीम सोवियत व राष्ट्रपति के बीच संस्थानिक प्रतिस्पर्धा को बढ़ाया, जो कि 1995 के दूसरे कजाख नए संविधान संशोधन के द्वारा समाप्त किया और राष्ट्रपति के आधिपत्य को, व्यवस्था को औपचारिक मान्यता प्रदान की।

ग(2). कजाखस्तानी संसद, 1991 से 2001 तक :–

मार्च, 1990 में एक सदनीय विधायिका (सुप्रीम सोवियत), एक बहुसदस्यीय प्रतिस्पर्धात्मक चुनाव प्रक्रिया द्वारा सन् 1925 के बाद पहली बार चुनी गई। नई विधायिका में, वरिष्ठ सोवियत कम्युनिष्ट अभिजात्य का प्रभुत्व था। इस तरह **(Olcott 1997:219, Hunter 1996:42)** कजाखस्तान में आधुनिक गणतंत्रीय संसदीय प्रणाली की शुरूआत हुई।

नजरबायेव ने दिसंबर, 1993 में, संसद पर जल्दी से 'स्वैच्छिक' विघटन करने का दबाव डाला जिससे कि नए संविधान को लागू करके, मार्च 1994 में, नए संविधान के सानिध्य में प्रथम उत्तर सोवियत चुनाव नियमों द्वारा चुनाव सम्पन्न करवाए गए। **(Olcott 1997:129)** नई संसद को सुप्रीम केन्गस (Kenges) नाम दिया गया। 'इनमें से जो प्रतिनिधि चुने गए थे, उनमें 70 प्रतिशत ने उससे पहले कभी यह संसदीय चुनाव नहीं लड़ा था, और जबकि इनमें 90 प्रतिशत वरिष्ठ प्रशासनिक अभिकर्ता जो राज्य व राज्य संस्थाओं में पदासीन थे।' **(Olcott 1997:220)** इसमें सबसे प्रमुख यह था कि इनमें से जनसंख्या के अनुपात में 50 प्रतिशत से ज्यादा संजातीय वंश समूह के (Clan) विभिन्न भू–क्षेत्रों के प्रतिनिधि भी निर्वासित हुए। प्रथम संसद के निचले संसद (मजलिस) का सभापति उच्च झूज/होर्डे या तथा ऊपरी सदन का (सिनेट) का सभापति भी उच्च झूज वंश समूह का प्रतिनिधि ही था। प्रशासनिक महकमों में मध्य झूज (Middle Zhuz) का

दबदबा था तथा निम्न झूज मुख्यतः (Lower Zhuz/Horde) मंत्रीमंडल व व्यवसाय के क्षेत्र में बनी विधायिका के भागों का हिस्सा थे। खुद राष्ट्रपति उच्च झूज (Higher Horde) का प्रतिनिधि करते हैं।

चुनावी प्रक्रिया में गड़बड़ी के बावजूद, राष्ट्रपति 177 ब्लॉक सीट में से केवल 66 ब्लॉक सीट ही सुप्रीम केन्गस में जीत पाया। इसके अतिरिक्त, नई विधायिका अपने सोवियत युगीन पूर्ववर्ती की तुलना में थोड़ा अधिक आज्ञाकारी थी। कजाखस्तान की नई संसद न केवल आजादी के प्रदर्शन के लिए शुरू हुई, लेकिन यह एक संस्था के रूप में खुद को मजबूत करने के लिए हुई; यह राष्ट्रपति सत्ता पर गणराज्य की प्रमुख रोक के रूप में तेजी से समझा जा सकता है। **(Olcott 1997:221-223, Brown 1996:12)** इसी लिए हंटर कहता है कि वसंत ऋतु में सन् 1995 में राष्ट्रपति नजरबायेव सुप्रीम किन्गस (Kenges) के पुर्नगठन और द्विसदनीय संसद का प्रस्ताव सदन में लेकर आए। **(Hunter 1996:42)** अचानक 1995 में, विपक्ष ने संसद के विघटन के लिए नेतृत्व किया। **(Bremmer/Welt 1995:149)** अल्माटी में एक मतदान जिले में 1994 के चुनावों के दौरान संवैधानिक उल्लंघन का हवाला देते हुए, मार्च 1995, में संवैधानिक न्यायालय (Constitutional Court) ने सारे चुनाव परिणाम की निष्कासित घोषित कर दिया। **(Jones Luong 2002:222)** 'राष्ट्रपति ने सुप्रीम केंगस (Supreme Kenges) को भंग/विघटित करके, संवैधानिक न्यायालय को खत्म करने और आदेश द्वारा सत्ता रूढ़ रहने की छूट लेकर के जवाब दिया, जब तक कि नई संसद का गठन ना हो जाए।'' (**Economist Intelligence Unit 1999:6**)

फिर नए संसदीय चुनाव सन्1995 के दिसंबर माह में हुए। इससे यह अटकले लगने लगी की राष्ट्रपति नजरबायेव ने ही संवैधानिक न्यायालय की कार्यवाही को करवाया था, जो कि तब तक 'सत्ता शक्ति का अनुत्पादक अंग' बन गया था। **(Olcott 1997:226-2**7) 1995 के संविधान के

अधिनियम 50 के अनुसार (Article 50) यह संसद दो सदनीय है; एक ऊपरी सदन (Upper House) सीनेट (Senate) जिसमें के 47 सदस्य होते हैं। 19 ऑबलास्ट्स (Oblasts) की हर एक क्षेत्रीय विधायिका से और राजधानी से चार साल के लिए दो सिनेटर सदस्य निर्वाचित होते हैं। बाकि सात सीनेटर सदस्य सीधे तौर पर राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त किए जाते हैं। निम्न सदन (Lower House) मजिलिस (Majilis) में 67 सदस्य (हर एक जिला ईकाई से एक) होते हैं; इसके सदस्य एकल जनादेश (Single-Mandate) के आधार पर चुने जाते हैं। दोनों सदन, संसद को लगातार सत्रों में संचालित करते हैं।

अक्तूबर, 1998 में एक संविधान संशोधन के द्वारा मजिलिस (निम्न सदन) का आकार बढ़ाकर 67 सदस्य से 88 प्रतिनिधि सदस्य कर दिया गया और उसका कार्यकाल 4 साल तक से बढ़ाकर 5 साल कर दिया गया था। इसके 67 सदस्य एकल जनादेश द्वारा विधानसभा क्षेत्रों से चुनकर आते थे, जोकि बहुसंख्यकवाद प्रणाली का हिस्सा है तथा बची 10 सीट आनुपातिक प्रतिनिधित्व चुनाव प्रणाली (Proportional respersentation) द्वारा किसी एक पार्टी के 7 प्रतिशत मत प्रतिशत सीमा सूची द्वारा चुने जाते थे। **(Isaacs 2008:328, Wilshire 2007:2, Sarrembayev 2007:116)** सीनेटर का कार्यकाल 4 साल से बढ़ाकर 6 साल कर दिया गया था। राष्ट्रपति, 15 सीनेटरों की 7 प्रतिशत की सीमा सूची के अंदर से ही नियुक्त कर सकता था। शेष बचे हुए 32 सीनेटरों में से आधे सीनेटर हर तीन साल में क्षेत्रीय विधान पालिकाओं द्वारा नामांकित किए जाते थे। **(Lrumppenberg 2002:138, EIU 2000b:7)**

इस प्रकार स्वतंत्र कजाखस्तान गणतंत्र में प्रथम दशक में कई महत्वपूर्ण संसदीय निर्माण एवं बदलाव हुए जिससे कि कजाखस्तान देश में लोकतांत्रिक व राजनीतिक सत्ता संचालन की प्रक्रिया को समुचित तौर पर संचालित करने के अथक प्रयास हुए। लेकिन कुछ आंतरिक परिस्थितियों व

नव उचित राष्ट्र के प्रभावों की वजह से कई क्षेत्रों में कजाखी संसदीय प्रक्रियाओं को झझावतों का सामना करना पड़ा। परम्परागत प्रशासनिक अनुभवों के आधार पर बने कजाखी समाज व उसके ढांचे को संचालित करने के लिए यह द्विसदनीय विधायिका महत्पूर्ण भूमिका अदा करती है।

ग(3). कजाखस्तान की राजनैतिक दल (पार्टी) व्यवस्था,1991 से 2001 तकः–

स्वतंत्रता के शुरू के सालों में, नजरबायेव ने शुरूआत में राजनीतिक दलों और सामाजिक आंदोलनों को बाधारहित यथार्थ में जुटने व इकट्ठा होने की अनुमति दी। लेकिन बाद में आहिस्ता–आहिस्ता जैसे–जैसे देश लोकतांत्रिक गतिविधियों में आगे बढ़ा, इन पर शासन का प्रतिबंधन कड़ा होता चला गया। (**Jones Luong 2002:143, Schmitz 2003:18**) सभी राजनीतिक सामाजिक संगठनों को (राजनैतिक दलों सहित) राज्य पंजीकरण की आवश्यकता होती है। वैसे ही कजाखस्तान में, जो राजनैतिक दल आधिकारिक तौर पर पंजीकृत नहीं है, उनको विज्ञापन देने और अपने आप को मिडिया में प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है और सभा आयोजित करने, रैली निकालने, चुनाव में भाग लेने की अनुमति नहीं है। (**Gumppenberg 2002:153-154**)

सन् 1994 के संसदीय चुनाव की समयावधि में सरकार ने राजनैतिक दलों और सामाजिक आंदोलनों के पंजीकरण करने पर महत्ती शर्तों को लगाया जैसे कि पंजीकरण के लिए एक राजनीतिक दल को 11 विभिन्न प्रांतों के 3000 लोगों की सदस्यता, संगठन की वित्तीय जानकारी उपलब्ध करवाना, और अपने दल के सदस्यों के बारे में व्यक्तिगत जानकारीदेना आदि शर्तें थी। (**Hunter 1996:56, Bremmer/Welt 1995:147, Jones Luong 2002:145**) स्थानीय व क्षेत्रीय प्रशासन (जैसे चुनाव बोर्ड) किसी भी उम्मीदवार का उसके पंजीकरण को अस्वीकार करके अक्सर चुनाव में भाग

लेने से रोका था। **(Bremmer/Welt 1995:147, Jones Luong 2002: 235)** कजाखस्तान में ''राजनीतिक दलों और चुनाव प्रक्रिया पर बने कई कजाख कानूनी पहलुओं द्वारा बहुत सारे राजनीतिक समूहों को प्रतिबंधित करके लोगों की संगठित होने की स्वतंत्रता के अधिकार को सीमित किया गया'' **(Hunter 1996:55)**। संविधान के पैरा तीन के अधिनियिम 5 पर आधारित, नियमों में सामाजिक, जातीय, राष्ट्रीय, धार्मिक भावना को भड़काने की शह पर रोक लगाने, वर्ग व जनजातीय शत्रुता कम करने, यह कानून राजनीतिक लोगों को जातियता, जाति, राष्ट्रीयता, धर्म व लिंग के आधार पर संगठित करने को प्रतिबंधित करता है। **(Bowyer 2008:9, Isaacs 2008:382-383)**

कजाखस्तान के राजनैतिक दल आम तौर पर कमजोर केंद्रीकृत निर्णय लेने की संरचनाओं व संस्थाओं तथा कुछ उनमें भाग लेने वाले सदस्यों के साथ सामान्यतः शिथिल रूप से संगठित है। वे धन की कमी के साथ ही साथ संगठनात्मक और आपसी बोलचाल की कमी की आधारिक संरचना से भी जूझते है। लगभग सारे राजनैतिक दल, किसी चमत्कारिक व्यक्तित्व या कुछ अभिजात्य/कुलीन वर्ग के अभिकर्ताओं पर केंद्रित हैं और मुद्दों पर आधारित राजनीति, एक दल के कार्यक्रम, एक सुसंगत विचारधारा (Coherent Ideology) या जल्दी पहचाने जाने वाले मतदाताओं की नीति में कम है। **(Isaacs 2008:382-383, Bowyer 2008:14, Abazov 1999:172)**

सन् 1991 के स्वतंत्रता के बाद कजाखस्तान के प्रथम विकास वर्ष में कई राजनैतिक पार्टियों ने यहां के राजनैतिक वातावरण को प्रभावित किया। इसमें सबसे बड़ी पार्टी खुद राष्ट्रपति नजरबायेव की पार्टी 'नूर–उटान' (Nur-Otan) ने कजाखस्तान के सारे राजनैतिक परिदृश्य को घेर रखा है। यह पार्टी संसद के साथ–साथ जनता के अंदर भी प्रसिद्ध है। लेकिन सन् 1999 से 2000 तक की मुख्य राजनीतिक पार्टियां निम्न हैंः–

कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ कजाखस्तान (CPK: Communist Party of Kazakhstan), पार्टी कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ कजाखस्तान एसएसआर की उत्तराधिकारी थी जिसकी स्थापना अक्तूबर, 1991 में और पंजीकरण फरवरी 1994 में हुआ था। 1994 के चुनाव में इसे भाग लेने की अनुमति नहीं मिली जिससे इसके उम्मीदवारों को अपने नाम प्रक्रिया से वापस लेने पड़े। **(Bowyer 2008:23-24)** कम्युनिस्ट पार्टी ने 1991 के बाद के अपने इतिहास में लगातार अन्य आंदोलनों व विरोधी दलों के संगठन ''अजमत'' (Azamat) व ''पोकोलेनेई''(Pololenie/Generation) में हिस्सा लिया। साथ ही साथ 1996 के 'राष्ट्रीय देशभक्ति आंदोलन–गणतंत्र'' में भाग लिया। 1998 में इसने "People's Front of Kazakhstan" आंदोलन में भाग लिया जो कि एक विरोधी धड़ा था। पार्टी का चुनाव इतिहास 1990 के इसके बनने के बाद संगठनात्मक पुर्ननिर्माण के तौर पर चलायमान है। सन् 1995 व 1999 के चुनाव में पार्टी ने दो सीटें जीती। सन् 1994 के चुनाव में पार्टी चुनाव लड़ने के लिए स्वीकृत नहीं थी। सन् 2000 में कम्युनिस्ट पार्टी संगठन के तौर पर चुनाव लड़ी लेकिन कोई सीट नहीं जीत पाई। सन् 2004 में कम्यूनिस्ट पार्टी ने अपने आप को फिर से चुनाव आयोग में पजीकृत किया है। 1919 के चुनाव में यह पार्टी 17 प्रतिशत वोट के साथ दूसरे स्थान पर रही। **(Bawyer 2008:25)**

The Democratic Choice of Kazakhastan (DCK), 2001 में बनी तथा 2004 में पंजीकृत हुई। यह एक आंदोलन के द्वारा पैदा हुई। राजनीतिक पार्टी है इसके उभरने का कारण कजाख राज्य में नई आर्थिक दरारे उभरना था जो कि वहां के वंश कुलीन लोगों द्वारा संसाधनों के एकत्व अधिकार के कारण था। DCK आंदोलन 2001 में, कजाखस्तान के व्यापारिक व राजनीतिक कुलीन वर्ग के तत्वों द्वारा देश की नेतृत्व सत्ता को चुनौती देने से शुरू हुआ। 2001 में Galimzhan Zhakiyamov और Mukhtar Ablyazov ने इसे बनाया। इन्होंने राजनीतिक आधिपत्य का

विकेंद्रीकरण, क्षेत्रीय गर्वनरों के प्रत्यक्ष चुनाव के द्वारा करने को कहा, एक सुदृढ़ विधायिका और स्वतंत्र न्यायपालिका की मांग जो कि राष्ट्रपति की सत्ता शक्तियों को संतुलित कर सके। इस दल ने 'नागरिक सविनय अवज्ञा', राष्ट्रपति नजरबायेव के नेतृत्व वंश/कुल समूह के एकाधिपत्य को समाप्त करके उसको उखाड़ फेंकने या पद्च्युत करने का प्रयास भी किया लेकिन सफल नहीं हुए। **(Bowyer 2008:26-28)**

The Party of Patriots of Kazakhastan (PPK) का उद्भव सन् 2000 में हुआ। यह एक छोटी पार्टी (Rukhaniyat) की ही तरह थी। यह पीपीके पार्टी कुछ समय सरकारी नीतियों को लेकर आलोचनात्मक होती है, लेकिन सामान्यतः यह राष्ट्रपति के कार्यों की हिमायती/समर्थक मानी जाती है। गनी काशीमोव (Gani Kasimov) जिसने की एक बार नुरसुल्तान नजरबायेव के खिलाफ राष्ट्रपति का चुनाव लड़ा था द्वारा पार्टी नेतृत्व संभाला जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य लोकतांत्रिक उद्देशयों की प्राप्ति हेतु नागरिक समाज को जागरूक बनाकर बाजार अर्थव्यवस्था को बढ़ाकर जीवन प्रत्याशा को सुधारना है। **(Heinrich, 2008:33Boweyer, 2008: 21-22)**

नुर ऑटान (Nur-Otan) राजनीतिक दल सबसे बड़ा राजनीतिक दल कजाखस्तान गणतंत्र के लोकतांत्रिक वातावरण में मौजूद है। कजाखस्तान में नूर ऑटान पार्टी सबसे प्रमुख राजनीतिक दल माना जाता है जिसे राष्ट्रपति नूरसुल्तान नजरबायेव नेतृत्व करते हैं। वैसे नूर ऑटान 2006 में दो राष्ट्रपति–पक्षीय राजनीतिक दलों के एक दूसरे में संलग्न होने की परिणाम है जो कि 2004 तक अलग–अलग चुनाव लड़ते थे। इस पार्टी को मदरलैंड (मातृभूमि) (Motherland Party) भी कहा जाता है। सिविक पार्टी (Civic) और असर (Grazhdanskgya partiya) जो कि राष्ट्रपति की बेटी दारीगा नजरबायेव (Asar) के द्वारा नेतृत्व की जाती थी का ऑटान पार्टी के साथ गठबंधन 1999 में किया गया जिसने 4 पार्टी सूचियों और 24 कुल सीटों पर 1999 में मजीलिस चुनाव में सफलता प्राप्त की। नूर–ऑटान

कजाखस्तान की राजनीति का आधार केन्द्र हैं जिसके पक्ष में बहुत–सी राजनैतिक पार्टियां समय–समय पर आती रही हैं। **(Bouyav 2008:33-36)** मार्च 1994 के चुनाव में कजाखस्तान में 1993 के नए संविधान के तहत चुनाव हुए। ये चुनाव 135 सीटों पर हुए जिन पर 692 प्रतिद्वंद्वी लड़े। 74 प्रतिशत कुल वोट इस चुनाव में हुए जिनमें से चार राजनैतिक दलों के प्रतिनिधि लड़े। इसमें राष्ट्रपति नजरबायेव की राजनीतिक दल The Party of People's Unity ने 32 सीटें जीती, The Federation of Trade Unions ने 12 सीटें जीती और बाकी 14 विभिन्न समूहों से निर्वाचित सदस्य थे। सिविक पार्टी नवंबर 1998 में Azat Peruashev द्वारा बनाई गई। ऑटान पार्टी मार्च 1999 में Amangeldy और Alekzander द्वारा बनाई गई।

ग(4). कजाखस्तान में नागरिक समाज, 1991 से 2001 तक :–

कजाखस्तान के कुलीन या अभिजात्य शासन सत्ता वर्ग वंश/कबीला समूह ढांचे के अंतर्गत संगठित हैं जो कि पिरामिडीय संरचना में उपस्थित संस्थाओं पर प्रतिस्पर्धात्मक नियंत्रण के प्रयास में रहता है। इसलिए इन अभिजात्यों को दो समूहों में विभाजित किया जा सकता है। पहला सरकार व उसकी संस्थाओं में भागीदार समूह है जो वहां के तेल व अन्य प्राकृतिक संस्थानों पर नियंत्रण बनाता है तथा दूसरा अन्य कुलीन समूह है। आंतरिक व बाहरी लोगों का यह विभाजन सरकार में और उसके बाहर सामाजिक व्यवस्था में कजाखस्तान के हित प्रतिनिधित्व की एक खास विशेषता है। इन प्रमुख दबाव हित समूहों का लक्ष्य लॉबिग (Lobbying) करके राजनीतिक व्यवस्था में किसी तरह का बदलाव नहीं था बल्कि में खुद भी व्यवस्था का एक अंतर्गत हिस्सा बनने के लिए आतुर थे। इन प्रमुख दबाव हित समूह द्वारा प्रतिनिधित्व, सरकार के विधायी वह कार्यकारी शाखा तथा प्रशासनिक संभागों में आपसी सहयोग की भावना द्वारा प्राप्त किया गया। यहां हम नागरिक समाज संगठनों द्वारा, सरकार की उत्तरदायित्व तथा

नागरिकों के हितों व अधिकारों की रक्षा हेतु सामाजिक सुविधाओं की उपलब्धता में सहयोग का विश्लेषण करते हैं।

कजाख्स्तान की स्वतंत्रता के बाद वहां मोटे तौर पर असंरक्षित सोवियत संघ के सामाजिक और राजनैतिक संगठनों की एक पूरी श्रृंखला के साथ–साथ एक नया नागरिक समाज संगठनों का दौर भी प्रकाश में आया। पहले बहुसख्यक बल में वो ऐसे संगठन थे जो सोवियत संघ के विघटन के बाद खाली हुए सेवा क्षेत्र में अपनी सेवाएं उपलब्ध करावाते थे। सन् 1994 की शुरूआत तक, पश्चिमी एनजीओ और विकास एजेंसियों के साथ ही स्थानीय सामाजिक संगठन बनाने और समर्थन जुटाने की निरंतर अनुमति कजाखस्तान में दी गई। **(Jones Luong 2002:143, 151)** हालांकि पूरे 1990 के दशक में, गैर सरकारी संगठनों (NGO's) को ऐसे कार्यों के निकायों के उपक्रम के तौर पर देखा गया जो लम्बे समय से सरकार नहीं कर पाई थी। लगभग सभी उत्तर सोवियत देशों में गैर सरकारी संगठनों (NGO's) का विचार ही नदारद था। इस तरह कजाखस्तान में एक नागरिक समाज का विचार प्रथमतः इन गैर–सरकारी संगठनों की समाज के साथ भागीदारी के आधार तत्व के रूप में प्रकाश में आया। **(Abdusalyamava/warren)**

ग(5). कजाखस्तान में मीडिया या प्रैस, 1991 से 2001 तक :–

कजाखस्तान गणतंत्र के संविधान में अधिनियम 20, व अध्याय 1 के तहत अभिव्यक्ति की आजादी का अधिकार संग्रहित है। तथापि मीडिया व प्रैस के सरकारी दमन और विरोधी राय के सामान्यतः दबाने की घटनाओं में कजाखस्तान में 1993 के बाद वृद्धि हुई है। **(JonesLuong 2002:143, Bremmer/Welt 1995:145)**। स्वतंत्र अभिव्यक्ति का अधिकार अनुच्छेद 20 के पैरा 3 की मनमानी आवेदन धारा के माध्यम से प्रतिबंधित है, जो कि सजातीय समूह व जातीय कबीला समूहों के बीच नफरत की भावना को भड़काने पर प्रतिबंध लगाता है। और अनुच्छेद 46 के पैरा 1, राष्ट्रपति की गरिमा और सम्मान की रक्षा करता हैं। इन

अत्यधिक प्रतिबंधित धाराओं के द्वारा मीडिया की स्वतंत्रता पर, कजाखस्तान की अखण्डता के उल्लंघन करने के नाम पर अदालतों द्वारा प्रतिबंध लगाए गए। इसमें 'उग्रवाद' व राज्य सुरक्षा को कम करने का भी जिक्र किया गया है। **(Gumppenberg 2002:18, International Media Suppport 2008:17-18)** इसके अतिरिक्त वहां, स्वतंत्र मास मीडिया का काम (आविष्कार), प्रसारण (Broadcasting stations) या मुद्रण घरों पर 'कागज की कमी' जैसी ''तकनीकी बाधाओं समस्याओं'' द्वारा बाधित था। **(ibid)** कजाखस्तान की सरकार, वहां सभी मुद्रण सुविधाओं के उपयोग व उनको कागज की आपूर्ति को तथा सभी टीवी मालिकों व रेडियों प्रसारण टावरों पर अपना नियंत्रण रखती है (प्रोडक्सन स्टूडियो को छोड़कर) जिससे सरकार को मीडिया पर नियंत्रण का एक महत्वपूर्ण जरूरी उत्तोलक (लीवर) साधन उपलब्ध करवाता है–**(Hunter 1996:58, Bremmer/Welt 1995:146)** स्वतंत्र मीडिया के लिए एक और बाधा मिडिया के अभिव्यक्ति मार्ग पर राज्य का असीमित नियंत्रण है। **(Hunter 1996:57)**

निजीकरण युग के दौरान कजाखस्तान में नजरबायेव के परिवार का टीवी चैनलों और उनकी आवृतियों (Frequences) पर पूर्णतः अधिकार प्राप्त था। राष्ट्रपति के परिवार व समर्थकों द्वारा विरोधी प्रिंट मीडिया को भी हथिया लिया गया था। **(Furman 2005:216)** इसके अतिरिक्त कई निजी प्रिंट मीडिया सरकार से सब्सिडी भी प्राप्त करते थे। नतीजन कजाखस्तान में उस समय इलेक्ट्रॉनिक मास मीडिया ज्यादातर राष्ट्रपति के परिवार व सत्तारूढ़ पार्टी समर्थकों के स्वामित्व में पूर्णतः नियंत्रण में था। उस दौर में प्रथम दशक के दौरान कजाखस्तान में जर्नलिस्ट सरकार व उसके संस्थानों के खिलाफ लिखने से घबराते थे। बहुत से जर्नलिस्ट की तो सरकार समर्थित उपक्रमों द्वारा हत्या भी करवा दी गई थी। **(Wilshire 2007:4, International Media Support 2008:17-18)**

ग(6). राजनीतिक व्यवहार व संस्कृति तथा राजनीतिक भागीदारी, 1991 से 2001 तक :–

कुछ लेखक कजाखस्तान की राजनीतिक व्यवहार व संस्कृति के लकीर का फकीर या दृढ़ता होने के दावे की पुष्टि करते हैं। कजाख लोग अपने स्वतंत्रता के पहले दशक में मजबूत राष्ट्रपति सत्ता के पितृक सत्तावादी स्वरूप में विश्वास करते हैं, **(Cummings 2002:12)** जबकि मजबूत नेतृत्व कजाखों के बीच एक ऐतिहासिक परम्परा के तौर पर मतभेद था, चाहे वो फिर भागीदारी निर्णय की ही बात क्यों न हो। राज्य के प्रमुख को, राजनीतिक स्थिरता और राज्य के आदेश के संदर्भ में एक अभिभावक के रूप में देखा जाता है, मुक्त लोकतांत्रिक चुनाव प्रक्रिया को इस स्थिरता के लिए खतरा माना जाता रहा है **(Geoss 2006:33)** स्कामित्ज कहता है कि यहां तक कि विपक्ष भी राज्य के प्रमुख के साथ एकजुटता दिखाता है और कजाखस्तान की राजनीति को प्रभावित करने के लिए राज्य प्रमुख से वफादारी भी निभाता है। **(Schmitz 2003:26)** यह सब 1990 के अंतिम दशक में नव स्वतंत्र कजाखस्तानी राज्य की प्रमुख राजनीतिक व्यवहार व संस्कृति का अभिन्न हिस्सा बना रहा था।

सन् 1990 के दशक के शुरूआती दौर में कजाखी समाज में उदार लोकतंत्र के विचार इस विशाल उम्मीद में फैले कि बाजार अर्थव्यवस्था और राजनीतिक व्यवस्था का लोकतांत्रिकरण उन लोगों की जिंदगी की गुणवत्ता को बढ़ाएगा। हालांकि समाजवादी विचारधारा जो पहले उनके सामाजिक परिदृश्य में आई थी, तो अब उदार लोकतंत्र की विचारधारा को बदनाम कर दिया गया था और एक नई भावना ने जड़े जमा ली थी कि कजाखस्तान अभी लोकतंत्र शासन व्यवस्था के लिए तैयार नहीं था, और इसके अलावा, लोकतंत्र और बाजार अर्थव्यवस्था कजाखी मानसिकता और परंपराओं के साथ शुरू में ही भीड़ गए थे। **(Kaduyzhanov 2001:41,45)**

आज के उत्तर–सोवियत स्वतंत्र कजाखस्तान में राजनीतिक वातावरण, वंशावली समूह/कबीला समूह राजनीति के द्वारा आज भी पूर्णतः

प्रभावित है। विशेषकर स्वतंत्रता के शुरू के सालों में, नजरबायेव ने तीनों होर्डे/झूज (Zhuz/Horde) और कबीला तंत्र (Clan Network) के बीच पुराने ऐतिहासिक अलगाव या विभाजन का सामना करना पड़ा। **(Olcott 2002:186-187)** फिर भी, कजाखस्तान के राजनीतिक जीवन में वहां हमेशा कुलों/कबीलों (Clan) और हॉर्डे/झूज (Horde) के बीच गठबंधन रहा है। इसके साथ–साथ इससे महत्वपूर्ण बात उनका अच्छी तरह से स्थापित संरक्षक–ग्राहक तंत्र नेटवर्क है, जो बिना किसी वंशावली की जानकारी व ज्ञान के कजाख व गैर–कजाख को शामिल कर सकता है। परिवार व वफादारी कजाख के बीच मौजूद सांस्कृतिक मानदंड है जो उनके दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जिसके चलते जब एक तंत्र या नेटवर्क स्थापित किया जा रहा होता है, तो वह एक भरोसे के आधार पर होता है और ये नेटवर्क कर्ता व्यक्ति अक्सर परिवार व कबीले के सदस्यों द्वारा चुने गए होते हैं। उदाहरणतः जैसे 1995 में Amalbek Tshanov,40 नौकरशाहीं को अपने वंश/कुल समूह (Clan) की मदद से हटाकर Zhambyl (Oblast) ऑब्लास्ट का अकीम (Akim) बन गया था। **(Olcott 2002:187)** ऑल्काट (Olcott) के अनुसार इन उप–जातिय संरचनाओं का बढ़ता महत्व, कजाख सरकार के कजाखी पहचान को पुनजीर्वित करने के प्रयासों के कारण और सरकार वंश समूह/कबीला समूह पहचान (Clan Identity) को कजाखी राज्य के बुनियादी घटक के रूप में देखती है। **(Olcott 2002:184)** जैसे बोहर (Bohr) भी संकेत करते हैं कि लोग हमेशा अपनी वंशानुगता/कुल समुह (Clan) और कबीले समूह को और अक्सर अपने होर्डे (Horde) को एक सिद्धांतीय लगाव के तौर पर देखते हैं। **(Bohr 1998:141)** असल में चाहे उसके वंश/कुल समूह के सदस्य की जो भी सामाजिक स्थिति है, वह (He/She)उसके कबीले के कल्याण के लिए काम करने की आवश्यकता के तौर पर उम्मदित है और आवश्यक माना जाता है। यह मुख्यतः कबीले के अभिजात वंश समूह सदस्यों के लिए प्रचलित है। जो कि अपने कबीले, वंश

समूह, जनजाति और नेटवर्क के सदस्यों को अवसर व सहायता उलपब्ध करवाकर, उसके बदले में इन सदस्यों से, इस व्यवस्था क्रम में अपनी स्थिति बनाए रखने के लिए निष्ठा और सम्मान की उम्मीद करता है। **(Khegai 2004:9)**

ग(7). कजाखस्तान में कानूनी व्यवस्था और संवैधानिक न्यायालय, 1991 से 2001 तक :–

कजाखस्तान का संविधान एक संवैधानिक न्यायालय, एक सुप्रीम कोर्ट और स्थानीय न्यायालय का प्रावधान करवाता है जिसमें नागरिक, प्रशासनिक और अपराधी तथा अन्य न्यायालय होते हैं। स्वतंत्रता के प्राथमिक वर्षों में संवैधानिक न्यायालय के साथ–साथ अन्य अदालतें, संविधान के उल्लंघन के आधार पर, राष्ट्रपति के फरमान व कार्यकारी शाखाओं के निर्णयों को रद्द या बाधित करके अपनी बढ़ती हुई स्वतंत्रता का संकेत करवाती थी। **(Bremmer/Welt 1995:149, Hunter 1996:57, Brown 1996:11)**। लेकिन सन् 1995 में राष्ट्रपति नजरबायेव ने संवैधानिक न्यायालय को समाप्त कर दिया ताकि उसके स्थान पर संवैधानिक परिषद् का निर्माण किया, जो कि 7 सदस्यों का समूह थी जिनमें से 3 सदस्य राष्ट्रपति द्वारा ओर दो संसद के प्रत्येक सदन के द्वारा 6 साल के लिए नियुक्त होते थे **(Olcott 1997:231)**। नागरिकों को अब भी सीधे संवैधानिक परिषद् में सीधे अपील करने का अधिकार नहीं था। **(Economist Intelligence Unit 2008: 162)** सन् 1995 के संवैधानिक संशोधन द्वारा न्यायाधीशों को नामांकन की प्रक्रिया में संसद की शक्ति को कम कर दिया गया जबकि इस मामले में राष्ट्रपति की शक्ति बढ़ी। सभी न्यायाधीश, संवैधानिक परिषद को छोड़कर, पूरी तरह अब राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त किए जाते थे और आदालतों एवं बोर्डों के अध्यक्षों को पांच साल के लिए नियुक्त किया जाता था। **(Hunter 1996: 44,57; Issenova 2006:162)** संस्थागत, संरचनात्मक

और संगठनात्मक परिवर्तन जो कि न्यायिक संस्थाओं में आया उसने अंतराष्ट्रीय संगठनों एवं कानूनी विशेषज्ञों से उच्च मूल्यांकन प्राप्त किया। **(Issenova 2006:75)** तथापि वह कजाखस्तान राज्य की न्यायपालिका में स्थानीय कानूनी समुदाय और अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों के लिए अभी भी चिंता का कारण बना हुआ था। सामान्य में, न्यायाधीशों की स्वतंत्रता के बारे में संदेह प्रबल था। कई न्यायाधीशों के द्वारा स्वतंत्रता की व्याख्या गैर जिम्मेदार तरीके से की दिखाई देती थी। उनमें न्यायिक आत्म इच्छाशक्ति व सत्ता के दुरूपयोग की प्रबलता बनी रहती थी। **(Issenova 2006:159)**

इस प्रकार कजाखस्तान के न्यायायिक व्यवस्था व कानूनी संवैधानिक न्यायालय प्रक्रिया में एक समयावधि के अंतराल में विधायिका व कार्यकारिणी के साथ टकराव व मिलिभगत के प्रमाण सफूर्तः दृष्टिगोचर होते हैं। वहां के राष्ट्रपति की संवैधानिक स्थिति व वास्तविक कार्यप्रणाली कानूनी व्यवस्था के लिए एक अभिकारक अवरोधक का काम भी करते प्रतीत होती है। विभिन्न संविधान संशोधनों के द्वारा उसके कार्यक्षेत्र में विधायिका व प्रशासनिक संगठनों के हस्तक्षेप की संभावना निरंतर बनी रहती है।

अध्याय– पंचम

समालोचना (Conclusion)

प्रस्तुत शोध निबंध (Dissertation) में कजाखस्तान गणराज्य में, स्वतंत्रता के बाद के प्रथम दशक में वंश/कबीला समूह राजनीति के द्वारा, वहां की लोकतांत्रिकरण की प्रक्रिया पर पड़े प्रभाव की विस्तृत विश्लेषणात्मक विवेचना की गई है। सन् 1991 के सोवियत विघटन के बाद कजाखस्तान समेत अन्य मध्य एशियाई देश स्वतंत्र होकर विश्व भू–राजनीति परिदृश्य में अवलोकित हुए। इन सब राष्ट्र–राज्यों में वंश–कबीला राजनीति का वहां के नव–उदित राजनीतिक वातावरण पर असरदार व प्रभावी नियंत्रण बना रहा। इनमें से कजाखस्तान गणराज्य विशाल भू–क्षेत्रीय व संयोजित राजनीतिक–सामाजिक विभिन्नताओं तथा एकताओं से परिपूर्ण, परम्परागत संरचनाओं व सामाजिक ढांचों को सम्मिलित करके, भविष्य की असीम संभावनाओं से आशातंवित होकर आधुनिक लोकतांत्रिक राष्ट्र–राज्य बना। इस नए कजाखस्तानी गणतंत्र की राजनीतिक व्यवस्थाओं व संस्थाओं में अनौपचारिक कबीला/वंश समूहों की प्रतिस्पर्धात्मक रूप से परम्परागत भागीदारी भी बनी रही। प्रथम दशक के राजनीतिक वातावरण में विभिन्न संवैधानिक औपचारिक संस्थाओं के निर्माण व विकास में इन गैर–औपचारिक समूहों की विशेष भूमिका थी। अतः हम इस निष्कर्ष अध्याय में इस शोध निबंध के द्वारा प्राप्त परिणामों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करेंगे।

इस शोध कार्य में वंश/कबीला समूह राजनीति के प्रभाव का वहां के राजनीतिक संस्थाओं के लोकतांत्रिकरण में योगदान को अध्ययन किया गया है जिसमें कजाखस्तान अनौपचारिक कबीला/वंश राजनीति को राजनीतिक व्यवस्था का स्वतंत्र शोध चर तथा उसके प्रभाव से बनी औपचारिक राजनीतिक संस्थाओं के लोकतांत्रिकरण की प्रक्रिया को आधारित– शोध चर के रूप में प्रस्तुत किया गया है। कबीला/वंश राजनीति, इसमें प्रमुख अध्ययन विषय है तथा उसके प्रभाव द्वारा राजनीतिक संस्थाओं के लोकतांत्रिकण की

प्रक्रिया का अध्ययन गौण विषय है। इस शोध निबंध में दो परिकल्पनाओं या अवधारणाओं (Hypothesis) में जानने की कोशिश की गई है।

पहली परिकल्पना, कलैन/वंश कबीला समूह राजनीति (Clan Politics) कजाखस्तान के औपचारिक राजनीतिक संस्थाओं के लोकतात्रिकण प्रक्रिया के मार्ग में अवरोधक का काम करती है।

तथा दूसरी परिकल्पना, वंश/कबीला समूह ने कजाखस्तान देश के लोकतांत्रिक संघटन(जुटाव) में महत्वपूर्ण व सार्थक भूमिका निभाई है।

शोध निबंध के विषय ''कजाखस्तान में वंश/कबीला समूह राजनीति और राजनीतिक संस्थाएं, 1991 से 2001'' से ही विदित हो जाता है कि यह एक समयबद्ध गुणात्मक शोध विश्लेषण है जिसमें एक गैर–भागीदारी तरीके से, विभिन्न किताबों, लेखों, सरकारी रिपोर्टो, विभिन्न अखबार पत्रिकाओं, अंतराष्ट्रीय संस्थाओं की रिपोर्टों के प्राथमिक स्रोतों व द्वितीयक स्रोतों के गुणात्मक अध्ययन (Qualitative) द्वारा पर्यवेक्षण करके अपनी परिकल्पना को परिणात्मक अवलोकन के स्तर तक पहुंचाया गया है। हालांकि कुछ आंकड़ों को जुटाने के लिए निम्न स्तर पर मात्रात्मक (Quantitative) विश्लेषण भी किया गया है। वंश/कबीला समूह राजनीति (अनौपचारिक राजनीति) और संवैधानिक राजनीतिक संस्थाओं (औपचारिक संस्था) के कजाखस्तानी गणतंत्र के लोकतांत्रिकरण की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रथम दशक के पहले दो–चार सालों में कजाखस्तान देश की औपचारिक संवैधानिक संस्थाओं के निर्माण में व उनकी कार्यविधि के सुचारू रूप से संचालन हेतु, वंश के कबीला/वंश समूहों के विभिन्न स्तरीय कर्ताओं द्वारा अपनी राजनीतिक प्रतिनिधित्व की संवैधानिक अधिकार मांग की पूर्ति करके इन औपचारिक संस्थाओं के संचालन में अपनी अहम भूमिका निभाई। इसके बाद सन् 1995 के संवैधानिक निर्माण प्रक्रिया द्वारा जब कजाखस्तान गणतंत्र का नया संविधान तैयार किया गया तो इन कबीला/वंश समूह संरचनाओं की कार्यविधि में भी महत्वपूर्ण बदलाव आया। तथा इनके द्वारा सरकार एवं उसकी प्रशासनिक व विधायी ईकाईयों में एक अनौपचारिक तत्व

के तौर पर इनकी कार्यकारी प्रकृति भी प्रभावित हुई। 1995 बाद के दौर से लगभग सन् 2001 तक इनका स्वरूप पितृसत्तात्मक प्रवृति के परिवारवादी ढांचे के रूप में कजाख राजनीति के नए आयामों को गढ़ने लगा। अब राष्ट्रपति नजरबायेव की कबीला/वंश समूह संतुलन की नीति द्वारा इनको समान संस्थानिक प्रतिनिधित्व का व्यक्तिवादी स्वरूप सामने आया। अब इन कबीला/वंश समूहों के कुछ निर्धारित प्रतिनिधि सत्ता के संकेद्रण को सीमित करने लगे तथा आधिपत्यवादी प्रकृति के शासन व्यवस्था को बढ़ावा देने लगे। अनेकों बार इन कर्ताओं द्वारा सत्ता के ऊपरी संस्करण के साथ मिलकर एकाधिकारवादी पद्धति द्वारा, प्राकृतिक संसाधनों पर नियंत्रण, नव परिवारवादी राजनीति, तेल व गैस के भंडारों पर कब्जा, विपक्ष को कमजोर करना, मीडिया की स्वतंत्रता का हनन करना, नागरिक समाज को बढ़ावा देना आदि अनेक प्रकार्यात्मक कार्यों को अपनी हितपूर्ण हेतू सम्पन्न करते देखा गया।

प्रस्तुत शोधकार्य के पिछले अध्यायों में, मध्य एशियाई गणतंत्र कजाखस्तान की वंश/कबीला समूह (अनौपचारिक) (informal) राजनीति का औपचारिक राजनीतिक संस्थाओं से (formal) संबंध तथा उन पर पड़ने वाले प्रभाव का विस्तृत व सुस्पष्ट वर्णन किया गया है। इसमें सन् 1991 के सोवियत विघटन के बाद से लेकर सन् 2001 तक के दशक में कजाखस्तान में हुए राजनीतिक व सामाजिक उदवेलन के विकास क्रम को व्याखित किया गया है। औपचारिक (राजनीतिक संवैधानिक संचरनाएं) और अनौपचारिक संस्थओं (कबीला/वंश समूह) के संदर्भ में यह सच है कि इन अनौपचारिक कबीला/वंश समूह रूपों द्वारा, औपचारिक सरकारी राजनीतिक संस्थानों व संरचनाओं को आकार देने में व प्रभावित करने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उत्तर–सोवियत काजखस्तान में राजनैतिक संक्रमणकाल में ये अनौपचारिक कबीले/वंश समूह विचार, वहां की औपचारिक सरकारी संरचनाओं की प्रकृति में अभिन्न रूप से सम्मिलित है। यद्यपि ये औपचारिक संस्थाएं, अभिजात्य कुलीनों को स्थिरता प्रदान करती हैं। अनौपचारिक कबीला/वंश समूहों के राजनीतिक व्यवहार और संबंधों को वैधता प्रदान करती हैं और इन

कबीला/वंश समूह (Clan) जैसी अनौपचारिक संस्थाओं के बीच संघर्ष (Clan conflict) की प्रयोजन वाहक बनती हैं। यह निष्कार्यात्मक अध्याय, व्यापक वाद–विवाद और मुख्य निष्कर्ष के संदर्भ में सामान्यीकरण हेतु कजाखस्तान गणतंत्र के अनौपचारिक कबीला/वंश समूह राजनीति को औपचारिक राजनीतिक संवैधानिक संस्थानों के लोकतांत्रिकरण की प्रक्रिया में वृहत् स्तर पर विवेचित करता है।

यह शोध कार्य आधुनिक कजाखस्तान के संदर्भ में अनौपचारिक (informal) और औपचारिक (formal) राजनीति के बीच संबंधों व प्रभावों का वंश/कबीला राजनीति के वहां की वैधानिक संस्थाओं के लोकतांत्रिकरण में योगदान का प्रथम दशक की कजाखस्तानी राजनीतिक परिदृश्य में अध्ययन करता है। यह बताता है कि कैसे लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया में कजाखी औपचारिक संस्थाएं, अनौपचारिक कबीला/वंश समूह जैसी परम्परागत पहचानों के नए संचलन से प्रभावित हुई है।

दूसरे अध्याय में यह निष्कर्षित हुआ है कि कजाखस्तान में झूज/हॉर्डे के कबीलाई समाज में, सन् 1990 की स्वतंत्रता के बाद संवैधानिक प्रशासनात्मक व्यवस्था के देश की सर्वोच्च निर्णय क्षमता बनने के बाद, इन व्यवस्थाओं में कबीला वंश समूह जैसी परम्परागत अनौपचारिक पहचानों का अंश, इनके लोकतांत्रिकरण की प्रक्रिया को प्रभावित करने में सक्षम दिखता है। इस अध्याय में कबीला/वंश समूहों के ऐतिहासिक परिपेक्ष्य को भी विचारित किया गया है तथा उनके उदय व कार्यप्रणाली को अच्छे से विस्तृत रूप में विवेचित किया गया है।

तीसरा अध्याय में 'कबीला व 'वंश समूह राजनीति' के (Clan Politics) कजाखस्तान में सन् 1990 के बाद सन् 2001 तक विभिन्न आयामों को ध्यान में रखा गया है तथा राष्ट्रपति नजरबायेव की अनौपचारिक पितृसत्तावादी, परिवारवादी अधिकारवादी शासन प्रवृति का अध्ययन किया गया है। इसमें पाया गया है कि वंश समूह के कबीला प्रतिनिधि तीनों झूज/हार्डे आधुनिक कजाखस्तान की राजनीति, में अलग–अलग राजनीतिक भूमिका

निभाते हैं। यहां इन तीनों कबीला समूहों के बीच संघर्ष को भी उचारित किया गया है तथा आधुनिक कजाखस्तान में राष्ट्रपति नजरबायेव के द्वारा संचालित परिवारवादी राजनीति तथा अपने रिश्तेदारों व सिपहसलाकारों को महत्वपूर्ण पदों से सुशोभित करने के प्रकरणों का भी वर्णन किया गया है। कुछ समय पर नजरबायेव द्वारा कबीला संतुलन की नीति अपनाकर कबीलों/वंश समूहों के बीच तादम्य स्थापित करने की कोशिश भी की गई थी। अतः इस अध्याय के निष्कर्ष में यह साफ है कि उस समय 1990 से 2001 तक झूज कबीला/वंश समूह के द्वारा कजाख राजनीति का आधार तैयार किया जाता था, जिसमें मध्य झूज (Middle Zhuz) सबसे ज्यादा संख्या में होकर भी, राजनैतिक संरचनाओं में बहुत निम्न तौर पर सक्रिय थे। वे प्रशासनिक महकमों में ज्यादा उपस्थित थे। जबकि महान झूज (Greater Zhuz) कबीला सदस्य सरकार के सर्वोत्तम प्रतिष्ठानों में कम जनसंख्या होने के बाद भी विराजमान थे। हालांकि निम्न झूज सभी क्षेत्रों में बने रहे लेकिन कम प्रतिनिधित्व के तौर पर ये ज्यादा सम्पन्न नहीं हो पाए। लेकिन इनकी हालात मध्य झूज कबीले समूहों से बेहतर बताए गए हैं। ये सब कजाखस्तान के संवैधानिक संस्थानों में अपनी एक अहम पहुंच रखते थे। लेकिन उस समय स्वतंत्रता के बाद सोवियत संक्रमण से उभकर कजाखस्तान एक नए लोकतंत्र के दौर/युग में प्रविष्ट कर रहा था तो इन अनौपचारिक संस्थाओं का दखल औपचारिक स्तर की सरकारी ईकाईयों में इतने स्तर तक मिलना तो अनुमानित ही था। अन्य मध्य एशियाई देशों की तुलना में कजाखस्तान में सरकारी व संवैधानिक संस्थाओं का विकास व लोकतांत्रिकरण ज्यादा अच्छे तरीके से हो पाया था क्योंकि कजाखस्तान में उस समय में अन्य मध्य एशियाई देशों की तरह ज्यादा बड़ा राजनीतिक उथल–पुथल देखने को नहीं मिलता है लेकिन इससे नजरबायेव का राष्ट्रपति का पद विभिन्न संवैधानिक शक्तियों के सुदृढ़ीकरण के प्रसारण के साथ–साथ अधिकारवादी शासक का बनता गया। इस वजह से नजरबायेव के इस कबीला/वंश समूह राजनीति को 'नवपितृसत्तावादी शासन'

(Neopetromonialist regime) का नाम दिया गया है। इसी के साथ कबीला/वंश समूहों के बीच प्रतिनिधित्व व आधिपत्य को लेकर छीड़ी प्रतिद्वंद्वता के कारणों व परिणामों का भी अच्छे तरीके से अध्ययन किया गया। इस अध्याय में पाया गया है कि ये तीनों झूज कबीला समूह 1990 के दशक के मध्य व उतरार्ध में विभिन्न दबाव समूहों व व्यक्तिगत संस्थानों में विभक्त होना शुरू हो चुक थे। वे अब केवल कबीला पहचान (Clan Identity) के नाम पर ही नहीं बल्कि क्षेत्रिय पहचान (Regional Identity) को भी सम्मिलित करने लगे थे जिससे अनेक तरह के आपसी द्वंद्व उभरने के आसार बनते रहते थे।

चौथे अध्याय में कजाखस्तानी सरकार या राजनीतिक व्यवस्था के कालक्रम को, इन कबीला/वंश समूहों के प्रतिनिधित्व व संकेद्रण का आधार बिंदु मानकर, अनेक राजनीतिक संस्थाओं जैसे कजाखी संविधान, संसद, न्यायपालिका, मीडिया राजनीतिक पाटियां व उनके व्यवहार, देश के कबीला राजनीति व्यवहार का संक्षिप्त अध्ययन किया गया है। इसमें निष्कर्षित किया गया है कि 1990 के उस दौर से विभिन्न औपचारिक संस्थानों के विकास का ऐसा क्रम शुरू हुआ जो एक दशक तक आधुनिक कजाखस्तान के निर्माण में तथा उसकी संस्थाओं के निर्माण में निर्बाध रूप से संचरित रहा। इसका परिणाम वहां की शासन व्यवस्था के सभी क्षेत्रों में उचित नियंत्रण के रूप में सामने आता है। आज का कजाखस्तान उस प्रथम दशक में बनी राजनीतिक संस्थाओं का परिणाम है, जिसमें लोकातांत्रिकरण प्रक्रिया हेतू, कबीला/वंश समूहों ने जनता के प्रभावित संघटन से वहां की राजनीति में महत्वपूर्ण संवाद पैदा किया।

इस तरह यह शोध कार्य अध्ययन कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकालता है जो कि इन औपचारिक राजनीतिक संस्थाओं के लोकतांत्रिक और अनौपचारिक कबीला वंश/कबीला राजनीति द्वारा उन पर प्रसारित किए प्रभावों को उत्तर–सोवियत काल के नवस्वतंत्रता प्राप्त कजाखस्तान गणतंत्र के संदर्भ में प्रस्तुत करता है। ये निष्कर्ष निम्न हैंः–

1. कबीला/वंश समूह राजनीति के अनौपचारिक राजनीतिक व्यवहार एवं संबंध तथा औपचारिक राजनीतिक संस्थाओं के लोकतांत्रिकरण की प्रक्रिया के विकास के अवधारणात्मक चरण का समबद्ध अध्ययन अलग–अलग नहीं हैं और ना ही किए जा सकते हैं। ये दोनों कारक जटिल तरीके से जुड़े हुए ऐतिहासिक रिश्तों का परिणाम है; जो कि 1990 के प्रथम दशक के दौरान कजाखस्तान गणतंत्र की राजनीति में, राजनीतिक विकास व वातावरण को बनाने व अधिकारवादी सत्ता शासन को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और आज भी कजाखस्तान देश में राजनीतिक रूप से सक्रिय कारक बने हुए हैं।
2. 1990 के दशक में कजाखस्तान गणतंत्र में अनौपचारिक राजनीतिक संबंधों और व्यवहार और उनकी उपस्थिति, इस देश की संरचनात्मक और व्यवहारिक विरासत के राजनीतिक, सामाजिक संलयन द्वारा संचालित होती थी। और उस समय के नए राजनीतिक संस्थाओं व शक्ति केन्द्रों का उद्भव इन अवलंबी राजनीतिक कुलीनों के सत्ता आधार को खतरा पैदा करने वाला प्रतीत होता है। इस संदर्भ में ये राजनीतिक कुलीन (Neopetromonialist) अपना प्रभाव बनाए रखने तथा संक्रमणकालीन बदलती राजनीति को प्रसांगिक और गतिशील प्रकृति का बनाए रखने के लिए इसके प्रबंधन के नियति की आवश्यकता को ध्यान में रखकर राजनीति के अनौपचारिक व्यवहार की तरफ आकर्षित हो गए।
3. संक्रमणकालीन कजाखस्तानी राजनीतिक व्यवस्थाओं में जहां राजनीतिक कुलीन वर्ग अपनी सत्ता शासन स्थिति को मजबूत करने की मांग कर रहे थे। औपचारिक संस्थाओं की बाध्यताएं उद्देश्यपूर्ण एवं योजनाबद्ध तरीक से विस्तृत की गई। ये एक अतिक्रमणीय आचार–व्यवहार के तौर पर की गई ताकि नेतृत्व पर निर्भर वफादार ग्राहक/व्यक्ति(Client) नेतृत्व की पसंद व वरीयताओं के अनुकूल चुर्नीदा रूप से औपचारिक नियमों व कानूनों को लागू या व्याख्या कर

सकने में सक्षम हो सकता था। कबीला/वंश समूह राजनीति के मामले में ये विधायी कर्ता, समाज के ऐसे कर्ताओं को राजनीतिक संस्थाओं, संसद, राजनीतिक पार्टियों, राजनैतिक व्यवहारों तथा अन्य कार्यक्रमों में शामिल व संग्रहित करते थे, जो कमजोर राजनीतिक व्यवस्था का हिस्सा बनकर उनकी इच्छाओं की पूर्ति, एक अक्षम पक्ष या विपक्ष बनकर पूर्ण कर सकें।

4. उस दौर में कजाखस्तान में औपचारिक राजनीतिक व्यवस्था व संरचनाएं, कबीला/वंश समूहों के ऐसे विभाजित अभिजात्य वर्ग लोगों को आश्रय प्रदान करती थी जो कि गुटीय संघर्ष के नाम पर देश की राजनीति को संक्रमीत करने का प्रयास करते थे। वे संसाधनों के ज्यादा उपयोग, राजनीतिक दलों जैसे संस्थानों की रक्षा व उनके राजनीतिक विस्तार के अधिकार अधिनियम और अपने आर्थिक व राजनैतिक हितों की रक्षा के लिए लड़ते थे। सत्ता–शासन द्वारा इनके बीच सुलह या किसी भी तरीके का समझौता, सत्ता को लगातार सुदृढ़ व संस्थानों को व्यवस्थित करने के लिए किया जाता था।
5. औपचारिक राजनीतिक व्यवस्थाएं जैसे राजनीतिक पार्टियां देश की समग्रता व समृद्धि के नाम पर या देश के विकास की भावना के आधार पर 'पदग्राही नेतृत्व केंद्रियता' के विचार को आत्मसात करके नेतृत्व सत्ता में मौजूद निष्पाद व वाकपटु नेताओं की सता को एकरूपता से स्वीकारने व स्थापित करने में मदद करती थी। नजरबायेव का लगातार सत्ता संकेद्रण में बना रहना इसका प्रमुख उदाहरण है।

अंततः इस शोध कार्य की दो परिकल्पनाओं में से पहली के अनुसार वंश/कबीला समुह राजनीति द्वारा कजाखस्तान गणतंत्र की राजनीतिक संरचनाओं का लोकतांत्रिकण प्रक्रिया में अवरोध होना एक अस्पष्ट परिकल्पनीय तथ्य साबित होता है। क्योंकि सामूहिक रूप से इन वंश/कबीले समुह राजनीति (Clan Politics) ने कजाखस्तान देश की प्रथम दशक की

लोकतांत्रीकरण की प्रक्रिया में अहम भूमिका अदा की है। यह एक बड़े कारक के रूप में राजनीतिक संरचनाओं के संवैधानिक आधुनिकीकरण में इतनी बड़ी बाधक या अवरोध नहीं रही। बल्कि इसके कुछ व्यक्तिगत सदस्यों द्वारा, (Individual Members) नव पितृसत्तात्मकवादी शासन व्यवस्था द्वारा अपने–अपने स्तर पर ग्राहक–खरीददार व्यक्तिवादीता को बढ़ावा दिया गया (petson elient system), जिसमें एकात्मकवादी नेतृत्व द्वारा, इन संस्थाओं को नियंत्रित किया जाता है। यह व्यक्तिगत संरचना प्रक्रिया, उस राजनीतिक व्यक्तिगत की सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक स्थिति के आधार पर निर्धारित होती है। इसलिए एक स्तर पर, जिसमें वंश/कबीला राजनीति सामुहिकता का बोध करवाती है वहां ये अनौपचारिक सामाजिक संरचनाएं, आज के आधुनिक कजाखस्तान के औपचारिक संस्थाओं के लोकतांत्रिकरण में बहुत बड़ी अवरोधक ईकाई नहीं हैं। क्योंकि अगर उत्तर–सोवियत अन्य मध्य एशियाई देशों को अध्ययन करते हैं तो वहां ये अनौपचारिक संस्थाएं ज्यादा प्रबल नजर आती हैं और अगर अन्य प्रगतिशील तृतीय व द्वितीय विश्व के देशों की राजनीतिक संरचनाओं का अध्ययन करें तो वहां भी ऐसे कई समूह, दबाव राजनीति के तौर पर दबाव समूहों/हित समूहों का व्यक्तित्व प्रदर्शित करते हैं। तथा इनमें कई स्वतंत्र समूह के नेतृत्वकर्त्ता, व्यक्तिगत प्रतिनिधि उनके प्रतिनिधित्व के नाम पर शासन व्यवस्था को नियंत्रित करते हैं। लेकिन ऐसे सामूहिक अनौपचारिक संस्थाएं सीधे इनकी राजनीक व्यवस्था में संवैधानिक तौर पर हस्तक्षेप नहीं कर सकती है। यही सब आधुनिक कजाखस्तान के राजनीतिक संस्थओं के संदर्भ में कबीला/वंश समूह राजनीति के चरित्र को प्रदर्शित करता है। इसलिए मेरी पहली परिकल्पना अपूर्ण असहमती के स्तर पर पूर्ण होती है। लेकिन आगे वृहत स्तर पर शोध कार्य करने पर इसमें नए परिणाम आने की संभावना बनी रहेगी।

दूसरी परिकल्पना में इन कबीला/वंश समूहों द्वारा वहां के लोकतांत्रिक संघटन में या (Mobalization) जुटाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कजाखस्तान गणतंत्र की आजादी के बाद प्रथम दशक में ये कबीला समूह एक नई

कजाख पहचान को फिर से पाने के लिए विभिन्न सामाजिक–राजनीतिक स्तरों पर एकसरित रूप में राजनीतिक तौर पर एकताबद्ध हुए तथा वहां के लोगों को नई व्यवस्था के पुर्ननिर्माण हेतु जोड़ना शुरू किया। कई तरह के सांस्कृतिक सामाजिक राजनीतिक समूहों ने विभिन्न संगठनों द्वारा कबीला/वंश समूह पहचान को केन्द्र में रखकर पूरे देश में लोगों को संगीकृत व आंदोलनरत किया गया। अतः दूसरी परिकल्पना एक सत्य अवधारणा बिंदु प्रस्तुत करती है तथा कजाखस्तान की आंतरिक राजनीति को स्पष्टतः समझने में सहायता करती है।

संदर्भ–ग्रंथ सूची (References) :-

(* indicates a primary source)

Akiner, Shirin. (1995), "The Formation of Kazakh Identity: From Tribe to Nation-State", London: *The Royal Institute of International Affairs*, 17(6): 7-24. 43(3): 351-371.

Akiner, Shirin. (1997), 'Melting Pot, Salad Bowl - Cauldron? Manipulation and Mobilisation of Ethnic and Religious Identities in Central Asia', *Ethnic and Racial Studies*, Vol. 20(2):362-398.

Akbarzadeh, Shahram. (1997), "The Political Shape of Central Asia", *Central Asian Survey*, Vol. 16(4): 517-542.

Aliev, R. (2009), '*Krestnyi test': Dokumental'naya povest'* (Berlin, Wortmeldung), available at: http:// narod.ru/disk/10121714000/krectny-test.zip.html, accessed 24 June 2016.

Amrekulov, N. (2000), "Zhuzes and Kazakhstan's Social and Political Development", *Central Asia and the Caucasus* 3: 131–146.

Anderson, John. (1997), "Constitutional Development in Central Asia", *Central Asian Survey*, Vol. 16(3): 301-320.

Anderson, John. (1997) "Rebuilding the Political Order", *International Politics of Central Asia*, Manchester: Manchester University Press: 100.

Ashimbaev, D. (2007), 'Politicheskaya systema: Reformy, vybory, kadry', *Kazakhstan*, 3.

Barthold W. (1968), *Turkestan down to the Mongol Invasion*, London.

Barthold W, Hazai G. (1986), "Kirgiz," in: E I2, vol. V, Leiden: 136.

Bartol'd V.V. (1898), *Sochineniia*, 9 vols. (Moscow, 1963-1977) , *Turkestan v epokhu mongol'skogo nashestviia,* vol. 1, *Teksty* ,St. Petersburg.

Bingoi, Yilmaz. (2004), "Nationalism and Democracy in Post-Communist Central Asia", *Asian Ethnicity*, Vol. 5(1): 43-60.

Bremmer, Ian and Welt, Cory. (1996), "The Trouble with Democracy in Kazakhstan", *Central Asian Survey*, Vol. 15(2): 179-199.

Bowyer, Anthony Clive. (2008), "*Parliament and Political Parties in Kazakhstan"*, Washington D.C: Central Asia Caucasus Institute & Silk Road Studies Program: 12.

*Central Asia Executive Summary Series, *Kazakhstan Country Profile: Program for Culture and Conflict Studies (CCS),* Department of NationalSecurityAffairs,NavalPostgraduateSchool,No.4,July,2016:20,22atwww.nps.edu/programs/ccs/.../Central_Asia/Kazakhstan_July16.pdf.

Chenoy, Anuradha M. (1997), "Political and Economic Process in the Central Republics", *International Studies*, Vol. 34(4):310.

Collins, Kathleen. (1999), *Clans, Pacts, and Politics: Understanding Regime Transition in Central Asia,* PhD diss. Stanford, California: Stanford University.

Collins, Kathleen. (2003), *The Political Role of Clans in Central Asia, Comparative Politics*, New York: Ph.D. Program in Political Science of the City University of New York.

Collins, Kathleen. (2004), *The Logic of Clan Politics: Evidence from the Central Asian Trajectories*, London: Cambridge University Press.

Collins, Kathleen. (2004), "The Logic of Clan Politics: Evidence from the Central Asian Trajectories". *World Politics* 56(2): 224–261.

Collins, Kathleen. (2006), *Clan Politics and Regime Transition in Central Asia*. Cambridge and New York: Cambridge University Press.

Collins, Kathleen. (January 2003), "The Political Role of Clans in Central Asia", *Comparative Politics*, Vol.35, (2): 171-189.

Cummings, Sally N. (1998), '*The Kazakhs: Diasporas, Demographics and the Kazakhstani State'*, in Charles King and Neil Melvin (edt.), *Nations Abroad: Diaspora Politics and International Relations in the Former Soviet Union*; Westview Press: 133-52.

Cummings, Sally N. (2000), *Kazakhstan: Centre-Periphery Relations*; Washington, DC; Brookings Institution and London: Royal Institute of International Affairs.

Cummings, Sally N. (2002), '*Kazakhstan: An Uneasy Relationship – Power and Authority in the Nazarbaev Regime*', in Cummings (ed.), *Power and Change in Central Asia*, London and New York: Routledge: 59-73.

Cummings, Sally N. (2005), *Kazakhstan: Power and the Elite*, London: I.B. Tauris.

D'iachenko, S., Karmazina L. and Seidumanov, S. (2000), Politicheskie partii Kazakhstana god 2000 spravochnik (Almaty, Information-Analitical Centre of the Parliament of Kazakhstan 2000).

*Dosmukhamedov, Yerzhan, Atameken. (2006): *Building Democracy in Kazakhstan;* Almaty.

Dahl, Robert. (1973), *Polyarchy: Participation and Opposition,* London: Yale University Press.

Dahl, Robert. (1991), *Democracy and its Critics*, New Delhi: Orient Longman.

Dave, Bhavna. (2007), *Kazakhstan. Ethnicity, language and power*, London: Routledge.

Dave, Bhavna.(2006),*"Nations in Transit: Kazakhstan*," FreedomHouse,2006.http://www.freedomhouse.org/template.cfm?page=47&nit=404&year=2006,(October 7, 2015).

Dzusupbekov, A. K. (2009), *Etnicheskaya identichnost' nomadov* [Ethnic Identity of the No-mads]. Bishkek: Ilim.

Dzhunusova and Denis Balgamis. (!995), "The New Political Institutions of the Independent Kazakhstan, in K.Warikoo (ed.), *Central Asia: Emerging New Order* New Delhi: Haranand Publications: 49.

*Hoffman, David .(1997) ,Strana Zasypaet. Neft Eto Narkotic (Country is Sleeping. Oil is a Narcotics), interview to *Gazeta.ru* at22.08.2007availableat,http://www.gazeta.ru/politics/2007/08/22_a_2072501.shtml Accessed at August 2, 2015.

Efegil, E. (2006),"Authoritarian/Constitutional-Patronage Regimes in Central Asia", *Central Asia and the Caucasus* 5: 107–115.

Furman, D. (2005), *The regime in Kazakhstan*: *Central Asia at the end of the transition.* Armonk, NY, ME Sharp: 195-266.

*Freedom House: *Nations in Transit 2006 Kazakhstan*, p.6, at www. Freedomhouse.com.

* "Freedom of the Media and Political Freedoms in the Prelude to the 1999 Elections" *A Human Rights Watch Report*, Vol. 11, No. 11, October 1999.

Galyamova, D. (1998), “Divisions of Powers in Kazakhstan: Constitutional Experience of Independent Development”, *Contemporary Central Asia*, Vol. 11(3): 27.

Galiev, A. B. *et al.* (1994), *Mezhnatsional'nye otnosheniya v Kazakhstane: Etnicheskie aspekty kadrovoy politiki* [International Relations in Kazakhstan: Ethnic Aspects of Rulers Polity]. Alma-Ata.

Gumppenberg, Marie-Carin Von. (2007), *Kazakhstan: Challenges to the Booming Petro- Economy*,Bern: Swiss peace.

Gullette, D. (2006), *Kinship, State, and ‘Tribalism’: The Genealogical Construc-tion of the Kyrgyz Republic.* Unpublished PhD Thesis. Cambridge: University of Cambridge.

Gullette, David. (2010), “The Problems of the “Clan” Politics Model of Central Asian Statehood: A Call for Alternative Pathways for Research”, in Emilian Kavalski (eds.), *Stable Outside, Fragile Inside? The post-Soviet Statehood in Central Asia*, Burlington; Ashgate.

G. Helmke & S. Levitsky. (2006), *Informal institutions and democracy: lessons from Latin America*, Baltimore: Johns Hopkins University Pr.

Huntington, Samuel. (1991), *The Third Wave: Democratization in the Late Twentieth Century.* Norman: University of Oklahoma Press.

Huntington, Samuel P. (1991), `How Countries Democratise', Political Science Quarterly Vol. 106(4): 579-616.

Hoffman, David. (2003), *The Oligarchs: Wealth and Power in the New Russia*, New York, Public Affairs.

*History of the parlamentarism development in Kazakhstan (2010), *The Parliament of the Republic of Kazakhstan.*

Available:http://www.parlam.kz/Information.aspx?doc=5&lan=en-US Accessed at March 17, 2016.

Isaacs, Rico. (2009), *Between Informal and Formal Politics: Neo-patrimonialism and Party Development in Post-Soviet Kazakhstan*. PhD. Thesis, London: Oxford Brookes University.

Isaacs, Rico. (2010), "Informal politics and the uncertain context of transition: revisiting early stage non-democratic development in Kazakhstan". *Democratization*, 17(1):1-25.

Isaacs, Rico. (2011), *Party system formation in Kazakhstan: between formal and informal politics*, London and New York, Routledge.

Isaacs, Rico. (2013), "Nur Otan, Informal Networks and the Countering of Elite Instability in Kazakhstan: Bringing the 'Formal' Back In." *Europe-Asia Studies*, 65 (6): 1055–79.

Isaacs, Rico. (2014), "Neopatrimonialism and beyond: Reassessing the formal and informal in the study of Central Asian politics", *Contemporary Politics* 20 (2), 229–245.

Jones Luong, P. (1997), *Ethno-politics and Institutional Design: Explaining the Establishment of Electoral Systems in Post-Soviet Central Asia,* PhD diss., Harvard University.

Jones Luong, P. (2002), *Institutional Change and Political Continuity in Post-Soviet Central Asia: Power, Perceptions, and Pacts,* London: Cambridge University Press.

Jones Luong, P. (2004), 'Economic ''Decentralization'' in Kazakhstan', in Jones Luong, P. (ed.) (2004), *The Transformation of Central Asia: States and Societies from Soviet Rule to Independence*, Ithaca, Cornell University Press.

Junisbai, B. & Junisbai, A. (2005), 'The Democratic Choice of Kazakhstan: A Case Study in Economic Liberalization, Intra-Elite Cleavage, and Political Opposition', *Demokratizatsiya: The Journal of Post-Soviet Democratization*, 13(3), Summer.

Junisbai, Barbara. (2010), 'A Tale of Two Kazakhstans: Sources of Political Cleavage and Conflict in the Post-Soviet Period', *Europe-Asia Studies*, Vol. 62, No. 2, 235–269.

Kadyrzhanov, Rustem. (2014), 'Party system formation in Kazakhstan: between formal and informal politics', *Central Asian Survey*, 33(2), 291-293S.

*Kazakhstan: Republic Constitution. (19 April 1993), published in the *FBIS*: *Central Eurasia*, Nos. 48-54: pp.68-78.

*"Kazakh Elections: Progress and Problems," OSCE at http://www.osce. org: 80/ item/ 25959. Html.

*Kazakhstan State Statistical Agency. (2000), Natsionalnyi Sostav Naseleniia Respubliki Kazakhstan: Itogi Perepisi naseleniia 1999 goda v Respublike Kazakhstan. Vol. 2, Itogi perepisi naseleniia 1999 goda v Respublike Kazakhstan. Almaty: Agenstvo Respubliki Kazakhstan po Statistike.

*Kimmage, Daniel. (2008), *Kazakhstan: A Shaken System*. EurasiaNet,Availablefrom:http://www.eurasianet.org/departments/insight /articles/ pp030506.shtml, accessed April 6, 2016.

*Kimmage, Daniel. (2007), 'Central *Asia: Has IMU Reached theEnd,of,the,Line?*',RadioFreeEurope/RadioLiberty,March30,http://ww w.rferl.org/featuresarticle/2007/03/7a04b472-5c21-498d-8d62b dab6f7f31b32.html (accessed April 6, 2016).

*Kimmage, Daniel. (2006), '*Kazakhstan: Battle of the Clans Continues*',RadioFreeEurope/RadioLiberty,August9.http://www.rferl.org/featuresarticleprint/2006/08/cc94ec45-a9bc-4b89-b287 bc894cdf0ca0.html (accessed December 4, 2015).

Kolsto, Pal. (1996), "Nation-Building in the Former USSR." *Journal of Democracy* 7 (1): 118-32.

Kubicek, Paul. (1998), "Authoritarianism in Central Asia: Curse and Cure*?" Third World Quarterly*, Vol. 19(1): pp.29-43.

*Kharlamov, V. (2005), 'Papa Nazarbaev', *Nezivisimaya gazeta*, 26 April.

Kusainov, Aldar. (2003), *"*Wheels Set in Motion for Dynastic TransitioninKazakhstan*",*Eurasianet.org.http://www.eurasianet.org/departments/insight/articles/eav091603.shtml(accessed,April 4, 2016).

Kurakbaev, S. (2001), *Kazakh clans fall out*, Institute for War andPeaceReportingCentralAsia,No49,27April,2016,availableat,http://www.listserv.iatp.kg/pipermail/announcements-l/2001 May/000202.html.

Lamazaa, Ch. K. (2010), *Klanovost' v politike regionov Rossii. Tuvinskie praviteli* [Clan System in Regional Policy of Russia. Rulers of Tuva]. Saint-Petersburg: Aleteya.

Lustick, I. S. (2000), Agent-based modelling of collective identity: testing constructivist theory, *Journal of Artificial Societies and Social Simulation*,*3*(1):1.

Lustick, I. S., & Miodownik, D. (2000), Deliberative democracy and public discourse: The agent-based argument repertoire model. *Complexity*, *5*(4):13-30.

Manz, Beatrice F. (1994), *Central Asia in Historical Perspective* (ed.), Oxford: Westview Press: 23-28.

Masanov, N. E. (1996), Kazakhstanskaya politicheskaya i intllektualnaya elita: Klano-vaya prinadlezhnost' i vnutrietnichskoe sopernichestvo [The Kazakhstan Political and Intellectual Elite: A Clan Belonging and Interethnic Ri-valry]. *Vestnik Evrazii* 1: 46–61.

Masanov, N. E. (1970), La dispersion comme la loi générale de l'activité nomade. *Nomades et sédentaires en Asie centrale. Paris: Éditions du CNRS*, 193-210.

*Masanov, Nurbolat. (2002) ‚Kazakhstan: Istoria Stanovlenia Diktatyry‖ *Report* . Available at http://freeas.org/?nid=395 Accessed at March 19, 2016.

Matveeva, Anna. (1999), "Democratization, Legitimacy and political Change in Central Asia", *International Affairs*, Vol. 75(1):23–44.

Migdal, J.S. (1988), *Strong Societies and Weak States*, Princeton: NJ, Princeton University Press.

N. Alaolmolki. (2001), *Life after the Soviet Union*, Albany: State University of New York Press.

Naumova, O. B. (1991), *Sovremennye etnokul'turnye protsessy kazakhov v mnogonatsion-al'nykh rayonakh Kazakhstana* [Contemporary Ethnic and Cultural Proc-esses in Multicultural Regions of Kazakhstan]. PhD thesis, Moscow: Insti-tute of Ethnology and Anthropology of the Russian Academy of Sciences.

Nursultan Nazarbaey. (1997), *Kazakhstan 2030: poslanie Prezidenta strany narodu Kazakhstana*, Almaty: Bilim.

Olcott, Martha Brill. (2010), *Kazakhstan. Unfulfilled promise,* Washington, DC: Carnegie Endowment for International Peace.

Olcott, Martha Brill. (1997), "Democratization and the Growth of Political Participation in Kazakhstan", in Karen Dewisha and Bruce Parott (eds.*), Conflict, Cleavageand Change in Central Asia and the Causasus*; Cambridge: Cambridge University Press: 201.

Olcott, Martha Brill. (1997), "Kazakhstan: Nursultan Nazarbaev as Strong President." In *Post-Communist Presidents*, (ed.) Ray Taras, Cambridge, Cambridge University Press: 107-29.

Olcott, Martha Brill. (2005), *Central Asia's Second Chance.* Washington, DC: Carnegie Endowment for International Peace,

*Olcott,MarthaBrill.(2002),"Kazakhstan's'Democracy'isSpelled'Dynasty'."*Newsday*.http://www.carnegieendowment.org/publications/index.cfm?fa=view&id=1025& prog=zru (accessed October 24, 2015).

Ovcharenko, Vsevolod.(2004),"The State-Civil Society Relationship in Kazakhstan: Mechanisms of Cooperation and Support," *The International Journal of not-for-Profit law,* Vol. 6(3): 9.

*OSCE/ODIHR, Final Report on the Parliamentary Elections in Kazakhstan, 12 and 26 November, 1995, Warsaw, 20 January 1995.

* OSCE/ODIHR, Final Report on the Presidential Election in Kazakhstan, 10 January 1999, 5 February, 1999.

* OSCE/ODIHR, Final Report on the Parliamentary Elections in Kazakhstan, 10 and 24 October 1999, Warsaw, 20 January 2000.

Phoolbadan. (2001), *Dynamics of Political Development in Central Asia*, New Delhi: Lancer Books.

*Polity IV Project. (2003), "Polity IV Country Report 2003: Kazakhstan." Center for International Development and Conflict Management,http://www.cidcm.umd.edu/polity/country_reports/Kzk1.htm (accessed February 12, 2016).

*Public Policy Research Center. (February 2005), "Kazakhstan Background Study for the UNDP Report: Regional Cooperation for Human Development and Security in Central Asia." *Policy Studies,* no. 1: 1-150.

Przeworski, Adam. (1986), "Some Problems in the Study of the Transition to Democracy" In *Transitions from Authoritarian Rule: Prospects for Democracy*, (eds.) Guillermo O'Donnell, Philippe Schmitter, and Laurence Whitehead,Baltimore and London, The Johns Hopkins University Press: 47-63 .

Quillen, Brian G. (2006), *Democracy—A Tree without Roots in the Steppes of Central Asia*, master's thesis, Naval Postgraduate School.

Roy, Olivier. (2000), *The New Central Asia: The Creation of Nations*, New York: New York University Press.

Radnitz, S. (2007), 'Review of Clan Politics and Regime Transition in Central Asia', *The Review of Politics*, 69(3): summer.

Radnitz, S. (2005), "Networks, localism and mobilization in Aksy, Kyrgyzstan", *Central Asian Survey,* 24(4): 405-424.

Radnitz,S. (2011), "Informal politics and the state. *Comparative Politics", 43*(3):351-371.

*“Republic of Kazakhstan: Parliamentary Elections,” OSCE [online],http://www.osce.org/odihr/documents/reports/election_reports/kz/kazak2-2.pdf

Roth, Guenther. (1968), “Personal Rulership, Patrimonialism, and Empire-Building in the New States.” *World Politics* 20(2): 194-206.

S. Frederick Starr. (2006), “Clans, Authoritarian Rulers, and Parliaments in Central Asia” *Central Asia-Caucasus Institute &Silk Road Program*, Johns Hopkins University-SAIS, Massachusetts Ave. NW, Washington.

Satpaev, D. (2007), ‘*An Analysis of the Internal Structure of Kazakhstan’s Political Elite and an Assessment of Political Risk Levels*’, in Uyama, T. (eds.).

Schatz, E. (2000), *Tribes and ‘Clans in Modern Power: The State-Led Production of Subethnic Politics in Kazakhstan*, PhD diss., Madison: University of Wisconsin.

Schatz, E. (2004), *Modern Clan Politics: The Power of “Blood” in Kazakhstan and Beyond*, Seattle and London: University of Washington Press.

Schatz, E. (2005), “Reconceptualizing Clans: Kinship Networks and Statehood in Kazakhstan”, *Nationalities Papers* 33(2): 231–254.

Schatz, E.(2000), ‘The Politics of Multiple Identities: Lineage and Ethnicity in Kazakhstan’ *Europe-Asia Studies*, 23(3), 23-43.

Schwartz, Michael. (March2001), “Review of *No Other Way Out: States and Revolutionary Movements, 1945-1991*” *American Journal of Sociology* 107(5): 1347-49.

*Sean R. Roberts, Professor of the Practice of International Affairs Director, International Development Studies Program Elliot School, June 2008. (Interview).

Sengupta, Anita. (2003), *The Formation of the Uzbek Nation-State: A Study in Transition*, Lanham: Lexington Books.

Sabol, Steven. (2003), *Russian Colonization and the Genesis of Kazakh National Consciousnes*s, New York, London, Palgrave Macmillan: 1-9.

Smagambetova, B. D. (1998), "*Rodoplemennoy factor v sisteme 'rukovoditel' podchinenniy*') [The Clan and Tribe Factors in System 'Boss Subordinate']. *Sotsi-ologicheskie issledovniya* (3): 20–23.

Snyder, Richard. (July 1992), "Explaining Transitions from Neopatrimonial Dictatorships." *Comparative Politics* 24(4): 379-99.

*Statistics Agency of the Republic of Kazakhstan, Kazakhstan and CIS Countries 1 (2000): 41.

Suny, Ronald Grigor. (1999-2000), "Provisional Stabilities: The Politics of Identities in Post-Soviet Eurasia." *International Security* 24(3), winter: 139-78.

*United Nations Development Programme. (2005) *Central Asia Human Development Report— Bringing Down Barriers: Regional Cooperation for Human Development and Human Security*. Bratislava, Slovakia: UNDP Regional Bureau for Europe andthe Commonwealth of Independent States, 2005.

*Yermukanov, M. (2007), ‘Constitutional Amendments Bolster Nazarbayev’s Presidency’, *Central Asia–Caucasus Analyst*, 30 may.Available at: http://www.cacianalyst.org/?q¼node/4627, accessed 20 June 2016.

Way, Lucan A.(2002), ‘The Dilemmas of Reform in Weak States: The Case of Post-Soviet Fiscal Decentralization’. *Politics and Society*, 43(6):579–98.

*Yermukanov, Marat. “Nazarbayev Gets Parliamentary Backing to Perpetuate his Rule.” *Eurasia Daily Monitor* 4, no. 99. http://www.jamestown.org/edm/ (accessed May 21, 2016).

* Yermukanov, Marat. “Pro-Presidential Party Dominates Election Campaign in Kazakhstan,” *Eurasia Daily Monitor* 4, no. 137 (July 16, 2007). http://www.jamestown.org/edm/ (accessed May 21, 2016).